

उपन्यास

देस बिराना  
सूरज प्रकाश

अनुक्रम

- अध्याय 1
- अध्याय 2
- अध्याय 3
- अध्याय 4
- अध्याय 5
- अध्याय 6

[अनुक्रम](#)

अध्याय 1

[आगे](#)

24 सितम्बर, 1992। कैलेंडर एक बार फिर वही महीना और वही तारीख दर्शा रहा है। सितम्बर और 24 तारीख। हर साल यही होता है। यह तारीख मुझे चिढ़ाने, परेशान करने और वो सब याद दिलाने के लिए मेरे सामने पड़ जाती है जिसे मैं बिलकुल भी याद नहीं करना चाहता।

आज पूरे चौदह बरस हो जायेंगे मुझे घर छोड़े हुए या यूँ कहूँ कि इस बात को आज चौदह साल हो जायेंगे जब मुझे घर से निकाल दिया गया था। निकाला ही तो गया था। मैं कहां छोड़ना चाहता था घर। छूट गया था मुझसे घर। मेरे न चाहने के बावजूद। अगर दारजी आधे-अधूरे कपड़ों में मुझे धक्के मार कर घर से बाहर निकाल कर पीछे से दरवाजा बंद न कर देते तो मैं अपनी मर्जी से घर थोड़े ही छोड़ता। अगर दारजी चाहते तो गुस्सा ठंडा होने पर कान पकड़ कर मुझे घर वापिस भी तो ले जा सकते थे। मुझे तो घर से कोई नाराज़गी नहीं थी। आखिर गोलू और बिल्लू सारा समय मेरे आस-पास ही तो मंडराते रहे थे।

घर से नाराज़गी तो मेरी आज भी नहीं है। आज भी घर, मेरा प्यारा घर, मेरे बचपन का घर मेरी रगों में बहता है। आज भी मेरी सांस-सांस में उसी घर की खुशबू रची बसी रहती है। रोज़ रात को सपनों में आता है मेरा घर और मुझे रुला जाता है। कोई भी तो दिन ऐसा नहीं होता जब मैं घर को लेकर अपनी गीली आंखें न पोंछता होऊँ। बेशक इन चौदह बरसों में कभी घर नहीं जा पाया लेकिन कभी भी ऐसा नहीं हुआ कि मैंने खुद को घर से दूर पाया हो। घर मेरे आसपास हमेशा बना रहा है। अपने पूरेपन के साथ मेरे भीतर सितार के तारों की तरह बजता रहा है।

कैसा होगा अब वह घर !! जो कभी मेरा था। शायद अभी भी हो। जैसे मैं घर वापिस जाने के लिए हमेशा छटपटाता रहा लेकिन कभी जा नहीं पाया, हो सकता है घर भी मुझे बार-बार वापिस बुलाने के लिए इशारे करता रहा हो। मेरी राह देखता रहा हो और फिर निराश हो कर उसने मेरे लौटने की उम्मीदें ही छोड़ दी हों।

मेरा घर. हमारा घर .. हम सब का घर... जहां बेबे थी, गोलू था, बिल्लू था, एक छोटी-सी बहन थी - गुड्डी और थे दारजी...। कैसी होगी बेबे ... पहले से चौदह साल और बूढ़ी...। और दारजी...। शायद अब भी अपने ठीये पर बैठे-बैठे अपने औजार गोलू और बिल्लू पर फेंक कर मार रहे हों और सबको अपनी धारदार गालियों से छलनी कर रहे हों..। गुड्डी कैसी होगी.. जब घर छूटा था तो वो पांच बरस की रही होगी। अब तो उसे एमए वगैरह में होना चाहिये। दारजी का कोई भरोसा नहीं। पता नहीं उसे इतना पढ़ने भी दिया होगा या नहीं। दारजी ने पता नहीं कि गोलू और बिल्लू को भी नहीं पढ़ने दिया होगा या नहीं या अपने साथ ही अपने ठीये पर बिठा दिया होगा..। रब्ब करे घर में सब राजी खुशी हों..।

एक बार घर जा कर देखना चाहिये.. कैसे होंगे सब.. क्या मुझे स्वीकार कर लेंगे!! दारजी का तो पता नहीं लेकिन बेबे तो अब भी मुझे याद कर लेती होगी। जब दारजी ने मुझे धक्के मार कर दरवाजे के बाहर धकेल दिया था तो बेबे कितना-कितना रोती थी। बार-बार दारजी के आगे हाथ जोड़ती थी कि मेरे दीपू को जितना मार-पीट लो, कम से कम घर से तो मत निकालो।

बेशक वो मार, वो टीस और वो घर से निकाले जाने की पीड़ा अब भी तकलीफ दे रही है, आज के दिन कुछ ज्यादा ही, फिर भी सोचता हूं कि एक बार तो घर हो ही आना चाहिये। देखा जायेगा, दारजी जो भी कहेंगे। यही होगा ना, एक बार फिर घर से निकाल देंगे। यही सही। वैसे भी घर मेरे हिस्से में कहां लिखा है..। बेघर से फिर बेघर ही तो हो जाऊंगा। कुछ भी तो नहीं बिगड़ेगा मेरा।

तय कर लेता हूं, एक बार घर हो ही आना चाहिये। वे भी तो देखें, जिस दीपू को उन्होंने मार-पीट कर आधे-अधूरे कपड़ों में नंगे पैर और नंगे सिर घर से निकाल दिया था, आज कहां से कहां पहुंच गया है। अब न उसके सिर में दर्द होता है और न ही रोज़ाना सुबह उसे बात बिना बात पर दारजी की मार खानी पड़ती है।

पास बुक देखता हूं। काफी रुपये हैं। बैंक जा कर तीस हजार रुपये निकाल लेता हूं। पांच-सात हजार पास में नकद हैं। काफी होंगे।

सबके लिए ढेर सारी शॉपिंग करता हूं। बैग में ये सारी चीजें लेकर मैं घर की तरफ चल दिया हूं। हँसी आती है। मेरा घर.... घर... जो कभी मेरा नहीं रहा.. सिर्फ घर के अहसास के सहारे मैंने ये चौदह बरस काट दिये हैं। घर... जो हमेशा मेरी आँखों के आगे झिलमिलाता रहा लेकिन कभी भी मुकम्मल तौर पर मेरे सामने नहीं आया। याद करने की कोशिश करता हूं। इस बीच कितने घरों में रहा, हॉस्टलों में भी रहा, अकेले कमरा लेकर भी रहता रहा लेकिन कहीं भी अपने घर का अहसास नहीं मिला। हमेशा लगता रहा, यहां से लौट कर जाना है। घर लौटना है। घर तो वही होता है न, जहां लौट कर जाया जा सके। जहां जा कर मुसाफिरी खत्म होती हो। पता नहीं मेरी मुसाफिरी कब खत्म होगी। बंबई से देहरादून की सत्रह सौ किलोमीटर की यह दूरी पार करने में मुझे चौदह बरस लग गये हैं, पता नहीं इस बार भी घर मिल पाता है या नहीं।

देहरादून बस अड्डे पर उतरा हूं। यहां से मच्छी बाजार एक - डेढ़ किलोमीटर पड़ता है।

तय करता हूं, पैदल ही घर जाऊं..। हमेशा की तरह गांधी स्कूल का चक्कर लगाते हुए। सारे बाज़ार को और स्कूल को बदले हुए रूप में देखने का मौका भी मिलेगा। सब्जी मंडी से होते हुए भी घर जाया जा सकता है, रास्ता छोटा भी पड़ेगा लेकिन बचपन में हम मंडी में आवारा घूमते सांडों की वजह से यहां से जाना टालते थे। आज भी टाल जाता हूं।

गांधी स्कूल के आस पास का नक्शा भी पूरी तरह बदला हुआ है। गांधी रोड पर ये हमारी प्रिय जगह खुशीराम लाइब्रेरी, जहां हम राजा भैया, चंदा मामा और पराग वगैरह पढ़ने आते थे और इन पत्रिकाओं के लिए अपनी बारी

का इंतज़ार करते रहते थे। पढ़ने का संस्कार हमें इसी लाइब्रेरी ने दिया था।

आगे हिमालय आर्मस की दुकान अपनी जगह पर है लेकिन उसके ठीक सामने दूसरी मंज़िल पर हमारी पांचवीं कक्षा का कमरा पूरी तरह उजाड़ नज़र आ रहा है। पूरे स्कूल में सिर्फ यही कमरा सड़क से नज़र आता था। इस कमरे में पूरा एक साल गुज़ारा है मैंने। मेरी सीट एकदम खिड़की के पास थी और मैं सारा समय नीचे बाज़ार की तरफ ही देखता रहता था। हमारी इस कक्षा पर ही नहीं बल्कि पूरे स्कूल पर ही पुरानेपन की एक गाढ़ी-सी परत जमी हुई है। पता नहीं भीतर क्या हाल होगा। गेट हमेशा की तरह बंद है। स्कूल के बाहर की किताबों की सारी दुकानें या तो बुरी तरह उदास नज़र आ रही हैं, या फिर उनकी जगह कुछ और ही बिकता नज़र आ रहा है। स्कूल के आगे से गुज़रते हुए बचपन के सारे किस्से याद आते हैं।

पूरे बाज़ार में सभी दुकानों का नकशा बदला हुआ है। एक वक़्त था जब मैं यहां से अपने घर तक आँखें बंद करके भी जाता तो बता सकता था, बाज़ार में दोनों तरफ किस-किस चीज़ की दुकानें हैं और उन पर कौन-कौन बैठा करते हैं। लेकिन अब ऐसा नहीं हो सकता। एक भी परिचित चेहरा नज़र नहीं आ रहा है। आये भी कैसे। सभी तो मेरी तरह उम्र के चौदह पड़ाव आगे निकल चुके हैं। अगर मैं बदला हूँ तो और लोग भी तो बदले ही होंगे। वे भी मुझे कहां पहचान पा रहे होंगे। ये नयी सब्जी मंडी.. किशन चाचा की दुकान.. उस पर पुराना सा ताला लटक रहा है। ये मिशन स्कूल..। सारी दुकानें परिचित लेकिन लोग बदले हुए। सिंधी स्वीट शाप के तीन हिस्से हो चुके हैं। तीनों ही हिस्सों में अनजाने चेहरे गल्ले पर बैठे हैं।

अपनी गली में घुसते ही मेरे दिल की धड़कन तेज हो गयी है। पता नहीं इन चौदह बरसों में क्या कुछ बदल चुका होगा इस ढहते घर में .. या मकान में ...। पता नहीं सबसे पहले किससे सामना हो....गली के कोने में सतनाम चाचे की परचून की दुकान हुआ करती थी। वहां अब कोई जवान लड़का वीडियो गेम्स की दुकान सजाये बैठा है। पता नहीं कौन रहा होगा। तब पांच छः साल का रहा होगा। इन्दर के दरवाजे से कोई जवान-सी औरत निकल कर अर्जन पंसारी की दुकान की तरफ जा रही है। अर्जन चाचा खुद बैठा है। वैसा ही लग रहा है जैसे छोड़ कर गया था। उसने मेरी तरफ देखा है लेकिन पहचान नहीं पाया है। ठीक ही हुआ। बाद में आ कर मिल लूंगा। मेरी इच्छा है कि सबसे पहले बेबे ही मुझे देखे, पहचाने।

अपनी गली में आ पहुंचा हूँ। पहला घर मंगाराम चाचे का है। मेरे खास दोस्त नंदू का। घर बिलकुल बदला हुआ है और दरवाजे पर किसी मेहरचंद की पुरानी सी नेम प्लेट लगी हुई है। इसका मतलब नंदू वगैरह यहां से जा चुके हैं। मंगाराम चाचा की तो कोतवाली के पास नहरवाली गली के सिरे पर छोले भटूरे की छोटी-सी दुकान हुआ करती थी। उसके सामने वाला घर गामे का है। हमारी गली का पहलवान और हमारी सारी नयी शरारतों का अगुआ। उससे अगला घर प्रवेश और बंसी का। हमारी गली का हीरो - प्रवेश। उससे कभी नजदीकी दोस्ती नहीं बन पायी थी। उनका घर-बार तो वैसा ही लग रहा है। प्रवेश के घर के सामने खुशी भाई साहब का घर। वे हम सब बच्चों के आदर्श थे। अपनी मेहनत के बलबूते ही पूरी पढ़ाई की थी। सारे बच्चे दौड़- दौड़ कर उनके काम करते थे। सबसे रोमांचकारी काम होता था, सबकी नज़रों से बचा कर उनके लिए सिगरेट लाना। सिख होने के कारण मुझे इस काम से छूट मिली हुई थी।

अगला घर बोनी और बौबी का है। उनके पापा सरदार राजा सिंह अंकल। हमारे पूरे मौहल्ले में सिर्फ वहीं अंकल थे। बाकी सब चाचा थे। पूरी गली में स्कूटर भी सिर्फ उन्हीं के पास था।

ये सामने ही है मेरा घर.....। मेरा छूटा हुआ घर .....। हमारा घर.. भाई हरनाम सिहां का शहत्तों वाला घर....। गुस्से में कुछ भी कर बैठने वाला सरदार हरनामा .... तरखाण .... हमारे घर का शहत्त...का पेड़..... हमारे घर.. ..

हरनामे के घर की पहचान ...। तीन गली पहले से यह पहचान शुरू हो जाती...। हरनामा तरखाण के घर जाना है? सीधे चले जाओ .. आगे एक शहतूत.. का पेड़ आयेगा। वही घर है तरखाण का ....। 14 मच्छी बाज़ार, देहरादून। घर को मोह से, आसक्ति से देखता हूँ। घर के बाहर वाली दीवार जैसे अपनी उम्र पूरी कर चुकी है और लगता है, बस, आज कल में ही विदा हो जाने वाली है। टीन के पतरे वाला दरवाजा वैसे ही है। बेबे तब भी दारजी से कहा करती थी - तरखाण के घर टीन के पतरे के दरवाजे शोभा नहीं देते। कभी अपने घर के लिए भी कुछ बना दिया करो।

मैं हौले से सांकल बजाता हूँ। सांकल की आवाज थोड़ी देर तक खाली आंगन में गूँज कर मेरे पास वापिस लौट आयी है। दोबारा सांकल बजाता हूँ। मेरी धड़कन बहुत तेज हो चली है। पता नहीं कौन दरवाजा खोले.... । - कोण है.. । ये बेबे की ही आवाज हो सकती है। पहले की तुलना में ज्यादा करुणामयी और लम्बी तान सी लेते हुए....

- मैं केया कोण है इस वेल्ले....। मेरे बोल नहीं फूटते। क्या बोलूँ और कैसे बोलूँ। बेबे दरवाजे के पास आ गयी है। झिरी में से उसका बेहद कमज़ोर हो गया चेहरा नज़र आता है। आंखों पर चश्मा भी है। दरवाजा खुलता है। बेबे मेरे सामने है। एकदम कमज़ोर काया। मुझे चुंधियाती आंखों से देखती है। मेरे बैग की तरफ देखती है। असमंजस में पूछती हैं - त्वानु कोण चाइदा ऐ बाऊजी... ?

मैं एकदम बुक्का फाड़ कर रोते हुए उसके कदमों में ढह गया हूँ, - बेबे.. बेबे.. मैं नू माफ कर दे मेरिये बेबे.... मैं मैं .. ।

मेरा नाम सुनने से पहले ही वह दो कदम पीछे हट गयी है.. हक्की-बक्की सी मेरी तरफ देख रही है। मैं उसके पैरों में गिरा लहक - लहक कर हिचकियां भरते हुए रो रहा हूँ - मैं तेरा बावरा पुत्तर दीपू ... दीपू। मेरे आंसू ज़ार ज़ार बह रहे हैं। चौदह बरसों से मेरी पलकों पर अटकेध आंसुओं ने आज बाहर का रास्ता देख लिया है। बेबे घुटनों के बल बैठ गयी है.. अभी भी अविश्वास से मेरी तरफ देख रही है..। अचानक उसकी आंखों में पहचान उभरी है और उसके गले से ज़ोर की चीख निकली है, - ओये.. मेरे पागल पुत्तरा. तू अपणी अन्नी मां नू छड्ड के कित्थे चला गया सैं.. हाय हो मेरेया रब्बा। तै नू असी उडीक उडीक के अपणियां अक्खां रत्तियां कर लइयां। मेरेया सोणेया पुत्तरां। रब्ब तै नू मेरी वी उम्मर दे देवे। तू जरा वी रैम नीं कित्ता अपणी बुड्डी मां ते के ओ जीं दी है के मर गयी ए...।

वह आंसुओं से भरे मेरे चेहरे को अपने दोनों कमज़ोर हाथों में भरे मुझे स्नेह से चूम रही है। मेरे बालों में हाथ फेर रही है और मेरी बलायें ले रही है। उसका गला रुंध गया है। अभी हम मां-बेटे का मिलन चल ही रहा है कि मौहल्ले की दो-तीन औरतें बेबे का रोना - धोना सुन कर खुले दरवाजे में आ जुटी हैं। हमें इस हालत में देख कर वे सकपका गयी हैं।

बेबे से पूछ रही है - की होया भैंजी .. सब खैर तां है नां....!!

- तू खैर पुछ रई हैं विमलिये ..अज तां रब्ब साडे उत्ते किन्ना मेहरबान हो गया नीं। वेखो वे भलिये लोको, मेरा दीपू किन्ने चिर बाद अज घर मुड़ के आया ए। मेरा पुत्त इस घरों रेंदा कलप्दा गया सी ते अज किन्ने चिर बाद वल्ल के आया ए। हाय कोई छेत्ती जाके ते इदे दारजी नू ते खबर कर देवो। ओ कोई जल्दी जा के खण्ड दी डब्बी लै आवे। मैं सारेयां दा मूं मिट्टा करा देवां। ... आज वे मेरे पुत्त मैं तेरी नजर उतार दवां .। पता नीं किस भैंडे दी नज्जर लग गई सी।

हम दोनों का रो-रो कर बुरा हाल है। मेरे मुंह से एक भी शब्द नहीं फूट रहा है। इतने बरसों के बाद मां के आंचल में जी भर के रोने को जी चाह रहा है। मैं रोये जा रहा हूँ और मौहल्ले की सारी औरतें मुंह में दुपट्टे दबाये हैरानी से मां

बेटे का यह अद्भुत मिलन देख रही हैं। किसी ने मेरी तरफ पानी का गिलास बढ़ा दिया है। मैंने हिचकियों के बीच पानी खत्म किया है।

खबर पूरे मोहल्ले में बिजली की तेजी से फैल गयी है। वरांडे में पचासों लोग जमा हो गये हैं। बेबे ने मेरे लिए चारपाई बिछा दी है और मेरे पास बैठ गयी है। एक के बाद एक सवाल पूछ रही है। अचानक ही घर में व्यस्तता बढ़ गयी है। सब के सब मेरे खाने पीने के इंतजाम में जुट गये हैं। कभी कोई चाय थमा जाता है तो कोई मेरे हाथ में गुड़ का या मिठाई का टुकड़ा धर जाता है। मेरे आसपास अच्छी खासी भीड़ जुट आयी है और मेरी तरफ अजीब - सी निगाहों से देख रही है। कुछेक बुजुर्ग भी आ गये हैं। बेबे मुझे उनके बारे में बता रही है। मैं किसी - किसी को ही पहचान पा रहा हूँ। किसी का चेहरा पहचाना हुआ लग रहा है तो किसी का नाम याद - सा आ रहा है। मोहल्ले भर के चाचा, ताए, मामे, मामियां वरांडे में आ जुटे हैं और मुझसे तरह - तरह के सवाल पूछ रहे हैं। मुझे सूझ नहीं रहा कि किस बात का क्या जवाब दिया जाये। मैं बार-बार किसी न किसी बुजुर्ग के पैरों में मत्था टेक रहा हूँ। सब के सब मुझे अधबीच में ही गले से लगा लेते हैं। मुझे नहीं मालूम था मैं अभी भी अपने घर परिवार के लिए इतने मायने रखता हूँ।

तभी बेबे मुझे उबारती है - वे भले लोको, मेरा पुत्त किन्ना लम्बा सफर कर के आया ए। उन्नू थोड़ी चिर अराम करन देओ। सारियां गल्लां हुणी ता ना पुच्छो !! वेखो तां विचारे दा किन्ना जेयां मूं निकल आया ए..।

बेबे ने किसी तरह सबको विदा कर दिया है लेकिन लोग हैं कि मानते ही नहीं। कोई ना कोई कुण्डी खड़का ही देता है और मेरे आगे कुछ न कुछ खाने की चीज रख देता है। हर कोई मुझे अपने गले से लगाना चाहता है, अपने हाथों से कुछ न कुछ खिलाना ही चाहता है। फिर ऊपर से उनके सवालों की बरसात। मेरे लिए अड़ोस-पड़ोस की चाचियां ताइयां दसियों कप चाय दे गयी है और मैंने कुछ घूंट चाय पी भी है फिर भी बेबे ने मेरे लिए अलग से गरम - गरम चाय बनायी है। मलाई डाल के। बेबे को याद रहा, मुझे मलाई वाली चाय अच्छी लगती थी। बचपन में हम तीनों भाइयों में चाय में मलाई डलवाने के लिए होड़ लगती थी। दूध में इतनी मलाई उतरती नहीं थी कि दोनों टाइम तीनों की चाय में डाली जा सके। बेबे चाय में मलाई के लिए हमारी बारी बांधती थी।

बेबे पूछ रही है, मैं कहां से आ रहा हूँ और क्या करता हूँ। बहुत अजीब-सा लग रहा है ये सब बताना लेकिन मैं जानता हूँ कि जब तक यहां रहूंगा, मुझे बार बार इन्हीं सवालों से जूझना होगा। बेबे को थोड़ा-बहुत बताता हूँ कि इस बीच क्या क्या घटा। मैंने अपनी बात पूरी नहीं की है कि बेबे खुद बताने लगी है - गोलू तां बारवीं करके ते पक्की नौकरी दी तलाश कर रेया ए। कदी कदी छोटी मोटी नौकरी मिल वी जांदी ए ओनुं। अज कल चकराता रोड ते इक रेडिमेड कपड़ेयां दी हट्टी ते बेंदा ए ते पन्दरा सोलां सौ रपड़ेये लै आंदा ए। अते बिल्लू ने तां दसवीं वीं पूरी नीं किल्ली। केंदा सी - मेरे तें नीं होंदी ए किताबी पढ़ाई.. अजकल इस सपेर पार्ट दी दुकान ते बेंदा ए। उन्नू वी हजार बारा सौं रपड़ेये मिल जांदे हन। तेरे दारजी वी ढिल्ले रेंदे ने। बेशक तैनु गुस्से विच मार पिट के ते घरों कड दित्ता सी पर तैनु में की दस्सां, बाद विच बोत रोंदे सी। केंदे सी...। अचानक बेबे चुप हो गयी है। उसे सूझा नहीं कि आगे क्या कहे। उसने मेरी तरफ देखा है और बात बदल दी है। मैं समझ गया हूँ कि वह दारजी की तरफदारी करना चाह रही थी लेकिन मेरे आगे उससे झूठ नहीं बोला गया। लेकिन मैं जानबूझ कर भी चुप रहता हूँ। बेबे आगे बता रही है - तैनु असीं किन्ना ढूंढेया, तेरे पिच्छे कित्थे कित्थे नीं गये, पर तूं तां इन्नी जई गल ते साडे कोल नराज हो के कदी मुठ के वी नीं आया कि तेरी बुड्डी मां जींदी ए की मर गई ए। मैं तां रब्ब दे अगगे अठ अठ हंजू रोंदी सी कि इक वारी मैंनु मेरे पुत्त नाल मिला दे। मैं बेबे की बात ध्यान से सुन रहा हूँ। अचानक पूछ बैठता हूँ - सच दसीं बेबे, दारजी वाकई मेरे वास्ते रोये सी? वेख झूठ ना बोलीं। तैनु मेरी सौं।

बेबे अचानक घिर गयी है। मेरी आंखों में आंखें डाल कर देखती है। उसकी कातर निगाहें देख कर मुझे पछतावा होने लगता है - ये मैं क्या पूछ बैठा !! अभी तो आये मुझे घंटा भर भी नहीं हुआ, लेकिन बेबे ने मुझे उबार लिया है और दारजी का सच बिना लाग लपेट के बयान कर दिया है। यह सच उस सच से बिलकुल अलग है जो अभी अभी बेबे बयान कर रही थी। शायद वह इतने अरसे बाद आये अपने बेटे के सामने कोई भी झूठ नहीं बोलना चाहती। वैसे भी वह झूठ नहीं बोलती कभी। शायद इसीलिए उससे ये झूठ भी नहीं बोला गया है या यूँ कहूँ कि सच छुपाया नहीं गया है।

बेबे अभी दारजी के बारे में बता ही रही है कि मैंने बात बदल दी है और गुड्डी के बारे में पूछने लगता हूँ। वह खुश हो कर बताती है - गुड्डी दा बीए दा पैला साल है। विच्चों बिमार पै गई सी। विचारी दा इक साल मारेया गया। केंदी ए - मैं सारियां दी कसर कल्ले ई पूरी करां गी। बड़ी सोणी ते स्याणी हो गई ए तेरी भैण। पूरा घर कल्ले संभाल लेंदी ए। पैले तां तैनुं बोत पुछ्दी सी.. फेर होली होली भुल गयी..। बस कालेजों आंदी ही होवेगी।

मुझे तसल्ली होती है कि चलो कोई तो पढ़ लिख गया। खासकर गुड्डी को दारजी पढ़ा रहे हैं, यही बहुत बड़ी बात है। अभी हम गुड्डी की बात कर ही रहे हैं कि जोर से दरवाजा खुलने की आवाज आती है। मैं मुड़ कर देखता हूँ। सफेद सलवार कमीज में एक लड़की दरवाजे में खड़ी है। सांस फूली हुई। हाथ में ढेर सारी किताबें और आंखों में बेइन्तहां हैरानी। वह आंखें बड़ी बड़ी करके मेरी तरफ देख रही है। मैं उसे देखते ही उठ खड़ा होता हूँ - गुड्डी ..! मैं जोर से कहता हूँ और अपनी बाहें फ ठला देता हूँ।

वह लपक कर मेरी बाहों में आ गयी है। उसकी सांस धौंकनी की तरह तेज चल रही है। बहुत जोर से रोने लगी है वह। बड़ी मुश्किल से रोते रोते - वीर... जी.... वीर जी...! ही कह पा रही है। मैं उसके कंधे थपथपा कर चुप कराता हूँ। मेरे लिए खुद की रुलाई रोक पाना मुश्किल हो रहा है। बेबे भी रोने लगी है।

बड़ी मुश्किल से हम तीनों अपनी रुलाई पर काबू पाते हैं। तभी अचानक गुड्डी भाग कर रसोई में चली गयी है। बाहर आते समय उसके हाथ में थाली है। थाली में मैली, चावल और टीके का सामान है। वह मेरे माथे पर टीका लगाती है और मेरी बांह पर मौली बांधती है। उसकी स्नेह भावना मुझे भीतर तक भिगो गयी है। बेबे मुग्ध भाव से ये सब देखे जा रही है। गुड्डी जो भी कहती जा रही है, मैं वैसे ही करता जा रहा हूँ। जब उसने अपने सभी अरमान पूरे कर लिये हैं तो उसने झुक कर पूरे आदर के साथ मेरे पैर छूए हैं।

मैं उसके सिर पर चपत लगा कर आशीर्ष देता हूँ और भीतर से बैग लाने के लिए कहता हूँ। वह भारी बैग उठा कर लाती है। उसके लिए लाये सामान से उसकी झोली भर देता हूँ। वह हैरानी से सारा सामान देखती रह जाती है - ये सब आप मेरे लिए लाये हैं।

- तुझे विश्वास नहीं है?

- विश्वास तो है लेकिन इतना खरचा करने की क्या जरूरत थी? उसने वाकमैन के ईयर फोन तुरंत ही कानों से लगा लिये हैं।

- ओये बड़ी आयी खरचे की चाची, अच्छा एक बात बता - तू रोज ही इस तरह भाग कर कॉलेज से आती है?

- अगर रोज रोज मेरे वीरजी आयें तो मैं रोज ही कॉलेज से भाग कर आऊं।

वह गर्व से बताती है - अभी मैं सड़क पर ही थी कि किसी ने बताया - ओये घर जा कुड़िये, घर से भागा हुआ तेरा भाई वापिस आ गया है। बहुत बड़ा अफसर बन के। एकदम गबरू जवान दिखता है। जा वो तेरी राह देख रहा होगा। पहले तो मुझे विश्वास ही नहीं हुआ कि हमारा वीर भी कभी इस तरह से वापिस आ सकता है। मैंने सोचा कि हम भी तो देखें कि कौन गबरू जवान हमारे वीरजी बन कर आये हैं जिनकी तारीफ पूरा मौहल्ला कर रहा है। ज़रा हम भी देखें वे कैसे दिखते हैं। फिर हमने सोचा, आखिर भाई किसके हैं। स्मार्ट तो होंगे ही। मैंने ठीक ही सोचा है ना

वीर जी....!

- बातें तो तू खूब बना लेती है। कुछ पढ़ाई भी करती है या नहीं?

जवाब बेबे देती है - सारा दिन कताबां विच सिर खपांदी रेंदी ए। किन्नी वारी केया ए इन्नु - इन्ना ना पढ़ेया कर। तू केडी कलकटरी करणी ए, पर ए साडी गल सुण लवे तां गुड्डी नां किसदा?

अभी बेबे उसके बारे में यह बात बता ही रही है कि वह मुझे एक डायरी लाकर दिखाती है। अपनी कविताओं की डायरी।

मैं हैरान होता हूँ - हमारी गुड्डी कविताएं भी लिखती है और वो भी इस तरह के माहौल में।

पूछता हूँ मैं - कब से लिख रही है?

- तीन चार साल से। फिर उसने एक और फाइल दिखायी है। उसमें स्थानीय अखबारों और कॉलेज मैगजीनों की कतरनें हैं। उसकी छपी कविताओं की। गुड्डी की तरक्की देख कर सुकून हुआ है। बेबे ने बिल्लू और गोलू की जो तस्वीर खींची है उससे उन दोनों की तो कोई खास इमेज नहीं बनती।

गुड्डी मेरे बारे में ढेर सारे सवाल पूछ रही है, अपनी छोटी छोटी बातें बता रही है। बहुत खुश है वह मेरे आने से। मैं बैग से अपनी डायरी निकाल कर देखता हूँ। उसमें दो एक एंट्रीज ही हैं।

डायरी गुड्डी को देता हूँ - ले गुड्डी, अब तू अपनी कविताएं इसी डायरी में लिखा कर।

इतनी खूबसूरत डायरी पा कर वह बहुत खुश हो गयी है। तभी वह डायरी पर मेरे नाम के नीचे लिखी डिग्रियां देख कर चौंक जाती है,

- वीरजी, आपने पीएच डी की है?

- हां गुड्डी, खाली बैठा था, सोचा, कुछ पढ़ लिख ही लें।

- हमें बनाइये मत, कोई खाली बैठे रहने से पीएच डी थोड़े ही कर लेता है। आपके पास तो कभी फुर्सत रही भी होगी या नहीं, हमें शक है। सच बताइये ना, कहां से की थी?

- अब तू ज़िद कर रही है तो बता देता हूँ। एमटैक में युनिवर्सिटी में टॉप करने के बाद मेरे सामने दो ऑफर थे - एक बहुत बड़ी विदेशी कम्पनी में बढ़िया जॉब या अमेरिका में एक युनिवर्सिटी में पीएच डी के लिए स्कॉलरशिप। मैंने सोचा, नौकरी तो ज़िंदगी भर करनी ही है। लगे हाथों पीएच डी कर लें तो वापिस हिन्दुस्तान आने का भी बहाना बना रहेगा। नौकरी करने गये तो पता नहीं कब लौटें। आखिर तुझे ये डायरी, ये वॉक मैन और ये सारा सामान देने तो आना ही था ना...। मैंने उसे संक्षेप में बताया है।

- जब अमेरिका गये होंगे तो खूब घूमे भी होंगे? पूछती है गुड्डी। अमेरिका का नाम सुन कर बेबे भी पास सरक आयी है।

- कहां घूमना हुआ। बस, हॉस्टल का कमरा, गाइड का कमरा, क्लास रूम, लाइब्रेरी और कैंटीन। आखिर में जब सब लोग घूमने निकले थे तभी दो चार जगहें देखी थीं।

हँसते हुए कहती है वह - वहां कोई गोरी पसंद नहीं आयी थी?

मैं हँसता हूँ - ओये पगलिये। ये बाहर की लड़कियां तो बस एयुवेई होती हैं। हम लोगों के लायक थोड़े ही होती हैं। तू खुद बता अगर मैं वहा से कोई मेम शेम ले आता तो ये बेब मुझे घर में घुसने देती?

यह सुन कर बेबे ने तसल्ली भरी ठंडी सांस ली है। कम से कम उसे एक बात का तो विश्वास हो गया है कि मैं अभी कुंवारा हूँ।

गुड्डी आग्रह करती है - वीरजी कुछ लिखो भी तो सही इस पर.. मैं अपनी सारी सहेलियों को दिखाऊंगी।

- ठीक है, गुड्डी, तेरे लिए मैं लिख भी देता हूँ।

मैं डायरी में लिखता हूँ

- अपनी छोटी, मोटी, दुलारी और प्यारी बहन

गुड्डी को

जो एक मेले के चक्कर में मुझसे बिछुड़ गयी थी।

'दीप'

डायरी ले कर वह तुरंत ही उसमें पता नहीं क्या लिखने लग गयी है। मैं पूछता हूँ तो दिखाने से भी मना कर देती है।

आंगन में चारपाई पर लेटे लेटे गुड्डी से बातें करते-करते पता नहीं कब आंख लग गयी होगी। अचानक शोर-शराबे से आंख खुली तो देखा, दारजी मेरे सिरहाने बैठे हैं। पहले की तुलना में बेहद कमज़ोर और टूटे हुए आदमी लगे वे मुझे। मैं तुरंत उठ कर उनके पैरों पर गिर गया हूँ। मैं एक बार फिर रो रहा हूँ। मैं देख रहा हूँ, दारजी मेरे सिर पर हाथ फेरते हुए अपनी आंखें पोंछ रहे हैं। उन्हें शायद बेबे ने मेरी राम कहानी सुना दी होगी इसलिए उन्होंने कुछ भी नहीं पूछा। सिर्फ एक ही वाक्य कहा है - तेरे हिस्से विच घरों बार जा के ई आदमी बनण लिखेया सी। शायद रबब नू ऐही मंज़ूर सी।

मैंने सिर झुका लिया है। क्या कहूँ। बेबे मुझे अभी बता ही चुकी है घर से मेरे जाने के बाद का दारजी का व्यवहार। मुझे बेबे की बात पर विश्वास करना ही पड़ेगा। दारजी मेरे लिए कुछ भी कर सकते हैं। ये बूढ़ा जिद्दी आदमी, जिसने अपने गुस्से के आगे किसी को भी कुछ नहीं समझा। बेबे बता रही थी - जद तैनुं अद्धे अधूरे कपडेयां विच घरों कडेया सी तां दारजी कई दिनां तक इस गल्ल नू मनण लई त्यार ई नई सन कि इस विच उन्नादी कोई गलती सी। ओ ते सारेयां नू सुणा-सुणा के ए ही केंदे रये - मेरी तरफों दीपू कल मरदा ए, तां अज मर जावे। सारेयां ने एन्ना नू समझाया सी - छोटा बच्चा ए। विचारा कित्थे मारेया मारेया फिरदा होवेगा। लेकिन तेरे दारजी नई मन्ने सी। ओ तां पुलस विच रपोट कराण वी नई गए सन। मैं ई हत्थ जोड़ जोड़ के तेरे मामे नू अगे भेजया सी लेकिन ओ वी उत्थों खाली हत्थ वापस आ गया सी। पुलस ने जदों तेरी फोटो मंगगी तां तेरा मामा उत्थे ई रो पेया सी - थानेदारजी, उसदी इक अध फोटो तां है, लम्मे केशां वाली जूड़े दे नाल, लेकिन उस नाल किदां पता चलेगा दीपू दा ..। ओ ते केस कटवा के आया सी इसे लई तां गरमागरमी विच घर छड्ड के नठ गया ए..।

मुझे जब बेबे ये बात बता रही थी तो जैसे मेरी पीठ पर बचपन में दारजी की मार के सारे के सारे जख्म टीस मारने लगे थे। अब भी दारजी के सामने बैठे हुए मैं सोच रहा हूँ - अगर मैं तब भी घर से न भागा होता तो मेरी ज़िंदगी ने क्या रुख लिया होता। ये तो तय है, न मेरे हिस्से में इतनी पढ़ाई लिखी होती और न इतना सुकून। तब मैं भी गोलू बिल्लू की तरह किसी दुकान पर सेल्समैनी कर रहा होता।

मैं दारजी के साथ ही खाना खाता हूँ।

खाना जिद करके गुड्डी ने ही बनाया है।

बेबे ने उसे छोड़ा है - मैं लख कवां, कदी ते दो फुलके सेक दित्ता कर। पराये घर जावेंगी तां की करेंगी लेकिन कदी रसोई दे नेडे नई आवेगी। अज वीर दे भाग जग गये हन कि साडी गुड्डी रोटी पका रई ए।

बेबे भी अजीब है। जब तक गुड्डी नहीं आयी थी उसकी खूब तारीफें कर रही थी कि पूरा घर अकेले संभाल लेती है और अब ...।

खाना खा कर दारजी गोलू और बिल्लू को खबर करने चले गये हैं।

मैं घर के भीतर आता हूँ। सारा घर देखता हूँ।

घर का सामान देखते हुए धीरे-धीरे भूली बिसरी बातें याद आने लगी हैं। याद करता हूँ कि तब घर में क्या क्या



हुआ करता था। कुल मिला कर घर में पुरानापन है। जैसे अरसे से किसी ने उसे जस का तस छोड़ रखा हो। बेशक इस बीच रंग रोगन भी हुआ ही होगा लेकिन फिर भी एक स्थायी किस्म का पुरानापन होता है चीजों में, माहौल में और कपड़ों तक में, जिसे झाड़ पोंछ कर दूर नहीं किया जा सकता।

हां, एक बात जरूर लग रही है कि पूरे घर में गुड्डी का स्पर्श है। हलका-सा युवा स्त्राः स्पर्श। उसने जिस चीज को भी झाड़ा पोंछा होगा, अपनी पसंद और चयन की नैसर्गिक महक उसमें छोड़ती चली गयी होगी। यह मेरे लिए नया ही अनुभव है। बड़े कमरे में एक पैनासोनिक के पुराने से स्टीरियो ने भी इस बीच अपनी जगह बना ली है। एक पुराना ब्लैक एंड व्हाइट टीवी भी एक कोने में विराजमान है। जब गया था तो टीवी तब शहर में पूरी तरह आये ही नहीं थे। टीवी चला कर देखता हूं। खराब है।

बंद कर देता हूं। सोचता हूं, जाते समय एक कलर टीवी यहां के लिए खरीद दूंगा। अब तो घर-घर में कलर टीवी हैं। छोटे कमरे में जाता हूं। हम लोगों के पढ़ने लिखने के फालतू सामान रखने का कमरा यही होता था। हम भाइयों और दोस्तों के सारे सीक्रेट अभियान यहीं पूरे किये जाते थे क्योंकि दारजी इस कमरे में बहुत कम आते थे। इसी कमरे में हम कंचे छुपाते थे, लूटी हुई पतंगों को दारजी के डर से अलमारी के पीछे छुपा कर रखते थे। गुल्ली डंडा तो खैर दारजी ने हमें कभी बना कर दिये हों, याद नहीं आता। मुझे पता है, अलमारी के पीछे वहां अब कुछ नहीं होगा फिर भी अलमारी के पीछे झांक कर देखता हूं। नहीं, वहां कोई पतंग नहीं है। जब गया था तब वहां मेरी तीन चार पतंगें रखी थीं। एक आध चरखी मांझे की भी थी।

रात को हम सब इकट्ठे बैठे हैं। जैसे बचपन में बैठा करते थे। बड़े वाले कमरे में। सब के सब अपनी अपनी चारपाई पर जमे हुए। तब इस तरह बैठना सिर्फ सर्दियों में ही होता था। बेबे खाना बनाने के बाद कोयले वाली अंगीठी भी भीतर ले आती थी और हम चारों भाई बहन दारजी और बेबे उसके चारों तरफ बैठ कर हाथ भी सेंकते रहते और मूंगफली या रेवड़ी वगैरह खाते रहते। रात का यही वक्त होता था जब हम भाई बहनों में कोई झगड़ा नहीं होता था।

अब घर में गैस आ जाने के कारण कोयले वाली अंगीठी नहीं रही है। वैसे सर्दी अभी दूर है लेकिन सब के सब अपनी अपनी चारपाई पर खेस ओढ़े आराम से बैठे हैं। मुझे बेबे ने अपने खेस में जगह दे दी है। पता नहीं मेरी अनुपस्थिति में भी ये जमावड़े चलते रहते थे या नहीं। सबकी उत्सुकता मेरी चौदह बरस की यात्रा के बारे में विस्तार से सुनने की है जबकि मैं यहां के हाल चाल जानना चाहता हूं।

फैसला यही हुआ है कि आज मैं यहां के हाल चाल सुनूंगा और कल अपने हाल बताऊंगा। वैसे भी दिन भर किस्तों में मैं सबको अपनी कहानी सुना ही चुका हूं। ये बात अलग है कि ये बात सिर्फ मैं ही जानता हूं कि इस कहानी में कितना सच है और कितना झूठ।

शुरूआत बेबे ने की है। बिरादरी से..। इस बीच कौन-कौन पूरा हो गया, किस-किस के कितने-कितने बच्चे हुए, शादियां, दो-चार तलाक, दहेज की वजह से एकाध बहू को जलाने की खबर, किसने नया घर बनाया और कौन-कौन मोहल्ला छोड़ कर चले गये और गली में कौन-कौन नये बसने आये। किस के घर में बहू की शक्ल में डायन आ गयी है जिसने आते ही अपने मरद को अपने बस में कर लिया है और मां-बाप से अलग कर दिया है, ये और ऐसी ढेरों खबरें बेबे की पिटारी में से निकल रही हैं और हम सब मजे ले रहे हैं।

अभी बेबे ने कोई बात पूरी नहीं की होती कि किसी और को उसी से जुड़ी और कोई बात याद आ जाती है तो बातों का सिलसिला उसी तरफ मुड़ जाता है।

मैं गोलू से कहता हूं - तू बारी बारी से बचपन के सब साथियों के बारे में बताता चल।

वह बता रहा है - प्रवेश ने बीए करने के बाद एक होटल में नौकरी कर ली है। अंग्रेजी तो वह तभी से बोलने लगा

था। आजकल राजपुर रोड पर होटल मीडो में बड़ी पोस्ट पर है। शादी करके अब अलग रहने लगा है। ऊपर जाखन की तरफ घर बनाया है उसने।

- बंसी इसी घर में है। हाल ही में शादी हुई है उसकी। मां-बाप दोनों मर गये हैं उनके।

- और गामा?

मुझे गामे की अगुवाई में की गयी कई शरारतें याद आ रही हैं। दूसरों के बगीचों में अमरूद, लीची और आम तोड़ने के लिए हमारे गुप के सारे लड़के उसी के साथ जाते थे।

बिल्लू बता रहा है - गामा बेचारा ग्यारहवीं तक पढ़ने के बाद आजकल सब्जी मंडी के पास गरम मसाले बेचता है। वहीं पर पक्की दुकान बना ली है और खूब कमा रहा है।

- दारजी, ये नंदू वाले घर के आगे मैंने किसी मेहरचंद की नेम प्लेट देखी थी। वे लोग भी घर छोड़ गये हैं क्या? मैं पूछता हूँ।

- मंगाराम बिचारा मर गया है। बहुत बुरी हालत में मरा था। इलाज के लिए पैसे ही नहीं थे। मजबूरन घर बेचना पड़ा। उसके मरने के बाद नंदू की पढ़ाई भी छूट गयी। लेकिन मानना पड़ेगा नंदू को भी। उसने पढ़ाई छोड़ कर बाप की जगह कई साल तक ठेला लगाया, बाप का काम आगे बढ़ाया और अब उसी ठेले की बदौलत नहरवाली गली के सिरे पर ही उसका शानदार होटल है। विजय नगर की तरफ अपना घर-बार है और चार आदमियों में इज्जत है।

- मैं आपको एक मजेदार बात बताती हूँ वीर जी।

ये गुड्डी है। हमेशा समझदारी भरी बातें करती है।

- चल तू ही बोल दे पहले। जब तक मन की बात न कह दे, तेरे ही डकार ज्यादा अटके रहते हैं। बिल्लू ने उसे छोड़ा है।

- रहने दे बड़ा आया मेरे डकारों की चिंता करने वाला। और तू जो मेरी सहेलियों के बारे में खोद खोद के पूछता रहता है वो...। गुड्डी ने बदला ले लिया है।

बिल्लू ने लपक कर गुड्डी की चुटिया पकड़ ली है - मेरी झूठी चुगली खाती है। अब आना मेरे पास पंज रपड़ये मांगने।

गुड्डी चिल्लायी है - देखो ना वीरजी, एक तो पंज रपड़ये का लालच दे के ना मेरी सहेलियों ....। बिल्लू शरमा गया है और उसने गुड्डी के मुंह पर हाथ रख दिया है - देख गुड्डी, खबरदार जो एक भी शब्द आगे बोला तो।

सब मजे ले रहे हैं। शायद ये उन दोनों के बीच का रोज का किस्सा है।

- तू वी इन्ना पागलां दे चक्कर विच पै गया ए। ए ते इन्ना दोवां दा रोज दा रोणा ए। बेबे इतनी देर बाद बोली है।

- असी ते सोड़ये हुण। गोलू ने अपने सिर के ऊपर चादर खींच ली है। गप्पबाजी का सिलसिला यहीं टूट गया है।

बाकी सब भी उबासियां लेने लगे हैं। तभी बिल्लू ने टोका है - लेकिन वीरा, आपके किस्से तो रह ही गये ।

- अब कल सुनना किस्से। अब मुझे भी नींद आ रही है। कहते हुए मैं भी बेबे की चारपाई पर ही मुड़ी-तुड़ी हो कर पसर गया हूँ। बेबे मेरे बालों में उंगलियां फिरा रही है। चौदह बरस बाद बेबे के ममताभरे आंचल में आंखें बंद करते ही मुझे तुरंत नींद आ गयी है। कितने बरस बाद सुकून की नींद सो रहा हूँ।

देख रहा हूँ इस बीच बहुत कुछ बदल गया है। बहुत कुछ ऐसा भी लग रहा है जिस पर समय के क्रूर पंजों की खरोंच तक नहीं लगी है। सब कुछ जस का तस रह गया है। घर में भी और बाहर भी..। दारजी बहुत दुबले हो गये हैं। अब उतना काम भी नहीं कर पाते, लेकिन उनके गुस्से में कोई कमी नहीं आयी है। कल बेबे बता रही थी - बच्चे जवान

हो गये हैं, शादी के लायक होने को आये लेकिन अभी भी उन्हें जलील करने से बाज नहीं आते। उनके इसी गुस्से की वजह से अब तो कोई मोया ग्राहक ही नहीं आता।

गोलू और बिल्लू अपने अपने धंधे में बिजी हैं। बेबे ने बताया तो नहीं लेकिन बातों ही बातों में कल ही मुझे अंदाजा लग गया था कि गोलू के लिए कहीं बात चल रही है। अब मेरे आने से बात आगे बढ़ेगी या ठहर जायेगी, कहा नहीं जा सकता। अब बेबे और दारजी उसके बजाये कहीं मेरे लिए ... नहीं यह तो गलत होगा। बेबे को समझाना पड़ेगा।

ये गोलू और बिल्लू भी अजीब हैं। कल पहले तो तपाक से मिले, थोड़ी देर रोये-धोये। जब मैंने उन्हें उनके उपहार दे दिये तो बहुत खुश भी हुए लेकिन जब बाद में बातचीत चली तो मेरे हालचाल जानने के बजाये अपने दुखड़े सुनाने लगे। दारजी और बेबे की चुगलियां खाने लगे। मैं थोड़ी देर तक तो सुनता रहा लेकिन जब ये किस्से बढ़ने लगे तो मैंने बरज दिया - मैं ये सब सुनने के लिए यहां नहीं आया हूं। तुम्हारी जिससे भी जो भी शिकायतें हैं, सीधे ही निपटा लो तो बेहतर। इतना सुनने के बाद दोनों ही उठ कर चल दिये थे। रात को बेशक थोड़ा-बहुत हंसी मज़ाक कर रहे थे, लेकिन सवेरे-सवेरे ही तैयार हो कर - अच्छा वीरजी, निकलते हैं, कहते हुए दोनों एक साथ ही दरवाजे से बाहर हो गये हैं। गुड्डी के भी कॉलेज का टाइम हो रहा है, और फिर उसने सब सहेलियों को भी तो बताना है कि उसका सबसे प्यारा वीर वापिस आ गया है।

हँसती है वह - वीरजी, शाम को मेरी सारी सहेलियां आपसे मिलने आयेंगी। उनसे अच्छी तरह से बात करना। मैं उसकी चुटिया पकड़ कर खींच देता हूं - पगलिये, मैंने तेरी सारी सहेलियों से क्या बियाह रचाना है जो अच्छी तरह से बात करूं। ले ये दो सौ रुपये। अपनी सारी सखियों को मेरी तरफ से आइसक्रीम खिला देना। वह खुशी-खुशी कॉलेज चली गयी है।

छत पर खड़े हो कर चारों तरफ देखता हूं। हमारे घर से सटे बछित्तर चाचे का घर। मेरे हर वक्त के जोड़दार जोगी, जोगिन्दर सिंह का घर। उनके के टूटे-फूटे मकान की जगह दुमंजिला आलीशान मकान खड़ा है। बाकी सारे मकान कमोबेश उन्हीं पुरानी दीवारों के कंधों पर खड़े हैं। कहीं-कहीं छत पर एकाध कमरा बना दिया गया है या टिन के शेड डाल दिये गये हैं।

नीचे उतर कर बेबे से कहता हूं - जरा बाजार का एक चक्कर लगा कर आ रहा हूं। वापसी पर नंदू की दूकान से होता हुआ आऊंगा।

मैं गलियां गलियों ही तिलक रोड की तरफ निकल जाता हूं और वहां से बिंदाल की तरफ से होता हुआ चकराता रोड मुड़ जाता हूं। कनाट प्लेस के बदले हुए रूप को देखता हुआ चकराता रोड और वहां से घूमता-घामता घंटाघर और फिर वहां से पलटन बाज़ार की तरफ निकल आया हूं। यूं ही दोनों तरफ की दुकानों के बोर्ड देखते हुए टहल रहा हूं।

मिशन स्कूल के ठीक आगे से गुज़रते हुए बचपन की एक घटना याद आ रही है। तब मैं एक पपीते वाले से यहीं पर पिटते-पिटते बचा था। हमारी कक्षा के प्रदीप अरोड़ा ने नई साइकिल खरीदी थी। मेरा अच्छा दोस्त था प्रदीप। राजपुर रोड पर रहता था वो। घर दूर होने के कारण वह खाने की आधी छुट्टी में खाना खाने घर नहीं जाता था बल्कि स्कूल के आस-पास ही दोस्तों के साथ चक्कर काटता रहता था। मैं खाना खाने घर आता था लेकिन आने-जाने के चक्कर में अकसर वापिस आने में देर हो ही जाती थी। इसलिए कई बार प्रदीप अपनी साइकिल मुझे दे देता। इस तरह मेरे दस- पंद्रह मिनट बच जाते तो हम ये समय भी एक साथ गुज़ार पाते थे। साइकिल चलानी तब सीखी ही थी। एक दिन इसी तरह मैं खाना खा कर वापिस जा रहा था कि मिशन स्कूल के पास भीड़ के कारण

बैलेंस बिगड़ गया। इससे पहले कि मैं साइकिल से नीचे उतर पाता, मेरा एक हाथ पपीतों से भरे एक हथठेले के हथ्थे पर पड़ गया। मेरा पूरा वजन हथ्थे पर पड़ा और मेरे गिरने के साथ ही ठेला खड़ा होता चला गया। सारे पपीते ठेले पर से सड़क पर लुढ़कते आ गिरे। पपीते वाला बूढ़ा मुसलमान वहीं किसी ग्राहक से बात कर रहा था। अपने पपीतों का ये हाल देखते ही वह गुस्से से कांपने लगा। मेरी तो जान ही निकल गयी। साइकिल के नीचे गिरे-गिरे ही मैं डर के मारे रोने लगा। पिटने का डर जो था सो था, उससे ज्यादा डर प्रदीप की साइकिल छिन जाने का था। वहां एक दम भीड़ जमा हो गयी थी। इससे पहले कि पपीते वाला मुसलमान मेरी साइकिल छिन कर मुझ पर हाथ उठा पाता, किसी को मेरी हालत पर तरस आ गया और उसने मुझे तेजी से खड़ा किया, साइकिल मुझे थमायी और तुरंत भाग जाने का इशारा किया। मैं साइकिल हाथ में लिये लिये ही भागा था। उस दिन के बाद कई दिन तक मैं मिशन स्कूल वाली सड़क से ही नहीं गुजरा था। मुझे पता है, पपीते के ठेले वाला वह बूढ़ा मुसलमान इतने बरस बाद इस समय यहां नहीं होगा लेकिन फिर भी फलों के सभी ठेले वालों की तरफ एक बार देख लेता हूं।

आगे कोतवाली के पास ही नंदू का होटल है।

चलो, एक शरारत ही सही। अच्छी चाय की तलब भी लगी हुई है। नंदू के हेटल में ही चाय पी जाये। एक ग्राहक के रूप में। परिचय उसे बाद में दूंगा। वैसे भी वह मुझे इस तरह से पहचानने से रहा।

नंदू काउंटर पर ही बैठा है। चेहरे पर रौनक है और संतुष्ट जीवन का भाव भी। मेरी ही उम्र का है लेकिन जैसे बरसों से इसी तरह धंधे करने वाले लोगों के चेहरे पर एक तरह का घिसी हुई रकम वाला भाव आ जाता है, उसके चेहरे पर भी वही भाव है। बहुत ही अच्छा बनाया है होटल नंदू ने। बेशक छोटा-सा है लेकिन उसमें पूरी मेहनत और कलात्मक अभिरुचि का पता चल रहा है। दुकान के बाहर ही बोर्ड लगा हुआ है - आउटडोर कैटेरिडग अंडर टेकन। वेटर पानी रख गया है। मैं चाय का आर्डर देता हूं। चाय का पेमेंट करने के बाद मैं वेटर से कहता हूं कि ज़रा अपने साहब को बुला लाये। एक आउटडोर कैटेरिडग का आर्डर देना है।

नंदू भीतर आया है। हाथ में मीनू कार्ड और आर्डर बुक है - कहिये साहब, कैसी पार्टी देनी है आपको? उसने बहुत ही आदर से पूछा है।

- बैठो। मैंने उसे आदेश दिया है।

उसके चेहरे का रंग बदला है और वह संकोच करते हुए बैठ गया है।

मैं अपने को भरसक नार्मल बनाये रखते हुए उससे पूछता हूं

- आपके यहां किस किस्म की पार्टी का इंतजाम हो सकता है?

वह आराम से बैठ गया है - देखिये साहब, हम हर तरह की आउटडोर कैटेरिंग के आर्डर लेते हैं। आप सिर्फ हमें ये बता दीजिये कि पार्टी कब, कहां और कितने लोगों के लिए होनी है। बाकी आप हम पर छोड़ दीजिये। मीनू आप तय करेंगे या..

वह अब पूरी तरह दुकानदार हो गया है - आप को बिलकुल भी शिकायत का मौका नहीं मिलेगा। वेज, नॉन-वेज और आप जैसे खास लोगों के लिए हम ड्रिंक्स पार्टी का भी इंतजाम करते हैं।

तभी उसे ख्याल आता है - आप कॉफी लेंगे या ठंडा?

- थैंक्स। मैंने अभी ही चाय पी है।

- तो क्या हुआ? एक कॉफी हमारे साथ भी लीजिये। वह वेटर को दो कॉफी लाने के लिए कहता है और फिर मुझसे पूछता है

- बस, आप हमें अपनी ज़रूरत बता दीजिये। कब है पार्टी ?

- ऐसा है खुराना जी कि पार्टी तो मैं दे रहा हूँ लेकिन सारी चीजें, मीनू, जगह, तारीख मेहमान आप पर छोड़ता हूँ। सब कुछ आप ही तय करेंगे। मैं आपको मेहमानों की लिस्ट दे दूंगा। उनमें से कितने लोग शहर में हैं, ये भी आप ही देखेंगे और उन्हें आप ही बुलायेंगे और ....।

- बड़ी अजीब पार्टी है, खैर, आप फिक्र न करें। आप शायद बाहर से आये हैं। हम आपको निराश नहीं करेंगे। तो हम मीनू तय कर लें ...?

- उसकी कोई ज़रूरत नहीं है, आप बाद में अपने आप देख लेना।

मैं बड़ी मुश्किल से अपनी हँसी रोक पा रहा हूँ। नंदू को बेवकूफ बनाने में मुझे बहुत मज़ा आ रहा है। उसे समझ में नहीं आ रहा है कि ये पार्टी करेगा कैसे...।

कॉफी आ गयी है।

आखिर वह कहता है - आप कॉफी लीजिये और मेहमानों के नाम पते तो बताइये ताकि मैं उन्हें आपकी तरफ से इन्वाइट कर सकूँ... या आप खुद इन्वाइट करेंगे? वह साफ-साफ परेशान नज़र आ रहा है।

- ऐसा है कि फिलहाल तो मैं अपने एक खास मेहमान का ही नाम बता सकता हूँ। आप उससे मिल लीजिये, वही आपको सबके नाम और पते बता देगा। मैं उसकी परेशानी बढ़ाते हुए कहता हूँ।

- ठीक है वही दे दीजिये। उसने सरंडर कर दिया है।

- उसका नाम है नंद लाल खुराना, कक्षा 7 डी, रोल नम्बर 27, गांधी स्कूल।

यह सुनते ही वह कागज पैन छोड़ कर उठ खड़ा हुआ है और हैरानी से मेरे दोनों कंधे पकड़ कर पूछ रहा है - आप .. आप कौन हैं ? मैं इतनी देर से लगातार कोशिश कर रहा हूँ कि इस तरह की निराली पार्टी के नाम पर आप ज़रूर मुझसे शरारत कर रहे हैं। कौन हैं आप, ज़रूर मेरे बचपन के और सातवीं क्लास के ही दोस्त रहे होंगे..!

मैं मुस्कुरा रहा हूँ - पहचानो खुद !

वह मेरे चेहरे-मोहरे को अच्छी तरह देख रहा है। अपने सिर पर हाथ मार रहा है लेकिन उसे समझ नहीं आ रहा, मैं कौन हो सकता हूँ।

वह याद करते हुए दो-तीन नाम लेता है उस वक्त की हमारी क्लास के बच्चों के। मैं इनकार में सिर हिलाता रहता हूँ। उसकी परेशानी बढ़ती जा रही है।

अचानक उसके गले से चीख निकली है - आप .. आप गगनदीप, दीप.. दीपू..!

वह लपक कर सामने की कुर्सी से उठ कर मेरी तरफ आ गया है और ज़ोर-ज़ोर से रोते हुए तपाक से मेरे गले से लग गया है। वह रोये जा रहा है। बोले जा रहा है - आप कहां चले गये थे। हमें छोड़ कर गये और एक बार भी मुड़ कर नहीं देखा आपने। सच मानिये, आपके आने से मेरे मन पर रखा कितना बड़ा बोझ उतर गया है। हम तो मान बैठे थे कि इस जनम में तो आपसे मिलना हो भी पायेगा या नहीं।

मैं भी उसके साथ सुबक रहा हूँ। रो रहा हूँ। अपने मन का बोझ हलका कर रहा हूँ।

रोते रोते पूछता हूँ - क्यों बे क्या बोझ था तेरे मन पर। और ये क्या दीप जी दीप जी लगा रखा है ?

- सच कह रहा हूँ जब आप गये थे, तुम ...तू गया था तो हम सब के सब तेरे चारों तरफ भीड़ लगा कर खड़े थे। तुझे रोते-रोते सुबह से दोपहर हो गयी थी। हम सब बीच-बीच में घर जा कर खाना भी खा आये थे लेकिन तुझे खाने को किसी ने भी नहीं पूछा था। तेरे घर से तो खाना क्या ही आता। तेरे भाई भी तो वहीं खड़े थे। सिर्फ मैं ही था जो बिना किसी को बताये तेरे लिए खाने का इंतज़ाम कर सकता था। तेरे लिए अपने बाऊ की हट्टी से एक प्लेट छोले भटूरे ही ला देता। लेकिन हम सब बच्चों को जैसे लकवा मार गया था। हम बच्चे तेरे जाने के बाद बहुत रोये

थे। तुझे बहुत दिनों तक दूँढते रहे थे। बहुत दिनों तक तो हम खेलने के लिए बाहर ही नहीं निकले थे। एक अजीब सा डर हमारे दिलों में बैठ गया था।

हम दोनों बैठ गये हैं। नंदू अभी भी बोले जा रहा है - मुझे बाद में लगता रहा कि मार खाना तेरे लिए कोई नई बात नहीं थी। तेरे केस कटाने की वज़ह भी मैं समझ सकता था लेकिन मुझे लगता रहा कि सारा दिन भूखे रहने और घर वालों के साथ-साथ सारे दोस्तों की तरफ से भी परवाह न किये जाने के कारण ही तू घर छोड़ कर गया था।

अगर हमने तेरे खाने का इंतज़ाम कर दिया होता और किसी तरह रात हो जाती तो तू ज़रूर रुक जाता। हो सकता है हमारी देखा-देखी कोई बड़ा आदमी ही बीच बचाव करके तुझे घर ले जाता। लेकिन आज तुझे इस तरह देख कर मैं बता नहीं सकता, मैं कितना खुश हूँ। वैसे लगता तो नहीं, तूने कोई तकलीफ भोगी होगी। जिस तरह की तेरी पर्सनैलिटी निकल आयी है, माशा अल्लाह, तेरे आगे जितेन्दर-पितेन्दर पानी भरें।

उसने फिर से मेरे दोनों हाथ पकड़ लिये हैं - मैं आपको बता नहीं सकता, आपको फिर से देख कर मैं कितना खुश हूँ। वैसे कहाँ रहे इतने साल और हम गरीबों की याद इतने बरसों बाद कैसे आ गयी?

- क्या बताऊँ। बहुत लम्बी और बोर कहानी है। न सुनने लायक, न सुनाने लायक। फिलहाल इतना ही कि अभी तो बंबई से आया हूँ। दो दिन पहले ही आया हूँ। कल और परसों के पूरे दिन तो घर वालों के साथ रोने-धोने में निकल गये। दारजी तेरे बारे में बता रहे थे कि तू यहीं है। सबसे पहले तेरे ही पास आया हूँ कि तेरे ज़रिये सबसे मुलाकात हो जायेगी। बता कौन-कौन है यहां ?

- अब तो उस्ताद जी, सबसे आपकी मुलाकात ये नंद लाल खुराना, कक्षा 7 डी, रोल नम्बर 27, गांधी स्कूल ही कराएगा और एक बढ़िया पार्टी में ही करायेगा।

वह ज़ोर से हँसा है - अब आप देखिये, नंद लाल खुराना की कैटरिंग का कमाल। चल, बीयर पीते हैं और तेरे आने की सेलिब्रेशन की शुरुआत करते हैं।

- मैं बीयर वगैरह नहीं पीता।

- कमाल है। हमारा यार बीयर नहीं पीता। तो क्या पीता है भाई?

- अभी अभी तो चाय और कॉफी पी हैं।

- साले, शर्म तो आयी नहीं कि चाय का बिल पहले चुकाया और मुझे बाद में बुलवाया।

- मैं देखना चाहता था कि तू मुझे पहचान पाता है या नहीं। वैसे बता तो सही, यहां कौन-कौन हैं। यहां किस-किस से मुलाकात हो सकती है?

- मुलाकात तो बॉस, पार्टी में ही होगी। बोल कब रखनी है?

- जब मर्जी हो रख ले, लेकिन मेरी दो शर्तें हैं।

- तू बोल तो सही।

- पहली बात ये कि पार्टी मेरी तरफ से होगी और दूसरी बात यह कि सबको पहले से बता देना कि मेरे इन चौदह बरसों के बारे में मुझसे कोई भी किसी भी किस्म का सवाल नहीं पूछेगा। सबके लिए इतना ही काफी है कि मैं वापिस आ गया हूँ, ठीक-ठाक हूँ और फिलहाल किसी भी तरह की तकलीफ़ में नहीं हूँ।

- दूसरी शर्त तेरी मंज़ूर लेकिन पार्टी तो मेरी ही तरफ से और मेरे ही घर पर होगी। परसों ठीक रहेगी?

- चलेगी। अब चलता हूँ। सुबह से निकला हूँ। बेबे राह देखती होगी।

- खाना खा कर जाना।

- फिर आऊंगा। अभी नहीं।

बेबे के पास बैठा हूँ। मेरे लिए खास तौर पर बेबे ने तंदूर तपाया है और मेरी पसंद की प्याज वाली तंदूरी परौंठिया सेंक रही है। मैं वहीं बैठा परौंठियों के लिए आटे के पेड़े बनाने के चक्कर में अपने हाथ खराब कर रहा हूँ।

तभी बेबे ने कहना शुरू किया है - वेख पुत्तरा, हुण तू पुराणियां गल्ला भुला के ते इक कम कर। बेबे रुकी है और मेरी तरफ देखने लगी है। तंदूर की आग की लौ से उसका चेहरा एकदम लाल हो गया है।

मैं गरमागरम परौंठे का टुकड़ा मुंह में डालते हुए पूछता हूँ - मैंनु दस ते सई बेबे, की करना है। हलका सा डर भी है मन में, पता नहीं बेबे क्या कह दे।

- तेरे दारजी के रये सी कि हुण तां तैनुं कोई तकलीफ नई होवेगी अगर तू गुरुद्वारे विच जा के ते अमरित चख लै। रबब मेर करे, साडी वी तसल्ली हो जावेगी अते बिरादरी वी तैनुं फिर तों ...। बेबे ने वाक्य अधूरा ही छोड़ दिया है। मैं हंसता हूँ - वेख बेबे, तेरी गल्ल ठीक है कि मैं अमरित चख के ते इक वार फिर सिखी धरम विच वापस आ जावां। त्वाडी वी तसल्ली हो जावेगी ते बिरादरी वी खुश हो जायेगी। अच्छा मैंनु इक गल्ल दस बेबे, इस अमरित चक्खण दे बाद मैंनु की करना होवेगा।

बेबे की आंखों में चमक आ गयी है। उसे विश्वास नहीं हो रहा कि मैं इतनी आसानी से अमरित चखने के लिए मान जाऊंगा - अमरित चखन दे बाद बंदा इक वारी फिर सुच्चा सिख बण जांदा ए। इस वास्ते केस, किरपाण, कछेहरा, कंधा अते किरपाण धारण करने पैदे ने ते इसदे बाद कोई वी बंदा केसां दा अपमान नीं कर सकता, मुसलमानां ते हत्थ का कटेया मांस नीं खा सकता, दूजे दी वोटी दे नाल..

- रैण दे बेबे। मैं तैनुं दस देवां कि अमरित चक्खण दे बाद कीं होंदा है। मैं तैनुं पैली वारी दस रैया हां कि मैं इन्ना सारियां चीजां नू जितना मनदां हां ते जाणदा हां, उतना ते इत्थे दे गुरुद्वारे दे भाईजी वी नीं जाणदे होणगे।

- मैं समझी नीं पुत्त। बेबे हैरानी से मेरी तरफ देख रही है।

- हुण गल्ल निकली ई है तां सुण लै। मैं ए सारे साल मणिकर्ण ते अमरितसर दे गुरुद्वारेयां विच रै के कटे हन। तू केंवे ते मैं तैनुं पूरा दा पूरा गुरु ग्रंथ साहिब जबानी सुणा देवां। मैं नामकरण, आनंद कारज, अमरित चक्खण दियां सारियां विधियां करदा रेया हां। बेशक मैं कदी वी पूरे केस नीं रखे पर हमेशा फटका बन्न के रेया हां। गुरुग्रंथ साहिब दा पाठ करदा रेया हां। जित्थे तक अमरित चख के ते बिरादरी नू खुश करण दी गल्ल है, मैं इसदी जरूरत नीं समझदा। बाकी मैं तैनुं विश्वास दिला दवां कि मैं केसां वगैरा दा वादा ते नीं कर सकता पर ऐ मेरे तों लिख के लै लै कि मैं कदी वी मीट नीं खावांगा, कदी खा के वी नीं वेखया, दूजे दी वोटी नू अपणी भैण मन्नांगा, सिगरेट, शराब नू कदी हत्थ नीं लावांगा। होर कुज..?

बेबे हैरानी से मेरी तरफ देखती रह गयी है। उसे कत्तई उम्मीद नहीं थी कि सच्चाई का यह रूप उसे देखने का मिलेगा। वह कुछ कह ही नहीं पायी है।

- लेकन पुत्तर, तेरे दारजी..बिरादरी..

- बिरादरी दी गल्ल रैण दे बेबे, मैं दो चार दिन्नां बाद चले जाणा ए। बिरादरी हुण मेरे पिच्छे पिच्छे बंबई ते नीं ना आवेगी। चल मैं तेरी इन्नीं गल्ल मन्न लैनां कि घर विच ई अस्सी अखण्ड पाठ रख लैने हां। सारेयां दी तसल्ली हो जायेगी।

थोड़ी हील हुज्जत के बाद बेबे अखण्ड पाठ के लिए मान गयी है, लेकिन उसने अपनी यह बात भी मनवा ली है कि पाठ के बाद लंगर भी होगा और सारी बिरादरी को बुलवाया जायेगा।

मैंने इसके लिए हां कर दी है। बेबे की खुशी के लिए इतना ही सही। दारजी का मनाने का जिम्मा बेबे ने ले लिया है। वैसे उसे खुद भी विश्वास नहीं है कि दारजी को मना पायेगी या नहीं।

आज अखण्ड पाठ का आखिरी दिन है।

पिछले तीन दिन से पूरे घर में गहमागहमी है। पाठी बारी-बारी से आकर पाठ कर रहे हैं। बीच बीच में बेबे और दारजी की तसल्ली के लिए मैं भी पाठ करने बैठ जाता हूँ। बेशक कई साल हो गये हैं दरबारजी के सामने बैठे, लेकिन एक बार बैठते ही सब कुछ याद आने लगा है। दारजी मेरे इस रूप को देख कर हैरान भी हैं और खुश भी। बेबे ने आस-पास के सारे रिश्तेदारों और जान-पहचान वालों को न्योता भेजा है। वैसे भी अब तक सारे शहर को ही खबर हो ही चुकी है। लंगर का इंतजाम कर लिया गया है। बेबे सब त्योहारों की भरपाई एक साथ ही कर देना चाहती है। मैंने बेबे को बीस हजार रुपये थमा दिये हैं ताकि वह अपनी साध पूरी कर सके। आखिर इस सारे इंतजाम में खरचा तो हो ही रहा है। उसकी खुशी में ही मेरी खुशी है। पहले तो बेबे इन पैसों को हाथ ही लगाने के लिए तैयार न हो लेकिन जब मैंने बहुत जोर दिया कि तू ये सब मेरे लिए ही तो कर रही है तब उसने ले जाकर सारे पैसे दारजी को थमा दिये हैं। दारजी ने जब नोट गिने तो उनकी आंखें फटी रह गयी हैं। वैसे तो उन्होंने मेरे कपड़ों, सामान और उन लोगों के लिए लाये सामान से अंदाजा लगा ही लिया होगा कि मैं अब अच्छी खासी जगह पर पहुंच चुका हूँ। बेबे से दारजी ने जरा नाराज़गी भरे लहजे में कहा है - तू तूँ ई रख अपने पुत्त दी पैली कमाई। मैं की करणा इन्ने पैसैया दा।

मुझे खराब लगा है। एक तरफ तो वे मान रहे हैं कि उनके लिए ये मेरी पहली कमाई है और दूसरी तरफ उसकी तरफ ऐसी बेरुखी। बेबे बता रही थी कि आजकल दारजी का काम मंदा है। गोलू और बिल्लू मिल कर तीन चार हजार भी नहीं लाते और उसमें से भी आधे तो अपने पास ही रख लेते हैं।

अरदास हो गयी है और कड़ाह परसाद के बाद अब लोग लंगर के लिए बैठने लगे हैं। मुझे हर दूसरे मिनट किसी न किसी बुजुर्ग का पैरी पौना करने के लिए कहा जा रहा है। कोई दूर का फूफा लगता है तो कोई दूर का मामा ताया.... कोई बेबे को सुनाते हुए कह रहा है - नीं गुरनाम कोरे, हुण तेरा मुंडा दोबारा ना जा सके इहदा इंतजाम कर लै। कोई चंगी जई कुड़ी वेख के इन्नु रोकण दा पक्का इंतजाम कर लै, तो कोई जा के दारजी को चोक दे रहा है - ओये हरनामेया... इक कम्म तां तू ऐ कर कि इन्नु अज ही अज इन्नु इत्थे ई रोकण दा इंतजाम कर लै। दारजी को मैं पहली बार हंसते हुए देख रहा हूँ - फिकर ना करो बादशाहो ... दीपू नूं रोकण दा अज ही अज पक्का इंतजाम है।

मुझे समझ में नहीं आ रहा कि ये सब हो क्या रहा है। मुझे रोकने वाली बात समझ में नहीं आ रही।

मुझे लग रहा है कि इस अखण्ड पाठ के ज़रिये कोई और ही खिचड़ी पक रही है। तभी बेबे एक बुजुर्ग सरदारजी को लेकर मेरे पास आयी है और बहुत ही खुश हो कर बता रही है - सत श्री अकाल कर इन्ना नूं पुत्तर। अज दा दिन साडे लई किन्ना चंगा ऐ कि घर बैठे दीपू लई इन्ना सोणा रिश्ता आया ए..। मैं ते कैनी आं भरा जी, तुसी इक अध दिन इच दीपे नूं वी कुड़ी विखाण दा इंतजाम कर ई देओ।

- जो हुकम भैणजी, तुसी जदो कओ, असी त्यार हां। बाकी साडा दीपू वल के आ गया ए, इस्तों वड्डी खुशी साडे लई होर की हो सकदी है।

- ये मैं क्या सुन रहा हूँ। ये कुड़ी दिखाने का क्या चक्कर है भई। बेबे या दारजी इस समय सातवें आसमान पर हैं, उन्हें वहां से न तो उतारना संभव है और न उचित ही। पता तो चले, कौन हैं ये बुजुर्ग और कौन है इसकी लड़की।

.... कमाल है ... मुझसे पूछा न भाला, मेरी सगाई की तैयारियां भी कर लीं। अभी तो मुझे यहां आये चौथा दिन ही हुआ है और इन्होंने अभी से मुझे नकेल डालनी शुरू की दी। कम से कम मुझसे पूछ तो लेते कि मेरी भी क्या मर्जी है। कुछ न कुछ करना होगा.. जल्दी ही, ताकि वक्त रहते बात आगे बढ़ने से पहले ही संभाली जा सके।



pइस वक्त मेरा सारा ध्यान उस करतार सिहां की तरफ है जो अपनी लड़की मेरे पल्ले बांधने की पूरी योजना बना कर आया हुआ है। अच्छा ही है कि आज मैं नंदू के साथ बाहर निकल जाऊंगा, नहीं तो वो मुझे अपने सवालियों से कुरेद - कुरेद कर छलनी कर देगा। कैसे शातिराना अंदाज पूछ रहा था - बंबई विच तुसीं कित्थे रेंदे हो और घर बार दा की इंतजाम कित्ता होया ए तुसी...? जैसे मैं बंबई से उसकी दसवीं या नौवीं पास लड़की से रिश्ता तय करने के लिए यहां आया हूं न बात न चीत, निकाल के पांच सौ एक रुपये मेरी तरफ बढ़ा दिये - ऐ रख लओ तुसी..।

क्यों रख ले भई, कोई वजह भी तो हो पैसे रख लेने की। मेरा दिमाग बुरी तरह भन्ना रहा है। हमारी बेबे भी जरा भी नहीं बदली.. उसका काम करने का वही पुराना तरीका है। अपने आप ही सब कुछ तय किये जाती है। लेकिन इस मामले में तो दोनों की मिली भगत ही लग रही है मुझे..!

मैं दारजी को न तब समझ पाया था और न अब समझ पा रहा हूं। हालांकि जब से आया हूं उनका गुस्सा तो देखने में नहीं आया है लेकिन जैसे बहुत खुश भी नहीं नज़र आते। अपना काम करते रहते हैं या इधर उधर निकल जाते हैं और घंटों बाद वापिस आते हैं। मुझसे भी जो कुछ कहना होता है बेबे के जरिये ही कहते हैं - दारजी ए कै रये सन या दारजी पुछ रये सन....।

हिसाब लगाता हूं दारजी अब पचपन-छप्पन के तो हो ही गये होंगे। अब उमर भी तो हो गयी है। आदमी आखिर सारी ज़िंदगी अपनी जिद लेकर लड़ता झगड़ता तो नहीं रह सकता.. आदमी मेहनती हैं और पूरे घर का खर्च चला ही रहे हैं। गुड्डी की पढ़ाई है। गोलू, बिल्लू ने भी अभी ढंग से कमाना शुरू नहीं किया है। ऐसा तो नहीं हो सकता कि मेरे आने से दारजी को खुशी न हुई हो। लगता तो नहीं है, लेकिन वे जाहिर ही नहीं होने देते कि उनके मन में क्या है। जब भी उनके पास बैठता हूं, एकाध छोटी मोटी बात ही पूछते रहे हैं - बंबई में सुना है, मकान बहुत मुश्किल से मिलते हैं। खाने-वाने की भी तकलीफें होंगी। क्या इस तरफ ट्रांसफर नहीं हो सकता....। और इसी तरह की दूसरी बातें।

कुछ न कुछ तो करना ही पड़ेगा.... किसकी मदद ली जाये....कोई भी तो यहां मेरा राज़दार नहीं है। सभी कटे-कटे से रहते हैं। गोलू बिल्लू भी मुझे ऐसे देखते हैं मानो मैं उनका बड़ा भाई न होकर दुश्मन सरीखा होऊं। जैसे मैं उनका कोई हक छीनने आ गया होऊं। पहले ही दिन तो गले मिल मिल कर रोये थे और दो-चार बातें की थीं, उनमें भी अपनी परेशानियां ज्यादा बता रहे थे। उसके बाद तो मेरे साथ बैठ कर बातें करते ही नहीं हैं।

जब से मैं आया हूं, गुड्डी ही सबसे ज्यादा स्नेह बरसा रही है मुझ पर। जब भी बाहर से आती है, उसके साथ एक न एक सहेली ज़रूर ही होती है जिससे वह मुझसे मिलवाना चाहती है।

उसी को घेरता हूं।

उसने मेरा लाया नया सूट पहना हुआ है। लेकिन चप्पल उसके पास पुराने ही हैं। यही तरीका है उसे घर से बाहर ले जाने का और पूरी बात पूछने का।

उसे बुलाता हूं - गुड्डी, जरा बाजार तक चल, मुझे एक बहुत ज़रूरी चीज़ लेनी है। जरा तू पसंद करा दे।

- क्या लेना है वीर जी, वह बड़ी-बड़ी आंखों से मेरी तरफ देखती है।

- तू चल जो सही। बस दो मिनट का ही काम है।

- अभी आयी वीर जी, जरा बेबे को बता हूं आपके साथ जा रही हूं।

रास्ते में पहले तो मैं उससे इधर-उधर की बातें कर रहा हूं। उसकी पढ़ाई की, उसकी सहेलियों की और उसकी पसंद की। बेचारी बहुत भोली है। सारा दिन फिरकी की तरफ घर में घूमती रहती है। स्वभाव की बहुत ही शांत है।

आजकल मेरे लिए स्वेटर बुन रही है। अपने खुद के पैसों से ऊन लायी है..। मेरी सेवा तो इतने जतन से कर रही है

कि जैसे इन सारे बरसों की सारी कसर एक साथ पूरी करना चाहती हो। जूतों की दुकान में मैं सेल्समैन को उसके लिए कोई अच्छे से सैंडिल दिखाने के लिए कहता हूँ।

गुड्डी बिगड़ती है - ये क्या वीर जी, आप तो कह रहे थे कि आप को अपने लिए कुछ चाहिये और यहां ... मेरे पास हैं ना..

- तू चुप चाप अपने लिए जो भी पसंद करना है कर, ज्यादा बातें मत बना।

- सच्ची, वीरजी, जब से आप आये हैं, हम लोगों पर कितना खर्च कर रहे हैं ..

- ये सब सोचना तेरा काम नहीं है।

गुड्डी की शापिंग तो करा दी है लेकिन मैं तय नहीं कर पर रहा हूँ कि जो सवाल उससे पूछना चाहता हूँ, कैसे पूछूँ। हम वापिस भी चल पड़े हैं। अभी दो मिनट में ही अपनी गली में होंगे और मेरा सवाल फिर रह जायेगा।

उससे कहता हूँ - गुड्डी, बता यहां गोलगप्पे कहां अच्छे मिलते हैं, वहां तो आदमी इन चीजों के लिए तरस जाता है।

वह झांसे में आ गयी है।

आपको इतने शानदार गोलगप्पे खिलाऊंगी कि याद रखेंगे। हमारा पैट गोलगप्पे वाला है कैलाश।

- कहां है तुम्हारे कैलाश का गोलगप्पा पर्वत..?

- बस, पास ही है।

- वैसे गुड्डी बीए के बाद तेरा क्या करने का इरादा है। मैं भूमिका बांधता हूँ।

- मैं तो वीरजी, एमबीए करना चाहती हूँ। लेकिन एमबीए के लिए किसी बड़े शहर में हॉस्टल में रहना, कहां मानेंगे मेरी बात ये लोग? आपको तो पता ही है दारजी बीए के लिए भी कितनी मुश्किल से राजी हुए थे।

- चल तेरी ये जिम्मेवारी मेरी। तू बीए में अच्छे मार्क्स ले आ तो एमबीए तुझे बंबई से ही करा दूंगा। मेरा भी दिल लगा रहेगा। मेरा खाना भी बना दिया करना।

- सच वीर जी, आप कितने अच्छे हैं, आज आप कितनी अच्छी अच्छी खबरें सुना रहे हैं। चलिये, गोलगप्पे मेरी तरफ से। लेकिन मैं आपका खाना क्यों बनाने लगी। आयेगी ना हमारी भाभी....।

अब सही मौका है .. मैं पूछ ही लेता हूँ - अच्छा गुड्डी, बताना, ये जो करतार सिंह वगैरह आये थे सवेरे, क्या चक्कर है इनका, मैं तो परेशान हो रहा हूँ।

- कोई चक्कर नहीं है वीर जी, हमारे लिए भाभी लाने का इंतजाम हो रहा है।

- लेकिन गुड्डी, ऐसे कैसे हो सकता है?

- तू खुद सोच, मैं अपनी पढ़ाई-लिखाई को थोड़ी देर के लिए एक तरफ रख भी दूँ अपनी अफसरी को भी भूल जाऊँ, लेकिन ये तो देखना ही चाहिये ना कि कौन लोग हैं, क्या करते हैं, लड़की क्या करती है, मेरे साथ देस परदेस में उसकी निभ पायेगी या नहीं, कई बातें सोचनी पड़ती हैं, मैं अकेले रहते रहते थक गया था गुड्डी, इसलिए घर वापिस आ गया हूँ लेकिन इतना वक्त तो लेना ही चाहिये कि पहले मेरे घर वाले ही मुझे अच्छी तरह से समझ लें।

- आपकी बात ठीक है वीर जी, लेकिन बेबे और दारजी का कुछ और ही सोचना है। अभी परसों की बात है, आप कहीं बाहर गये हुए थे। मैं दारजी के लिए रोटी बना रही थी। बेबे भी वहीं पास ही बैठी थी। तभी आपकी बात चल पड़ी। वैसे तो जब से आप आये हैं, घर में आपके अलावा और कोई बात होती ही नहीं, तो दारजी बेबे से कह रहे थे - कुछ ऐसा इंतजाम किया जाये कि अब से दीपू का घर में आना जाना छूटे नहीं। कहीं ऐसा न हो कि आज आया है फिर अरसे तक आये ही नहीं।

- तो ?

- बेबे बोली फिर - इसका तो एक ही इलाज है कि कोई चंगी सी कुड़ी वेख के दीपे की सगाई कर देते हैं। शादी बेशक साल छः महीने बाद भी कर सकते हैं, लेकिन यहीं सगाई हो जाने से उसके घर से बंधे रहने का एक सिलसिला बन जायेगा।

- तो दारजी ने क्या कहा..?

- दारजी ने कहा - लेकिन इतनी जल्दी लड़की मिलेगी कहां से..?

- तो बेबे बोली - उसकी चिंता मुझ पे छोड़ दो। मेरे दीपू के लिए अपनी ही बिरादरी में एक से एक शानदार रिश्ते मिल जायेंगे। जब से दीपू आया है, अच्छे अच्छे घरों के कई रिश्ते आ चुके हैं। मैं ही चुप थी कि बच्चा कई सालों बाद आया है, कुछ दिन आराम कर ले। कई लोग तो हाथों हाथ दीपू को सर आंखों पर बिठाने वाले खड़े हैं।

- अच्छा तो ये बात है। सारी प्लैनिंग मुझे घेरने के लिए बनायी जा रही है। मेरी आवाज में तीखापन आ गया है।

- नहीं वीरजी यह बात नहीं है .. लेकिन .. गुड्डी घबरा गयी है। उसे अंदाजा नहीं था कि उसकी बतायी बात से मामला इस तरह से बिगड़ जायेगा।

- अच्छा एक बात बता। उसका मूड ठीक करने करने के लिहाज से मैं पूछता हूँ - ये करतार जी करते क्या हैं और इनकी कुड़ी क्या करती है। जानती है तू उसे?

- बहुत अच्छी तरह से तो नहीं जानती, ये लोग धर्म पुर में रहते हैं। शायद दसवीं करके सिलाई कढ़ाई का कोर्स किया था उसने।

- तू मिली है उससे कभी?

- पक्के तौर तो नहीं कह सकती कि वही लड़की है।

- खैर जाने दे, ये बता ये सरदारजी क्या करते हैं..?

- उनकी पलटन बाजार में बजाजी की दुकान है..।

- कहीं ये खालसा क्लॉथ शाप वाले करतार तो नहीं? मुझे याद आ गया था कि इन्हें मैंने बचपन में किस दुकान पर बैठे देखा था। मैं तब से परेशान हो रहा था कि इस सरदार को कहीं देखा है लेकिन याद नहीं कर पा रहा था।

गुड्डी के याद दिलाने से कन्फर्म हो गया है।

मैं गुड्डी का कंधा थपथपाता हूँ ।

- लेकिन वीरजी, आपको एक प्रॉमिस करना पड़ेगा, आप किसी को बतायेंगे नहीं कि मैंने आपको ये सारी बातें बतायी हैं।

- गाड प्रॉमिस, धरम दी सौं बस। मुझे बचपन का दोस्तों के बीच हर बात पर कसम खाना याद आ गया है - वैसे एक बात बता, तू चाहती है कि मेरा रिश्ता इस करतार सिंह की सिलाई-कढ़ाई करने और तकिये के गिलाफ काढ़ने वाली अनजान लड़की से हो जाये। देख, ईमानदारी से बतायेगी तो आइसक्रीम भी खिलाऊंगा।

हंसी है गुड्डी - रिश्त देना तो कोई आपसे सीखे वीरजी, जरा सी बात का पता लगाने के लिए आप इतनी सारी चीजें तो पहले ही दिलवा चुके है। मेरी बात पूछो तो मुझे ये रिश्ता कत्तई पसंद नहीं है। हालांकि मैंने अपनी होने वाली भाभी को नहीं देखा है, लेकिन ये मैच जमेगा नहीं। पता नहीं क्यों मेरा मन नहीं मान रहा है लेकिन आप तो जानते ही हैं, दारजी और बेबे को।

- ओये पगलिये, अभी तुझे तेरी होने वाली भाभी से मिलवाता हूँ।

उसके मन का बोझ दूर हो गया है लेकिन मेरी चिंता बढ़ गयी है। अब इस मोर्चे पर भी अपनी सारी शक्ति लगा देनी पड़ेगी। पता नहीं दारजी और बेबे को समझाने के लिए क्या करना पड़ेगा।

हम घर की तरफ लौट रहे हैं तभी गुड्डी पूछती है - वीरजी, कभी हमें भी बंबई बुलायेंगे ना.. मेरा बड़ा मन होता है

एक्टरों और हीरोइनों को नजदीक से देखने का। सुना है वहां ये लोग वैसे ही घूमते रहते हैं..और अपनी सारी शॉपिंग खुद ही करते हैं। वह लगातार बोले चली जा रही है - आपने कभी किसी ऐक्धटर को देखा है।

मैं झल्ला कर पूछता हूं - पूरे हो गये तेरे सवाल या कोई बाकी है?

- वीरजी, आप तो बुरा मान गये। कोई बंबई आये और अपनी पसंद के हीरो से न मिले तो इत्ती दूर जाने का मतलब ही क्या....?

- तो सुन ले मेरी भी बात .. तुझे अगर जो मेरे पास आना है तो

तू अभी चली चल मेरे साथ। मैं भी तेरे साथ ही बंबई देख लूंगा। और जहां तक तेरे एक्टरों का सवाल है, वो मेरे बस का नहीं। मुझे वहां अपनी तो खबर रहती नहीं, उनकी खोज खबर कहां से रखूं...।

लौट रहा हूं वापिस। एक बार फिर घर छूट रहा है..। अगर मुझे ज़रा-सा भी आइडिया होता कि मेरे यहां आने के पांच-सात दिन के भीतर ही ऐसे हालात पैदा कर दिये जायेंगे कि मैं न इधर का रहूं और न उधर का तो मैं आता ही नहीं।

यहां तो अजीब तमाशा खड़ा कर दिया है दारजी ने। कम से कम इतना तो देख लेते कि मैं इतने बरसों के बाद घर वापिस आया हूं। मेरी भी कुछ आधी-अधूरी इच्छायें रही होंगी, मैं घर नाम की जगह से जुड़ाव महसूस करना चाहता होऊंगा। चौदह बरसों में आदमी की सोच में ज़मीन-आसमान का फ़र्क आ जाता है और फिर मैं कहीं भागा तो नहीं जा रहा था। दारजी तो बस, अड़ गये - तुझे शादी तो यहीं करतारे की लड़की से ही करनी पड़ेगी। मैं कौल दे चुका हूं। दारजी का कौल सब कुछ और मेरी ज़िंदगी कुछ भी नहीं। अजीब धोंस है। उन्हें पता है, मैं उनके आगे कुछ भी नहीं कह पाऊंगा तो मेरी इसी शराफ़त का फायदा उठाते हुए मुझे हुक्म सुना दिया - शाम को कहीं नहीं जाना, हम करतारे के घर लड़की देखने जा रहे हैं। मैंने जब बेबे के आगे विरोध करना चाहा, तो दारजी बीच में आ गये - बेबे को बीच में लाने की ज़रूरत नहीं है बरखुरदार, यह मर्दों की बात है। हम सब कुछ तय कर चुके हैं। सिर्फ़ तुझे लड़की दिखानी है ताकि तू ये न कहे, देखने-भालने का मौका ही नहीं दिया। वैसे उनका घर-बार हमारा देखा भाला है..। पिछली तीन पीढ़ियों से एक-दूसरे को जानते हैं। संतोष को भी तेरी बेबे ने देखा हुआ है।

यह हुक्मनामा सुना कर दारजी तो साथ जाने वाले बाकी रिश्तेदारों को खबर करने चल दिये और मैं भीतर-बाहर हो रहा हूं। बेबे मेरी हालत देख रही है। जानती भी है कि मैं इस तरह से तो शादी नहीं ही कर पाऊंगा। परसों रात भी मैंने बेबे को समझाने की कोशिश की थी कि अभी मैं इस तरह की दिमागी हालत में नहीं हूं कि शादी के बारे में सोच सकूं और फिर बंबई में मेरे पास अपने ही रहने का ठिकाना नहीं है, आने वाली को कहां ठहराऊंगा, तो बेबे अपने रोने सुनाने लगी - तू इन्ने चिरां बाद आया है। सान्नु इन्नी साध तां पूरी कर लैणे दे कि अपणे होंदेयां तेरी वोटी नूं वेख लइये।

मैंने समझाया - वेख बेबे, तेनूं नूं दा इन्ना ई शौक है तां बिल्लू ते गोलू दोंवां दा वया कर दे। तेरियां दो दो नूंआ तेरी सेवा करन गी।

- पागल हो गया हैं वे पुत्तर, वड़डा भरा बैठा होवे ते छोटियां दे बारे विच सोचेया वी नीं जा सकदा पुत्तर। तू कुड़ी तां वेख लै। अस्सी सगन लै लवां गे। शादी बाद विच होंदी रएगी। पर तूं हां तां कर दे। जिद नीं करींदी। मन जा पुत्त।

मैं नहीं समझा पा रहा बेबे को। जब बेबे के आगे मेरी नहीं चलती तो दारजी के आगे कैसे चलेगी।

ठंडे दिमाग से कुछ सोचना चाहता हूं।

मैं बेबे से कहता हूं - ज़रा घंटाघर तक जा रहा हूं, कुछ काम है, अभी आ जाऊंगा, तो बेबे आवाज लगाती है - छेत्ती आ जाई पुत्तर।

में निकलने को हूँ कि गुड्डी की आवाज आती है - वीरजी, मैं भी कॉलेज जा रही हूँ। पलटन बाज़ार तक मैं भी आपके साथ चलती हूँ।

- चल तू भी। कहता हूँ उससे।

- बहुत परेशान हैं, वीरजी ?

- कमाल है, यहां मेरी जान पर बन रही है और तू पूछ रही है परेशान हूँ। तू ही बता, क्या सही है दारजी और बेबे का ये फैसला....।

- वीर जी, बात सिर्फ आपकी जान की नहीं है, किसी और को भी बली का बकरा बनाया जा रहा है। उसकी तो किसी को परवाह ही नहीं है।

- क्या मतलब? और किस को बलि का बकरा बनाया जा रहा है?

वह रुआंसी हो गयी है।

- तू बोल तो सही, मामला क्या है ?

- यहीं राह चलते बताऊं क्या ?

- अच्छा, यह बात है, बोल कहां चलना है। लग रहा है मामला कुछ ज्यादा ही सीरियस है।

- इस शहर की यही तो मुसीबत है कि कहीं बैठने की ढंग की जगह भी नहीं है।

- चल, नंदू के रेस्तरां में चलते हैं। वहां फैमिली केबिन है। वहां कोई डिस्टर्ब भी नहीं करेगा।

नंदू कहीं काम से गया हुआ है, लेकिन उसका स्टाफ मुझे पहचानने लगा है..। सब नमस्कार करते हैं। मैं बताता हूँ

- ये मेरी छोटी बहन है। हम बात कर रहे हैं। कोई डिस्टर्ब न करे!

- हां अब बता, क्या मामला है, और तेरी ये आंखें क्यों भरी हुई हैं, पहले आंसू पोंछ ले, नहीं तो चाय नमकीन लगेगी।

- यहां किसी की जान जा रही है और आप को मज़ाक सूझ रहा है वीर जी।

- तू बात भी बतायेगी या पहेलियां ही बुझाती रहेगी, बोल क्या बात है...।

- कल रात जब आप नंदू वीरजी के घर गये हुए थे तो बेबे और दारजी बात कर रहे थे। उन्होंने समझा, मैं सो गयी हूँ, लेकिन मुझे नींद नहीं आ रही थी। तभी दारजी ने बेबे को बताया - करतारे ने इशारा किया है कि वो सगाई पर पचास हजार नकद, सारे रिश्तेदारों को सगन और हमें गरम कपड़े वगैरह देगा और शादी के मौके पर दीपू के लिए मारुति कार और चार लाख नकद देगा।

- अच्छा तो यह बात है।

- टोको नहीं बीच में। पूरी बात सुनो।

- सॉरी, तो बेबे ने क्या कहा?

- बेबे ने कहा कि हमारी किस्मत चंगी है जो दीपू इन्ने चंगे मौके पर आ गया है। हमारे तो भाग खुल गये।

- तो दारजी कहने लगे - दीपू की शादी के लिए तो हमें कुछ खास करना नहीं पड़ेगा। उसके पास बहुत पैसा है।

आखिर अपनी शादी पर खर्च नहीं करेगा तो कब करेगा। ये पचास हजार ऊपर एक कमरा बनाने के काम आ जायेंगे। बाकी करतारा शादी के वक्त तो जो पैसे देगा, वो पैसे गुड्डी के काम आ जायेंगे। साल छः महीने में उसके भी हाथ पीले कर देने हैं। उसके लिए भी एक दो लड़के हैं मेरी निगाह में..।

यह कहते हुए गुड्डी रोने लगी है - मेरी पढ़ाई का क्या होगा वीरजी, मुझे बचा लो वीर जी, मैं बहुत पढ़ना चाहती हूँ। आप तो फिर भी अपनी बात मनवा लेंगे। मेरी तो घर में कोई सुनता ही नहीं।

- मुझे नहीं मालूम था गुड्डी, मामला इतना टेढ़ा है। कुछ न कुछ तो करना ही होगा।

- जो कुछ भी करना है, आज ही करना होगा, कहीं शाम को सब लोग पहुंच गये लड़की देखने तो बात लौटानी मुश्किल हो जायेगी।

- क्या करें फिर..?

- आप क्या सोचते हैं ?

- देख गुड्डी, तेरी पढ़ाई तो पूरी होनी ही चाहिये। तेरी पढ़ाई और शादी की जिम्मेवारी मैं लेता हूँ। तुझे हर महीने तेरी ज़रूरत के पैसे भेज दिया करूंगा। तेरी शादी का सारा खर्चा मैं उठाऊंगा। तू बेफिकर हो कर कॉलेज जा। पढ़ाई में मन लगा। बाकी मैं देखता हूँ। दारजी और बेबे को समझाता हूँ।

मैं जब से पर्स निकालता हूँ - ले फिलहाल हजार रुपये रख। बंबई से और भेज दूंगा, और ये रख मेरा कार्ड। काम आयेगा..।

गुड्डी फिर रोने लगी है - क्या मतलब वीरजी, आप.... आप.. ये सब क्या कह रहे हैं और ये पैसे क्यों दे रहे हैं। आपके दिये कितने सारे पैसे मेरे पास हैं।

- देख, अगर दारजी और बेबे न माने तो मेरे पास यही उपाय बचता है कि मैं शाम होने से पहले ही बंबई लौट जाऊं। इस सगाई को रोकने का और कोई तरीका नहीं है। जिस तरह मेरे आने के दूसरे दिन से ही ये षडयंत्र शुरू हो गये हैं, मैं इनसे नहीं लड़ सकता। मैं यहां अपने घर वापिस आया था कि अकेले रहते-रहते थक गया था और यहां तो ये और ही मंसूबे बांध रहे हैं।

गुड्डी मेरी तरफ देखे जा रही है।

- देख गुड्डी, मेरे आने से एक ही अच्छा काम हुआ है कि तू मुझे मिल गयी है। बाकी सब कुछ वैसा ही है जैसा मैं छोड़ गया था। न दारजी बदले हैं और न बेबे। देख, तू घबराना नहीं। मैं खुद अपने आंसू रोक नहीं पा रहा हूँ लेकिन उसे चुप करा रहा हूँ - हो सकता है शाम को तू जब कॉलेज से वापिस आये तो मैं मिलूँ ही नहीं तुझे।

गुड्डी रोये जा रही है। हिचकियां ले ले कर। उसके लिए और पानी मंगाता हूँ, फिर समझाता हूँ - तू इस तरह से कमज़ोर पड़ जायेगी तो अपनी लड़ाई किस तरह से लड़ेगी पगली, चल मुंह पोंछ ले और दुआ कर कि बेबे और दारजी को अक्कल आये और वे हमारी सौदेबाजी बंद कर दें।

- आप सचमुच चले जायेंगे वीरजी ...?

- यहां रहा तो मैं न ख़दा को बचा पाऊंगा न तुझे। तू ही बता क्या करूं ....?

- आपके आने से मैं कितना अच्छा महसूस कर रही थी। आपने मुझे ज़िंदगी के नये मानी समझाये। अब ये नरक फिर मुझे अकेले झटालना पड़ेगा। ऐनी वे, गुड्डी ने अचानक आंसू पोंछ लिये हैं और अपना हाथ आगे बढ़ा दिया है - आल द बेस्ट वीरजी, आप कामयाब हों। गुड लक...। उसने बात अधूरी ही छोड़ दी है और वह तेजी से केबिन से निकल कर चली गयी है। मैं केबिन के दरवाजे से उसे जाता देख रहा हूँ .. एक बहादुर लड़की की चाल से वह चली जा रही है। उसे जाता देख रहा हूँ, और बुदबुदाता हूँ - बेस्ट विशेषज्ञ की तो तुझे ज़रूरत थी पगली, तू मुझे दे गयी .....

मुझे नहीं पता, अब गुड्डी से फिर कब मुलाकात होगी!! पता नहीं होगी भी या नहीं उससे मुलाकात !!

घर पहुंचा तो दारजी वापिस आ चुके हैं। अब तो उन्हें देखते ही मुझे तकलीफ़ होने लगी है। कोई भी मां-बाप अपने बच्चे के इतने दुश्मन कैसे हो जाते हैं कि अपने स्वार्थ के लिए उनकी पूरी ज़िंदगी उजाड़ कर रख देते हैं। इनकी ज़रा-सी जिद के कारण मैं कब से बेघर-बार सा भटक रहा हूँ और जब मैं अपना मन मार कर किसी तरह घर वापिस लौटा तो फिर ऐसे हालात पैदा कर रहे हैं कि पता नहीं अगले आधे घंटे बाद फिर से ये घर मेरा रहता है या

नहीं, कहा नहीं जा सकता।

इनको अच्छी तरह से पता है कि गुड्डी पढ़ना चाहती है, लेकिन उस बेचारी के गले में अभी से घंटी बांधने की तैयारी चल रही है और इंतज़ाम भी क्या बढ़िया सोचा है कि एक बेटे की शादी में दहेज लो और अपनी लड़की की शादी में वही दहेज देकर दूसरे का घर भर दो। मुझे कुछ नहीं सूझ रहा कि चीज़ें किस तरह से मोड़ लेंगी और क्या बनेगा इस घर का।

मैं यही सोचता अंदर-बाहर हो रहा हूँ कि दारजी टोक देते हैं

- क्या बात है बरखुरदार, बहुत परेशान नज़र आ रहे हो? मामला क्या है ?

- मामला तो आप ही का बनाया बिगाड़ा हुआ है दारजी। कम से कम मुझसे पूछ तो लिया होता कि मैं क्या चाहता हूँ। मुझे अभी आये चार दिन भी नहीं हुए और... मेरी नाराज़गी आखिर हौले-हौले बाहर आ ही गयी है।

- देख भई दीपेया, हम जो कुछ भी कर रहे हैं तेरे और इस घर के भले के लिए ही कर रहे हैं। हम तो चाहते हैं कि तेरा घर-बार बस जाये तो हम बाकी बच्चों की भी फिकर करें। अब इतना अच्छा रिश्ता.....!

- दारजी, ये रिश्ता तो न हुआ। ये तो सौदेबाजी हुई। मैं किसी तरह हिम्मत जुटा कर कहता हूँ।

- कैसी सौदे बाजी ओये....?

- क्या आप इस रिश्ते में नकद पैसे नहीं ले रहे ?

- तो क्या हुआ, दारजी ने गरम होना शुरू कर दिया है।

- तुझे पता नहीं है, आजकल पढ़ा लिखा लड़का किसी को यूँ ही नहीं मिल जाता। समझे.. और तेरे जैसा लड़का तो उन्हें दस लाख में भी न मिलता। हम तो शराफत से उतना ही ले रहे हैं जितना वे खुशी से अपनी लड़की को दे रहे हैं। हमने कोई डिमांड तो नहीं रखी है।

- ये मेरी सौदेबाजी नहीं है तो क्या है दारजी...?

- ओये चुप कर बड़ा आया सौदेबाजी वाला ... दारजी अब अपने पुराने रूप में आने लगे हैं और मेरे सिर पर आ खड़े हुए हैं - तू एक बात बता। कल को गुड्डी के भी हाथ पीले करने हैं कि नहीं। तब कौन से धरम खाते से पैसे निकाल कर लड़के वालों के मुंह पर मारूंगा। बता जरा...?

- गुड्डी की जिम्मेवारी मेरी। अभी वो पढ़ना चाहती है।

- तो उसने आते ही तेरे कान भर दिये हैं। कोई ज़रूरत नहीं है उसे आगे पढ़ाने की। ठीक है संभाल लेना उसकी जिम्मेवारी। आखिर तेरी छोटी बहन है। तेरा फ़रज बनता है। बाकी यहां तो हम कौल दे चुके हैं। शादी बेशक साल दो साल बाद करें। मुझे तो सबका देखना है। उधर गोलू बिल्लू एकदम तैयार बैठे हैं और उन्होंने अपनी तरफ से पहले ही अल्टीमेटम दे दिया है।

उन्होंने अपना आखिरी फैसला सुना दिया है - तू शाम को घर पर ही रहना। इधर-उधर मत हो जाना। सारी रिश्तेदारी आ रही है। चाहे तो नंदू को साथ ले लेना।

इसका मतलब ये लोग अपनी तरफ से मेरे और कुछ हद तक गुड्डी के भाग्य का फैसला कर ही चुके हैं। मैं भी देखता हूँ, कैसे सगाई करते हैं संतोष कौर से मेरी...।

उन्हें नहीं पता कि जो बच्चा एक बार घर छोड़ कर जा सकता है, दोबारा भी जा सकता है। मैं अपने साथ दो-चार जोड़ी कपड़े ही लेकर आया था। यहां छूट भी जायें तो भी कोई बात नहीं। गोलू बिल्लू पहन लेंगे। बैग भी उनके काम आ जायेगा। रास्ते में रेडीमेड कपड़े और दूसरा सामान खरीद लूंगा।

पहली बार खाली पेट घर छूटा था, अब बेबे से कहता हूँ - बेबे, जरा छेती नाल दो फुलके तां सेक दे। बजार जा के इक अध नवां जोड़ा तां लै आवां। बेबे को तसल्ली हुई है कि शायद मामला सुलट गया है। मैं बेबे के पास रसोई में ही बैठ कर रोटी खाता हूँ। भूख न होने पर भी दो-एक रोटी ज्यादा ही खा लेता हूँ। पता नहीं फिर कब बेबे के हाथ की रोटी नसीब हो। उठते समय बेबे के घुटने को छूता हूँ। पता नहीं, फिर कब बेबे का आशीर्वाद मिले। पूरे घर का एक चक्कर लगाता हूँ। रंगीन टीवी तो रह ही गया। नंदू के घर की पार्टी भी रह गयी। हालांकि इस बीच कई यार दोस्त आ कर मिल गये हैं लेनि सबसे एक साथ मिलना हो जाता।

घर से बाहर निकलते समय मैं एक बार फिर बेबे को देखता हूँ। वह अब दारजी के लिए फुलके सेक रही है। दारजी अपनी खटपट में लगे हैं। दोनों को मन ही मन प्रणाम करता हूँ - माफ़ कर देना मुझे बेबे और दारजी, मैं आपकी शर्तों पर अपनी जिंदगी का यह सौदा नहीं कर सकता। अपने लिए बेशक कर भी लेता, लेकिन आपने इसके साथ गुड्डी की किस्मत को भी नत्थी कर दिया है। मैं इस दोहरे पाप का भागी नहीं बन सकता मेरी बेबे। मैं एक बार फिर से बिना बताये घर छोड़ कर जा रहा हूँ। आगे मेरी किस्मत।

और मैं एक बार फिर खाली हाथ घर छोड़ कर चल दिया हूँ। इस बार मेरी आंखों में आंसू हैं तो सिर्फ गुड्डी के लिए... वो अपनी लड़ाई नहीं लड़ पायेगी। मैं भी तो अपनी लड़ाई का मैदान छोड़ कर बिना लड़े ही हार मान कर जा रहा हूँ। एक ही मैदान से दूसरी बार पीठ दिखा कर भाग रहा हूँ ।

>>आगे>>

[शीर्ष पर जाएँ](#)



देस बिराना  
सूरज प्रकाश

[अनुक्रम](#)

अध्याय 2

[पीछे](#)  
[आगे](#)

तो ... अब ... हो गया घर भी..। जितना रीता गया था, उससे कहीं ज्यादा खालीपन लिये लौटा हूं। तौबा करता हूं ऐसे रिश्तों पर। कितना अच्छा हुआ, होश संभालने से पहले ही घर से बेघर हो गया था। अगर तब घर न छूटा होता तो शायद कभी न छूटता.. उम्र के इस दौर में आ कर तो कभी भी नहीं। बस, यही तसल्ली है कि सबसे मिल लिया, बचपन की खट्टी-मीठी यादें ताज़ा कर लीं और घर के मोह से मुक्त भी हो गया। जिसके लिए जितना बन पड़ा, थोड़ा-बहुत कर भी लिया। बेबे और गुड्डी के ज़रूर अफ़सोस हो रहा है कि उन्हें इन तकलीफ़ों से निकालने का मेरे पास कोई उपाय नहीं है।

गुड्डी बेचारी पढ़ना चाहती है लेकिन लगता नहीं, उसे दारजी पढ़ने देंगे। चाहे एमबीए करे या कोई और कोर्स, उसे देहरादून तो छोड़ना ही पड़ेगा। उसके लिए दारजी परमिशन देने से रहे। बस, किसी तरह वह बीए पूरा कर ले तो उसके लिए यहीं कुछ करने की सोचूंगा। एक बार मेरे पास आ जाये तो बाकी सब संभाला जा सकता है। फिलहाल तो सबसे बड़ा काम यही होगा कि उसे दारजी किसी तरह बीए करने तक डिस्टर्ब न करें और वह ठीक - ठाक नम्बर ला सके।

आते ही फिर से उन्हीं चक्करों में खुद को उलझा लिया है। पता नहीं अब कब तक इसी तरह की ज़िंदगी को ठेलते जाना होगा। बिना किसी खास मकसद के....।

आज गुड्डी का पार्सल मिला है। उसने बहुत ही खूबसूरत स्वेटर बुन कर भेजा है। सफेद रंग का। एकदम नन्हें-से खरगोश की तरह नरम। इसमें गुड्डी की मेहनत और स्नेह की असीम गरमाहट फंदे-फंदे में बुनी हुई है। साथ में उसका लम्बा खत है।

लिखा है उसने

- वीरजी,

सत श्री अकाल

उस दिन आपके अचानक चले जाने के बाद घर में बहुत हंगामा मचा। वैसे मैं जानती थी कि मेरे वापिस आने तक आप जा चुके होंगे। और कुछ हो भी नहीं सकता था। आप बाज़ार से शाम तक भी वापिस नहीं आये तो चारों तरफ आपकी खोज-बीन शुरू हुई। वहां जाने वाले सभी लोग आ चुके थे। ले जाने के लिए मिठाई वगैरह खरीदी जा चुकी थी। लेकिन आप जब कहीं नज़र नहीं आये तो बेबे को लगा - एक बार फिर वही इतिहास दोहराया जा चुका है। मैं चार बजे कॉलेज से आ गयी थी तब तक दारजी का गुस्सा सातवें आसमान पर पहुंच चुका था। उन्हें मुझ पर शक हुआ कि जरूर मुझे तो पता ही होगा कि वीरजी बिना बताये कहां चले गये हैं। तब गुस्से में आ कर दारजी ने मुझे बालों से पकड़ कर खींचा और गालियां दीं। मैं जानती थी, ऐसा ही होगा। सबकी निगाहों में मैं ही आपकी सबसे सगी बनी फिर रही थी। लेकिन मार खा कर भी मैं यही कहती रही कि मुझे नहीं मालूम। बेबे ने भी बहुत हाय-तौबा मचाई और बिल्लू और गोलू ने भी। आखिर परेशान हो कर वहां झूठा संदेशा भिजवा दिया गया कि आपको अचानक ऑफिस से तुरंत बंबई पहुंचने के लिए बुलावा आ गया था, इसलिए हम लोग नहीं आ पा रहे हैं। बाद की कोई तारीख देख कर फिर बतायेंगे।

बाद में दारजी तो कई दिन तक बिफरे शेर की तरह आंगन खूंदते रहे और बात बे बात पर आपको गालियां बकते रहे।

करतार सिंह वाला मामला फिलहाल ठप्प पड़ गया है लेकिन जिस को भी पता चलता है कि इस बार भी आप दारजी की जिद के कारण घर छोड़ कर गये हैं, वही दारजी को लानतें भेज रहा है कि अपनी लालच के कारण तूने हीरे जैसा बेटा दूसरी बार गंवा दिया है।

बाकी आप मुझमें आत्म-विश्वास का जो बीज बो गये हैं, उससे मैं, जहां तक हो सका, अपनी लड़ाई अपने अकेले के बलबूते पर लड़ती रहूंगी। आप ही मेरे आदर्श हैं। काश, मैं भी आपकी तरह अपने फैसले खुद ले सकती। अपनी खास सहेली निशा का पता दे रही हूं। पत्र उसी के पते पर भेजें। मेरी जरा भी चिंता न करें और अपना ख्याल रखें।

सादर,

आपकी बहन,

गुड्डी।

पगली है गुड्डी भी!! ऐसे कमज़ोर भाई को अपना आदर्श बना रही है जो किसी भी मुश्किल स्थिति का सामना नहीं कर सकता और दो बार पलायन करके घर से भाग चुका है।

उसे लम्बा खत लिखता हूं।

- गुड्डी,

प्यार,

तेरा पत्र मिला। समाचार भी। अब तू भी मानेगी कि इस तरह से चले आने का मेरा फैसला गलत नहीं रहा। सच बताऊं गुड्डी, मुझे भी दोबारा चोरों की तरह घर से भागते वक्त बहुत खराब लग रहा था, लेकिन मैं क्या करता।

जब मैंने पहली बार छोड़ा था तो चौदह साल का था। समझ भी नहीं थी कि क्यों भाग रहा हूँ और भाग कर कहाँ जाऊँगा, लेकिन जब दारजी ने घर से धक्के दे कर बाहर कर ही दिया तो मेरे सामने कोई उपाय नहीं था। अगर दारजी या बेबे ने उस वक्त मेरे कान पकड़ कर घर के अंदर वापिस बुला लिया होता, जबरदस्ती एक-आध रोटी खिला दी होती तो शायद मैं भागा ही न होता, बल्कि वहीं बना रहता, बेशक मेरी ज़िंदगी ने जो भी रुख लिया होता, बल्कि इस बार भी उन्होंने मुझसे कहा होता कि देख दीपे, हम हो गये हैं अब बुढ़े और हमें चाहिये घर के लिए एक देखी-भाली शरीफ बहू तो, सच मान गुड्डी, मैं वहीं खड़े-खड़े उनकी पसंद की लड़की से शादी भी कर लेता और अपनी बीवी को उनकी सेवा के लिए भी छोड़ आता, लेकिन दोनों बार सारी चीजें शुरू से ही मेरे खिलाफ कर दी गयी थीं। इस बार भी मुझे बिलकुल सोचने का मौका ही नहीं मिला और एक बार फिर मैं घर के बाहर था। एक तरह से पहली बार का भागना भी मेरे लिए अच्छा ही रहा कि दूसरी बार भी मैं उनके अन्याय को मानने के बजाये चुपचाप चला आया। तुम इसे मेरा पलायन भी कह सकती हो, लेकिन तुम्हीं बताओ, अगर मैं न भागता तो क्या करता। वहाँ तो मुझे और मेरे साथ तुम्हें भी फंदे में कसने की पूरी तैयारी हो चुकी थी। मेरे भाग आने से कम से कम तुम्हारे सिर पर से तो फिलहाल मुसीबत टल ही गयी है। अब बाकी लड़ाई तुम्हें अकेले ही लड़नी होगी। लड़ सकोगी क्या?

यहाँ आने के बाद एक बार फिर वही ज़िंदगी है मेरे सामने। बस एक ही फ़र्क है कि यहाँ से जिस ऊब से भाग कर गया था, घर के जिस मोह से बंधा भागा था, उससे पूरी तरह मुक्त हो गया हूँ। बेशक मेरी ऊब और बढ़ गयी है। पहले तो घर को लेकर सिर्फ उलझे हुए खयाल थे, बिम्ब थे और रिश्तों को लेकर भी कोई मुकम्मल तस्वीर नहीं बनती थी, लेकिन घर से आने के बाद घर के बारे में मेरी सारी इमेज बुरी तरह से तहस-नहस हो गयी हैं। बार-बार अफ़सोस हो रहा है कि मैं वहाँ गया ही क्यों था। न गया होता तो बेहतर था, लेकिन फिर खयाल आता है कि इस पूरी यात्रा की एक मात्र यही उपलब्धि यही है कि सबसे मिल लिया, तुझे देख लिया और तुझे एक दिशा दे सका, तेरे लिए कुछ कर पाया और घर के मोह से हमेशा के लिए मुक्त हो गया। अब कम से कम रोज़ रोज़ घर के लिए तड़पा नहीं करूँगा। बेशक तेरी और बेबे की चिंता लगी ही रहेगी।

यहाँ आने के बाद दिनचर्या में कोई खास फ़र्क नहीं पड़ा है। सिर्फ यही हुआ है कि अंधेरी में जिस गेस्ट हाउस में रह रहा था, वह छोड़ दिया है और इस बार बांद्रा वेस्ट में एक नये घर में पेइंग गेस्ट बन गया हूँ। पता दे रहा हूँ। ऑफिस से आते समय कोशिश यही रहती है कि खाना खा कर एक ही बार कमरे में आऊँ। तुझे हैरानी होगी जान कर कि बंबई में पेइंग गेस्ट को सुबह सिर्फ एक कप चाय ही दी जाती है। बाकी इंतज़ाम बाहर ही करना पड़ता है। वैसे कई जगह खाने के साथ भी रहने की जगह मिल जाती है।

अगर छुट्टी का दिन हो या कमरे पर ही होऊँ तो मैं सिर्फ खाना खाने ही बाहर निकलता हूँ। अपने कमरे में बंद पड़ा रहता हूँ। शायद यही वजह है कि मैं कभी भी बोर नहीं होता।

कल एक अच्छी बात हुई कि सामने वाले घर में रहने वाले मिस्टर और मिसेज भसीन से हैलो हुई। सीढ़ियाँ चढ़ते समय वे मेरे साथ-साथ ही आ रहे थे। उन्होंने ही पहले हैलो की और पूछा - क्या नया आया हूँ सामने वाले घर में। उन्होंने मेरा नाम वगैरह पूछा और कभी भी घर आने का न्यौता दिया।

कभी जाऊँगा। आम तौर पर मैं किसी के घर में भी जाने में बहुत संकोच महसूस करता हूँ।

दारजी, बेबे और गोलू बिल्लू ठीक होंगे। तेरी सहेली निशा ठीक होगी और तेरे साथ खूब गोलगप्पे उड़ा रही होगी। दोबारा जा भी नहीं पाये तेरे कैलाश गोलगप्पा पर्वत में। तेरे लिए हज़ार रुपये का ड्राफ्ट भेज रहा हूँ। खूब शॉपिंग करना।

जवाब देना।

तेरा ही

वीर...

आज दीपावली का त्योहार है। चारों तरफ त्योहार की गहमा-गहमी है। लेकिन मेरे पारसी मकान मालिक इस हंगामे से पूरी तरह बाहर हैं। हर छुट्टी के दिन की तरह सारा दिन कमरे में ही रहा। दोपहर को खाना खा कर कमरे में वापिस आ रहा था कि नीचे ही मिस्टर और मिसेज भसीन मिल गये हैं। दीपावली की शुभकामनाओं का आदान-प्रदान हुआ तो वे पूछने लगे - क्या बात है घर नहीं गये? क्या छुट्टी नहीं मिली या घर बहुत दूर है?

- दोनों ही बातें नहीं हैं, दरअसल एक प्रोजेक्ट में बिजी हूँ, इसलिए जाना नहीं हो पाया। वैसे अभी हाल ही में घर हो कर आया था। मैं किसी तरह बात संभालता हूँ।

यह सुनते ही कहने लगे - तो आप शाम हमारे साथ ही गुज़ारिये। खाना भी आप हमारे साथ ही खायेंगे। मैंने बहुत टालना चाहा तो वे बहुत जिद करने लगे। मिसेज भसीन बोलने में इतनी अच्छी हैं कि मुझसे मना ही नहीं किया जा सका। इनकार करने की गुंजाइश ही नहीं छोड़ी है उन्होंने।

हां कर दी है - आऊंगा।

आम तौर पर किसी के घर आता जाता नहीं, इसलिए कोई खास ज़ोर दे कर बुलाता भी नहीं है। लेकिन दिवाली के दिन वैसे भी अकेले बैठे बोर होने के बजाये सोचा, चलो किसी भरे पूरे परिवार में ही बैठ लिया जाये।

दरवाजा मिसेज भसीन ने खोला है। मैं उन्हें दिवाली की बधाई देता हूँ - हैप्पी दिवाली मिसेज भसीन। मैं बहुत ज्यादा संकोच महसूस कर रहा हूँ। वैसे भी युवा महिलाओं की उपस्थिति में मैं जल्दी ही असहज हो जाता हूँ।

वे हँसते हुए जवाब देती हैं - मेरा नाम अलका है और मुझे जानने वाले मुझे इसी नाम से पुकारते हैं।

वे मुझे भीतर लिवा ले गयी हैं और बहुत ही आदर से बिठाया है।

मैं बहुत ही संकोच के साथ कहता हूँ - दरअसल मुझे समझ में नहीं आ रहा कि मैं ... दिवाली के दिन किसी के घर जाना...।

वे मुझे आश्वस्त करती हैं - आप बिलकुल भी औपचारिकता महसूस न करें और बिलकुल सहज हो कर इसे अपना ही घर समझें।

यह सुन कर कुछ हद तक मेरा संकोच दूर हुआ है।

कहता हूँ मैं - मैं भी आपके दरवाजे पर नेम प्लेट देखता था तो रोज़ ही सोचता था, कभी बात करूँगा। भसीन सरनेम तो पंजाबियों का ही होता है। मैं दरअसल मोना सिख हूँ। कई बार अपनी जुबान बोलने के लिए भी आदमी...। मैं झेंपी सी हँसी हँसता हूँ।

बात अलका ने ही आगे बढ़ाई है।

पूछ रही हैं - कहां है आपका घर-बार और कौन-कौन है घर में आपके।

इतना सुनते ही मैं फिर से संकोच में पड़ गया हूँ।

अभी मैं अपना परिचय दे ही रहा हूँ कि मिस्टर भसीन आ गये हैं। उठ कर उन्हें नमस्कार करता हूँ। वे बहुत ही स्नेह से मेरे हाथ दबा कर मुझे दिवाली की शुभ कामना देते हैं।

घर से आने के बाद इतने दिनों में यह पहली बार हो रहा है कि घर के माहौल में बैठ कर बातें कर रहा हूँ और मन पर कोई दबाव नहीं है। बहुत अच्छा लगा है उनके घर पर बैठना, उनसे बात करना।

मैं देर तक उनके घर बैठा रहा और हम तीनों इधर-उधर की बातें करते रहे। इस बीच मैं काफी सहज हो गया हूँ और उनसे किसी पुराने परिचित की तरह बातें करने लगा हूँ।

अलका ने मुझे खाना खाने के लिए जबरदस्ती रोक लिया है। मैं भी उनके साथ पूजा में बैठा हूँ। पूरी शाम उनके घर गुज़ार कर जब मैं वापिस लौटने लगा तो अलका और मिस्टर भसीन दोनों ने एक साथ ही आग्रह किया है कि मैं उनके घर को अपना ही घर समझूँ और जब भी मुझे उसे घर की याद आये या पारिवारिक माहौल में कुछ वक्त गुज़ारने की इच्छा हो, निसंकोच चला आया करूँ।

मैं अचानक उदास हो गया हूँ। भर्राई हुई आवाज में कहता हूँ - आप लोग बहुत अच्छे हैं। मुझे नहीं पता था लोग अनजान आदमी से भी इतनी अच्छी तरह से पेश आते हैं। मैं फिर आऊँगा। थैंक्स। कह कर मैं तेजी से निकल कर चला आया हूँ।

बाद में भाई दूज वाले दिन अलका ने फिर बुलवा लिया था। तब मैं उनके घर ढेर सारी मिठाई वगैरह ले आया था। चाय पीते समय अलका ने बहुत संकोच के साथ मुझे बताया था - मेरा कोई भाई नहीं है, क्या तुम्हें मुझे भड़िया कह कर बुला सकती हूँ।

यह कहते समय अलका की आंखों में आंसू भर आये थे और वह रोने-रोने को थी।

उसका मूड हलका करने के लिए मैं हंसा था - मेरी भी कोई बड़ी बहन नहीं है। क्या मैं आपको दीदी कह कर पुकार सकता हूँ। तब हम तीनों खूब हंसे थे। अलका ने न केवल मुझे भाई बना लिया है बल्कि भाई दूज का टीका भी किया। और इस तरह मैं उनके भी परिवार का एक सदस्य बन गया हूँ। मैं अब कभी भी उनके घर चला जाता हूँ और काफी देर तक बैठा रहता हूँ।

हालांकि उनके घर आते जाते मुझे एक डेढ़ महीना हो गया है और मैं अलका और देवेद्र भसीन के बहुत करीब आ गया हूँ और उनसे मेरे बहुत ही सहज संबंध हो गये हैं लेकिन फिर भी उन्होंने मुझसे कोई व्यक्तिगत प्रश्न नहीं ही

पूछे हैं।

आज इतवार है। दापहर की झपकी ले कर उठा ही हूँ कि देवेद्र जी का बुलावा आया है। अलका मायके गयी हुई है। तय है, वे खाना या तो खुद बनाएंगे या होटल से मंगवायेंगे तो मैं ही प्रस्ताव रखता हूँ - आज का डिनर मेरी तरफ से। शाम की चाय पी कर हम दोनों टहलते हुए लिंकिंग रोड की तरफ निकल गये हैं।

खाना खाने कि लिए हम मिर्च मसाला होटल में गये हैं। वेटर पहले ड्रिंक्स के मीनू रख गया है। मीनू देखते ही देवेद्र हँसे हैं - क्यों भई, पीते-वीते हो या सूफी सम्प्रदाय से ताल्लुक रखते हो। देखो अगर जो पीते हो तो हम इतनी बुरी कम्पनी नहीं हैं और अगर अभी तक पीनी शुरू नहीं की है तो उससे अच्छी कोई बात ही नहीं है।

- आपको क्या लगता है?

- कहना मुश्किल है। वैसे तो तुम तीन साल अमेरिका गुज़ार कर आये हो, और यहां भी अरसे से अकेले ही रह रहे हो, इसलिए कहना मुश्किल है कि तुम्हारे हाथों अब तक कितनी और कितनी तरह की बोतलों का सीलभंग हो चुका होगा। वे हँसे हैं।

- आपको जान कर हैरानी होगी कि मैंने अभी तक कभी बीयर भी नहीं पी है। कभी ज़रूरत ही महसूस नहीं हुई। वहां अमेरिका के ठंडे मौसम में भी, जहां खाने का एक एक कौर नीचे उतारने के लिए लोग गिलास पर गिलास खाली करते हैं, मैं वहां भी इससे दूर ही रहा। वैसे न पीने के कई कारण रहे। आर्थिक भी रहे। फिर उस किस्म की कम्पनी भी नहीं रही। यह भी रहा कि कभी इन चीज़ों के लिए मुझे फुर्सत ही नहीं मिली। अब जब फुर्सत है, पैसे भी हैं और अकेलापन भी है तो अब ज़रूरत ही नहीं महसूस होती। वैसे आप तो पीते ही होंगे, आप ज़रूर मंगायें। मैं तो आपसे बहुत छोटा हूँ, पता नहीं मेरी कम्पनी में आपको पीना अच्छा लगे या नहीं.... वैसे मुझे अच्छा लगेगा। मैं कोल्ड ड्रिंक ले लूंगा।

वे मुझे आश्वस्त करते हैं - यह बहुत अच्छी बात है कि तुम अब तक इन खराबियों से बचे हुए हो। मैं भी कोई रेगुलर ड्रिंकर नहीं हूँ। बस, कभी-कभार ही वाला मामला है,

- आप अगर मेरी सूफी कम्पनी का बुरा न मानें तो आपके लिए कुछ मंगवाया जाये। बेचारा वेटर कब से हमारे आर्डर का इंतज़ार कर रहा है। मैं कहता हूँ।

- तुम्हारी कम्पनी का मान रखने के लिए मैं आज बीयर ही लूंगा।

मैंने उनके लिए बीयर का ही आर्डर दिया है।

हमने पूरी शाम कई घंटे एक साथ गुज़ारे हैं और ढेर सारी बातें की हैं। बातचीत के दौरान जब मैं उन्हें वीरजी कह कर बुला रहा हूँ तो उन्होंने टोका है - तुम किस औपचारिकता में पड़े हो, चाहो तो मुझे नाम से भी बुला सकते हो।

- दरअसल मैं कभी परिवार में नहीं रहा हूँ। रिश्ते-नाते कैसे निभाये जाते हैं, नहीं जानता। तेरह-चौदह साल की उम्र थी जब घर छूट गया। तब से एक शहर से दूसरे शहर भटक रहा हूँ।

- क्या मतलब ? घर छूट गया था का मतलब? तो ये सब पढ़ाई और एमटैक और पीएचडी तक की डिग्री?

- दरअसल एक लम्बी कहानी है। मैंने आज तक कभी भी किसी के भी सामने अपने बारे में बातें नहीं की हैं। आपको मैं एक रहस्य की बात यह बताऊं कि दुनिया में मेरे परिचितों में कोई भी मेरे बारे में पूरे सच नहीं जानता। यहां तक कि, मेरे मां-बाप भी मेरे बारे में कुछ खास नहीं जानते। मैंने कभी किसी को राज़दार बनाया ही नहीं है। यहां तक कि मैं अभी चौदह साल के बाद घर गया था तो वहां भी किसी को अपने सच का एक टुकड़ा दिखाया तो किसी को दूसरा। अपनी छोटी बहन जिसे मिल कर मैं बेहद खुश हुआ हूं, उसे भी मैंने अपनी सारी तकलीफों का राज़दार नहीं बनाया है। उसे भी मैंने सारे सच नहीं बताये क्योंकि मैंने कभी नहीं चाहा कि कोई मुझ पर तरस खाये। मेरे लिए अफसोस करे। मुझे अगर किसी शब्द से चिढ़ है तो वह शब्द है - बेचारा।

- यह तो बहुत ही अच्छी बात है कि हम क्यों किसी के सामने अपने जख्म दिखाते फिरें। मैं तुम्हें बिलकुल भी मजबूर नहीं करूंगा कि अपने मन पर बोझ डालते हुए कोई भी काम करो। मैं तुम्हारी भावनाएं समझ सकता हूं। सैल्फ मेड आदमी की यही खासियत होती है कि वह अपने ही बारे में बात करने से बचना चाहता है।

- नहीं, वह बात नहीं है। दरअसल मेरे पास बताने के लिए ऐसा कुछ भी नहीं है जिसे शेयर करने में मैं गर्व का अनुभव करूं। अपनी तकलीफों की बात करके मैं आपकी शाम खराब नहीं करना चाहता।

- जैसी तुम्हारी मर्जी। विश्वास रखो, मैं तुमसे कभी भी कोई भी पर्सनल सवाल नहीं पूछूंगा। इसके लिए तुम्हें कभी विवश नहीं करूंगा।

पहले घर छोड़ने से लेकर दोबारा घर छोड़ने तक के अपने थोड़े-बहुत सच बयान कर दिये हैं उनकी मोटी-मोटी जानकारी के लिए।

बताता हूं उन्हें - अब पिछले तीन-चार साल से यहां जॉब कर रहा हूं तो आस-पास दुनिया को देखने की कोशिश कर रहा हूं। मैं कई बार ये देख कर हैरान हो जाता हूं कि मैं कितने बरसों से बिना खिड़कियों वाले किसी कमरे में बंद था और दुनिया कहां की कहां पहुंच गयी है। जैसे मैं कहीं ठहरा हुआ था या किसी और ही रफ्तार से चल रहा था। खैर, पता नहीं आज अचानक आपके सामने मैं इतनी सारी बातें कैसे कर गया हूं।

- सच मानो, मैं सोच भी नहीं सकता था कि तुम, जो हमेशा इतने सहज और चुप्पे बने रहते हो, कभी बात करते हो और कभी बंद किताब की तरह हो जाते हो, अपनी इस छोटी-सी ज़िंदगी में कितने कितने तूफान झेल चुके हो।

खाना खा कर लौटते हुए बारह बज गये हैं। मुझे लग रहा है कि मैं एक परिचित के साथ खाना खाने गया था और बड़े भाई के साथ वापिस लौट रहा हूं।

देवेद्र जी के साथ दस दिन की बातचीत के कुछ दिन बाद ही अलका दीदी ने घर लिया है। उनके साथ बैठा चाय पी रहा हूं तो पूछा है उन्होंने - ऑफिस से आते ही अपने कमरे में बंद हो जाते हो। खराब नहीं लगता?

- लगता तो है, लेकिन आदत पड़ गयी है।

- कोई दोस्त नहीं है क्या?

- नहीं। कभी मेरे दोस्त रहे ही नहीं। आप लोग अगर मुझसे बात करने की शुरूआत न करते तो मैं अपनी तरफ से कभी बात ही न कर पाता।

- कोई गर्ल फ्रेंड भी नहीं है क्या? अलका ने छोड़ा है - तेरे जैसे स्मार्ट लड़के को लड़कियों की क्या कमी!

क्या जवाब दूं। मैं चुप ही रह गया हूं लेकिन अलका ने मेरी उदासी ताड़ ली है। मेरे कंधे पर हाथ रख कर पूछती है - ऐसी भी क्या बेरुखी ज़िंदगी से कि न कोई पुरुष दोस्त हो और न ही कोई लड़की मित्र ही। सच बताओ क्या बात है। वह मेरी आंखों में आंखें डाल कर पूछती है।

- सच मानो दीदी, कोई खास बात नहीं है। कभी दोस्ती हुई ही नहीं किसी से, वैसे भी मुझे लड़कियों से बात नहीं करनी ही नहीं आती।

- क्यों, क्या वहां आइआइटी में या अमेरिका में लड़कियां नहीं थीं ?

- होंगी, उनके बारे में मुझे ज्यादा नहीं पता, क्योंकि तब मैं उनकी तरफ देखता ही नहीं था कि कहीं मेरी तपस्या न भंग हो जाये। जिस वक्त सारे लड़के हॉस्टल के आसपास देर रात तक हा हा हू हू करते रहते, मैं किताबों में सिर खपाता रहता। आप ही बताओ दीदी, प्यार-व्यार के लिए वक्त ही कहां था मेरे पास?

- तो अब तो है वक्त और जॉब भी है और पैसे भी हैं। वैसे तो उस वक्त भी एक-आध लड़की तो तुम्हारी निगाह में रही ही होगी।

- वैसे तो थी एक।

- लड़की का नाम क्या था?

- लड़की जितनी सुंदर थी, उसका नाम भी उतना ही सुंदर था - ऋतुपर्णा। घर का उसका नाम निक्की था।

- उस तक अपनी बात नहीं पहुंचायी थी? उसके नाम की ही तारीफ कर देते, बात बन जाती।

- कहने की हिम्मत ही कहां थी। आज भी नहीं है।

- किसी और से कहलवा दिया होता।

- कहलवाया था।

- तो क्या जवाब मिला था?

- लेकिन ज़िंदगी के इसी इम्तिहान में मैं फेल हो गया था।

- क्या बात हो गयी थी ?

- वह उस समय एमबीबीएस कर रही थी। हमारे ही एक प्रोफेसर की छोटी बहन थी। कैम्पस में ही रहते थे वे लोग। कभी उनके घर जाता तो थैड़ी बहुत बात हो पाती थी। एकाध बार लाइब्रेरी वगैरह में भी बात हुई थी। वैसे वह बहुत



कम बातें करती थी लेकिन अपने प्रति उसकी भावनाओं को मैं उसके बिना बोले भी समझ सकता था। मैं तो खैर, अपनी बात कहने की हिम्मत ही नहीं जुटा सकता था। मेरा फाइनल ईयर था। जो कुछ कहना करना था, उसका आखिरी मौका था। मैं न लड़की से कह पा रहा था और उसके भाई के पास जाने की हिम्मत ही थी। उन्हीं दिनों हमारे सीनियर बैच की एक लड़की हमारे डिपार्टमेंट में लेक्चरर बन कर आयी थी। उसी को विश्वास में लिया था और उसके ज़रिये लड़की के भाई से कहलवाया था।

- क्या जवाब मिला था?

- लड़की तक तो बात ही नहीं पहुंची थी लेकिन उसके भाई ने ही टका-सा जवाब दे दिया था कि हम खानदानी लोग हैं। किसी खानदान में ही रिश्ता करेंगे। मैं ठहरा मेहनत-मज़दूरी करके पढ़ने वाला। उनकी निगाह में कैसे टिकता।

- बहुत बदतमीज था वो प्रोफेसर, सैल्फ - मेड आदमी का भी भला कोई विकल्प होता है। हम तुम्हारी तकलीफ़ समझ सकते हैं। अकेलापन आदमी को कितना तोड़ देता है। देवेद्र बता रहे थे कि तुमने तो अपनी तरफ से घर वालों से पैच-अप करने की भी कोशिश की लेकिन इतना पैसा खर्च करने के बाद भी तुम्हें खाली हाथ लौटना पड़ा है।

- छोड़ो दीदी, मेरे हाथ में घर की लकीरें ही नहीं हैं। मुझे भी अच्छा लगता अगर मेरा घर होता, आप दोनों के घर की तरह।

- क्यों, क्या खास बात है हमारे घर में? देवेद्र जी ने आते-आते आधी बात सुनी है।

- जब भी आप दोनों को इतने प्यार से रहते देखता हूँ तो मुझे बहुत अच्छा लगता है। काश, मैं भी ऐसा ही घर बसा पाता।

- अच्छा एक बात बताओ, अलका दीदी ने छेड़ा है - घर कैसा होना चाहिये?

- क्यों, साफ सुथरे, करीने से लगे घर ही तो सबको अच्छे लगते हैं। वैसे मैं कहीं आता-जाता नहीं लेकिन इस तरह के घरों में जाना मुझे बहुत अच्छा लगता है।

- लेकिन अपने घर को लेकर तुम्हारे मन में क्या इमेज है?

मैं सकपका गया हूँ। सूझा ही नहीं कि क्या जवाब दूँ। बहुत उधड़बुन के बाद कहा है - मेरे मन में बचपन के अपने घर और बाद में बाबा जी के घर को लेकर जो आतंक बैठा हुआ है, उससे मैं आज तक मुक्त नहीं हो पाया हूँ। मैं अपने बचपन में या तो पिटते हुए बड़ा हुआ या फिर लगातार सिरदर्द की वजह से छटपटाता रहा। घर से भाग कर जो घर मिला, वहां बाबाजी ने घर की मेरी इमेज को और दूषित किया। बाद में बेशक अलग-अलग घरों में रहा लेकिन वहां मैं न कभी खुल कर हँस ही पाता था और न कभी पैर फैला कर बैठ ही सकता था। कारण मैं नहीं जानता। फिर ज्यादातर वक्त हॉस्टलों में कटा, जहां घर के प्रति मेरा मोह तो हमेशा बना रहा लेकिन कोई मुकम्मल तस्वीर नहीं बनती थी कि घर कैसा होना चाहिये, बस, जहां भी बच्चों की किलकारियां सुनता या हसबैँड वाइफ को प्यार से बात करते देखता, एक दूसरे की केयर करते देखता, लगता शायद घर यही होता है।

- घर को लेकर तुम्हारी जो इमेज है, दरअसल तुम्हारे अनुभवों की विविधता की वजह से और घर को दूर से देखने के कारण बनी है, देवेद्र जी बता रहे हैं - तुम हमेशा या तो ऐसे घरों में रहे जहां माहौल सही नहीं था या ऐसे घरों में रहे जो तुम्हारे अपने घर नहीं थे। वैसे देखा जाये तो हर आदमी के लिए घर के मायने अलग होते हैं। माना जाये तो किसी के लिए फुटपाथ या उस पर बना टीन टप्पर का मामूली सा झोपड़ा भी घर की महक से भरा हुआ हो सकता है और ऐसा भी हो सकता है कि किसी के लिए महल भी घर की परिभाषा में न आता हो और वहां रहने वाला घर की चाहत में इधर-उधर भटक रहा हो। बेशक तुम्हें अपने पिता का घर छोड़ कर भागना पड़ा था क्योंकि वह घर अब तुम्हारे लिए घर ही नहीं रहा था लेकिन तुम्हारी मां या भाइयों के लिए तब भी वह घर बना ही रहा था क्योंकि उनके लिए न तो वहां से मुक्ति थी और न मुक्ति की चाह ही। हो सकता है तुम्हारे सामने घर छोड़ने का सवाल न आता तो अब भी वह घर तुम्हारा बना ही रहता। उस पिटाई के बावजूद उस घर में भी कुछ तो ऐसा रहा ही होगा जो तुम्हें आज तक हॉट करता है। पिता की पिटाई के पीछे भी तुम्हारी बेहतरी की नीयत छुपी रही होगी जिसे बेशक तुम्हारे पिता अपने गुस्से की वजह से कभी व्यक्त नहीं कर पाये होंगे। इसमें कोई शक नहीं कि आपसी प्रेम और सेंस ऑफ केयर से घर की नींवें मज़बूत होती हैं, लेकिन हम दोनों भी आपस में छोटी-छोटी चीज़ों को ले कर लड़ते-झगड़ते हैं। एक दूसरे से रूठते हैं और एक-दूसरे को कोसते भी हैं। इसके बावजूद हम दोनों एक ही बने रहते हैं क्योंकि हमें एक दूसरे पर विश्वास है और हम एक दूसरे की भावना की कद्र भी करते हैं। हम आपस में कितना भी लड़ लें, कभी बाहर वालों को हवा भी नहीं लगने देते और न एक दूसरे की बुराई ही करते हैं। शायद इसी भावना से घर बनता है। हां, जहां तक साफ-सुथरे घर को लेकर तुम्हारी जो इमेज है, अगर तुम बच्चों की किलकारियां भी चाहो और होटल के कमरे की तरह सफाई भी, तो शायद यह विरोधाभास होगा। घर घर जैसा ही होना और लगना चाहिये। घर वो होता है जहां शाम को लौटना अच्छा लगे न कि मजबूरी। जहां आपसी रिश्तों की महक हमेशा माहौल को जीवंत बनाये रखे, वही घर होता है। तुम्हें शायद देखने का मौका न मिला हो, यहां बंबई में जितने भी बीयर बार हैं या शराब के अड्डे हैं वहां तुम्हें हज़ारों आदमी ऐसे मिल जायेंगे जिन्हें घर काटने को दौड़ता है। वजह कोई भी हो सकती है लेकिन ऐसे लोग होशो-हवास में घर जाने से बचना चाहते हैं। वे चाहें तो अपने घर को बेहतर भी बना सकते हैं जहां लौटने का उनका दिल करे लेकिन हो नहीं पाता। आदमी जब घर से दूर होता है तभी उसे घर की महत्ता पता चलती है। वह किसी भी तरीके से घर नाम की जगह से जुड़ना चाहता है। घर चाहे अपना हो या किसी और का, घर का ही अहसास देता है। तो बंधुवर, हम तो यही दुआ करते हैं कि तुम्हें मनचाहा घर जल्दी मिले।

- बिलीव मी, वीर जी, आपने तो घर की इतनी बारीक व्याख्या कर दी।

- चिंता मत करो, तुम्हें भी अपना घर जरूर मिलेगा और तुम्हारी ही शर्तों पर मिलेगा।

- मैं घर को लेकर बहुत सेंसिटिव रहा हूं लेकिन अब घर से लौटने के बाद से तो मैं बुरी तरह डर गया हूं कि क्या कोई ऐसी जगह कभी होगी भी जिसे मैं घर कह सकूं। मैं अपनी तरह के घर को पाने के लिए कुछ भी कर सकता था लेकिन.. अब तो....।

- घबराओ नहीं, ऊपर वाले ने तुम्हारे नाम भी एक खूबसूरत बीवी और निहायत ही सुकून भरा घर लिखा होगा। घर और बीबी दोनों ही तुम तक चल कर आयेंगे।

- पता नहीं घर की यह तलाश कब खत्म होगी।

- जल्दी ही खतम होगी भाई, अलका ने मेरे बाल बिखेरते हुए कहा है - अगर हमारी पसंद पर भरोसा हो तो हम दोनों आज ही से इस मुहिम पर जुट जाते हैं।

मैं झेंपी हँसी हँसता हूँ - क्यों किसी मासूम की जिंदगी खराब करती हैं इस फालतू आदमी के चक्कर में।

- यह हम तय करेंगे कि हीरा आदमी कौन है और फालतू आदमी कौन?

गुड्डी की चिट्ठी आयी है। समाचार सुखद नहीं हैं।

- वीरजी,

आपकी चिट्ठी मिल गयी थी। बेबे बीमार है। आजकल घर का सारा काम मेरे जिम्मे आ गया है। बेबे के इलाज के लिए मुझे अपनी बचत के काफी पैसे खर्च करने पड़े जिससे दारजी और बेबे को बताना पड़ा कि मुझे आपसे काफी पैसे मिले हैं।

वीरजी, यह गलत हो गया है कि सबको पता चल गया है कि आप मुझे पैसे भेजते रहते हैं। अब बीमार बेबे के एक्सरे और दूसरे टेस्ट कराने थे और घर में उतने पैसे नहीं थे, मैं कैसे चुप रहती। अपनी सारी बचत निकाल कर दारजी के हाथ पर रख दी थी। वैसे भी ये पैसे मेरे पास फालतू ही तो रखे हुए थे।

आप यहां की चिंता न करें। मैं सब संभाले हुए हूँ। अपने समाचार दें। अपना कॉन्टैक्ट नंबर लिख दीजियेगा।

आपकी

गुड्डी

मैं तुरंत ही पांच हजार रुपये का ड्राफ्ट गुड्डी के नाम कूरियर से भेजता हूँ और लिखता हूँ कि मुझे फोन करके तुरंत बताये कि अब बेबे की तबीयत कैसी है। एक पत्र मैं नंदू को लिखता हूँ। उसे बताता हूँ कि किन हालात के चलते मुझे दूसरी बार मुझे बेघर होना पड़ा और मैं आते समय किसी से भी मिल कर नहीं आ सका। एक तरह से खाली हाथ और भरे मन से ही घर से चला था। बेबे बीमार है। ज़रा घर जा कर देख आये कि उसकी तबीयत अब कैसी है। गुड्डी को पैसे भेजे हैं। और पैसों की जरूरत हो तो तुरंत बताये।

पसोचता हूँ, जाऊँ क्या बेबे को देखने? लेकिन कहीं फिर घर लिया मुझे किसी करतारे या ओमकारे की लड़की के चक्कर में तो मुसीबत हो जायेगी। फिर इस बार तो बेबे की बीमारी का भी वास्ता दिया जायेगा और मैं किसी भी तरह से बच नहीं पाऊँगा। गुड्डी की चिट्ठी आ जाये फिर देखता हूँ।

नंदू का फोन आ गया है।

बता रहा है - आप किसी किस्म की फिकर मत करो। बेबे अब ठीक है। घर पर ही है और डॉक्टरों ने कुछ दिन का आराम बताया है। वैसे चिंता की कोई बात नहीं है।

पूछता हूँ मैं - लेकिन उसे हुआ क्या था ?

- कुछ खास नहीं, बस, ब्लड प्रेशर डाउन हो गया था। दवाइयां चलती रहेंगी। बाकी मुझे गुड्डी से सारी बात का पता चल गया है। आप मन पर कोई बोझ न रखें। मैं गुड्डी का भी ख्याल रखूंगा और बेबे का भी। ओके, और कुछ !!

- जरा अपने फोन नम्बर दे दे।

- लो नोट करो जी। घर का भी और रेस्तरां का भी। और कुछ?

- मैं अपने पड़ोसी मिस्टर भसीन का नम्बर दे रहा हूँ। एमर्जेंसी के लिए। नोट कर लो और गुड्डी को भी दे देना।

फोन नम्बर नोट करता हूँ और उसे थैंक्स कर फोन रखता हूँ..।

तसल्ली हो गयी है कि बेबे अब ठीक हैं और यह भी अच्छी बात हो गयी कि अब नंदू के जरिये कम से कम तुरंत समाचार तो मिल जाया करेंगे।

इस बीच दारजी चिट्ठी आयी है। गुरुमुखी में है। हालांकि उनकी हैण्ड राइटिंग बहुत ही खराब है लेकिन मतलब निकाल पा रहा हूँ।

यह एक पिता का पुत्र के नाम पहला पत्र है।

लिखा है

- बरखुरदार,

नंदू से तेरा पता लेकर खत लिख रहा हूँ। एक बाप के लिए इससे और ज्यादा शरम का बात क्या होगी कि उसे अपने बेटे के पते के वास्ते उसके दोस्तों के घरों के चक्कर काटने पड़ें। बाकी तूने जो कुछ हमारे साथ किया और दूसरी बार बीच चौराहे उतते मेरी पगड़ी उछाली, उससे मैं बिरादरी में कहीं मुंह दिखाने के ध काबिल नहीं रहा हूँ..। सब लोग मुझ पर ही थू थू कर रहे हैं। कोई यह नहीं देखता कि तू किस तरह इस बार भी बिना बताये चोरों की तरह निकल गया। तेरी बेबे तेरा इंतजार करती रही और जनाब ट्रेन में बैठ कर निकल गये। बाकी आदमी में इतनी गैरत और लियाकत तो होनी ही चाहिये कि वह आमने-सामने बैठ कर बात कर सके। तेरी बेबे इस बात का सदमा बरदाश्त नहीं कर पायी और तब से बीमार पड़ी है। तुझसे तो इतना भी न हुआ कि उसे देखने आ सके। बाकी तूने अपनी बेबे को हमेशा ही दुख दिया है और कभी भी इस घर के सुख-दुख में शामिल नहीं हुआ है। छोटी-मोटी बातों पर घर छोड़ देना शरीफ घरों के लड़कों को शोभा नहीं देता। तुम्हारी इतनी पढ़ाई-लिखाई का क्या फायदा जिससे मां-बाप को दुख के अलावा कुछ भी न मिले।

बाकी मेरे समझाने-बुझाने के बाद करतार सिंह तेरी यह ज्यादाती भुलाने के लिए अभी भी तैयार है। तू जल्द से जल्द आ जा ताकि घर में सुख शांति आ सके। इस बहाने अपनी बीमार बेबे को भी देख लेगा। वो तेरे लिए बहुत कल्पती है। वैसे भी उसकी आधी बीमारी तुझे देखते ही ठीक हो जायेगी। तू जितनी भी ज्यादाती करे हमारे साथ, उसके प्राण तो तुझमें ही बसते हैं।

तुम्हारा,

## दारजी

ज़िंदगी में एक बाप पहली बार अपने बेटे को चिट्ठी लिख रहा है और उसमें सौदेबाजी वाली यह भाषा!! दारजी जो भाषा बोलते हैं वही भाषा लिखी है। न बोलने में लिहाज करते हैं न लिखने में किया है।

अब ऐसे खत का क्या जवाब दिया जा सकता है। वे यह नहीं समझते कि इस तरह से वे मेरी परेशानियां ही बढ़ा रहे हैं।

अगले ही दिन की डाक में गुड्डी का एक और खत आया है।

लिखा है उसने

- वीरजी, पत्र लिखने में देर हो गयी है। जब नंदू वीरजी ने बताया कि उन्होंने आपको बेबे की तबीयत के बारे में फोन पर बता दिया है इसलिए भी लिखना टल गया। बेबे अब ठीक हैं लेकिन कमज़ोरी है और ज्यादा देर तक काम नहीं कर पाती। वैसे कुछ सदमा तो उन्हें आपके जाने का ही लगा है और आजकल उनमें और दारजी में इसी बात को लेकर अक्सर कहा-सुनी हो जाती है।

बेबे की बीमारी के कारण कई दिन तक कॉलेज न जा सकी और घर पर ही पढ़ती रही। वैसे निशा आ कर नोट्स दे गयी थी।

दारजी ने मुझसे आपका पता मांगा था। मैंने मना कर दिया कि जिस लिफाफे में ड्राफ्ट आया था उस पर पता था ही नहीं। पता न देने की वज़ह यही है कि पिछले दिनों करतार सिंह ने संदेशा भिजवाया था कि अब हम और इंतजार नहीं कर सकते। अगर दीपू यह रिश्ता नहीं चाहता या जवाब नहीं देता तो वे और कोई घर देखेंगे। उन पर भी बिरादरी की तरफ से दबाव है।

पता है वीरजी, दारजी ने करतार सिंह के पास इस संदेश के जवाब में क्या संदेशा भिजवाया था - तू संतोष का ब्याह बिल्लू या गोलू से कर दे., दहेज बेशक आधा कर दे। करतार सिंह ने दारजी को जवाब दिया कि बोलने से पहले कुछ तो सोच भी लिया कर। तू बेशक व्यापारी न सही, मैं व्यापारी आदमी हूँ और कुछ सोच कर ही तेरे दीपू का हाथ मांग रहा था। दारजी का मुंह इतना सा रह गया।

दारजी नंदू से आपका पता लेने गये थे। वे शायद आपको लिखें, या लिख भी दिया हो .. आप उनके फंदे में मत फंसना वीरजी।

आपके भेजे पांच हज़ार के ड्राफ्ट के लिए दारजी ने मेरा खाता खुलवा दिया है, लेकिन यह खाता उन्होंने अपने साथ ज्वाइंट खुलवाया है।

नंदू वीरजी अक्सर बेबे का हालचाल पूछने आ जाते हैं। आपकी चिट्ठी का पूछ रहे थे। वे आपकी बहुत इज्जत करते हैं।

पत्र दूँगे।

आपकी बहना,

गुड्डी

समझ में नहीं आ रहा, किन झमेलों में फंस गया हूँ। जब तक घर नहीं गया था, वे सब मेरी दुनिया में कहीं थे ही नहीं, लेकिन एक बार सामने आ जाने के बाद मेरे लिए यह बहुत ही मुश्किल हो गया है कि उन्हें अपनी स्मृतियों से पूरी तरह से निकाल फेंकूँ। हो ही नहीं पाता ये सब। वहाँ मुझे हफ्ता भर भी चैन से नहीं रहने दिया और जब वहाँ से भाग कर यहाँ आ गया हूँ तो भी मुक्ति नहीं है मेरी।

अलका दीदी मेरी परेशानियाँ समझती हैं लेकिन जब मेरे ही पास इनका कोई हल नहीं है तो उस बेचारी के पास कहां से होगा। मुझे उदास और डिस्टर्ब देख कर वह भी मायूस हो जाती है, इसलिए कई बार उनके घर जाना भी टालता हूँ। लेकिन दो दिन हुए नहीं होते कि खुद बुलाने आ जाती हैं। मजबूरन मुझे उनके घर जाना ही पड़ता है।

डिप्रेशन के भीषण दौर से गुजर रहा हूँ। जी चाहता है कहीं दूर भाग जाऊँ। बाहर कहीं नौकरी कर लूँ जहाँ किसी को मेरी खबर ही न हो कि मैं कहां चला गया हूँ। एक तो ज़िंदगी में पसरा दसियों बरसों का यह अकेलापन और उस पर से घर से आने वाली इस तरह की चिड़ियाँ। खुद की नादानी पर अफ़सोस हो रहा है कि बेशक गुड्डी को ही सही, पता दे कर ही क्यों आया..। मैं अपने हाल बना रहता और उन्हें उनके ही हाल पर छोड़ आता। लेकिन बेबे और गुड्डी .. यहीं आ कर मैं पस्त हो जाता हूँ।

अब मैं इस दिशा में ज्यादा सोचने लगा हूँ कि यहाँ से कहीं बाहर ही निकल जाऊँ। बेशक कहीं भी खुद को एडजस्ट करने में, जमाने में वक्त लगेगा लेकिन यहाँ ही कौन सी जमी-जमायी गृहस्थी है जो उखाड़नी पड़ेगी। सब जगह हमेशा खाली हाथ ही रहा हूँ। जितनी बार भी शहर छोड़े हैं या जगहें बदली हैं, खाली हाथ ही रहा हूँ, यहाँ से भी कभी भी वैसे ही चल दूंगा। किसी भी कीमत पर इंग्लैण्ड या अमेरिका की तरफ निकल जाना है।

ऑफिस से लौटा ही हूँ कि अलका दीदी का बुलावा आ गया है। पिछले कितने दिनों से उनके घर गया ही नहीं हूँ।

फ्रेश हो कर उनके घर पहुंचा तो दीदी ने मुस्कराते हुए दरवाजा खोला है। भीतर आता हूँ। सामने ही एक लम्बी-सी लड़की बैठी है। दीदी परिचय कराती हैं - ये गोल्डी है। सीएमसी में सर्विस इंजीनियर है। उसे मेरे बारे में बताती है। मैं हैलो करता हूँ। हम बैठते हैं। दीदी चाय बनाने चली गयी है।

किसी भी अकेली लड़की की मौजूदगी में मैं असहज महसूस करने लगता हूँ। समझ ही नहीं आता, क्या बात करूँ और कैसे शुरूआत करूँ। वह भी थोड़ी देर तक चुप बैठी रहती है फिर उठ कर दीदी के पीछे रसोई में ही चली गयी है। चलो, अच्छा है। उसकी मौजूदगी से जो तनाव महसूस हो रहा था, कम से कम वो तो नहीं होगा। लेकिन दीदी भी अजीब हैं। उसे फिर से पकड़ कर ड्राइंग रूम में ले आयी है - बहुत अजीब हो तुम दोनों? क्या मैं इसीलिए तुम दोनों का परिचय करा के गयी थी कि एक दूसरे का मुंह देखते रहो और जब दोनों थक जाओ तो एक उठ कर रसोई में चला आये।

मैं झेंप कर कहता हूँ - नहीं दीदी, ऐसी बात नहीं है दरअसल .. मैं ..

- हां, मुझे सब पता है कि तुम लड़कियों से बात करने में बहुत शरमाते हो और कि तुम्हारा मूड आजकल बहुत खराब चल रहा है और मुझे यह भी पता है कि ये लड़की तुझे खा नहीं जायेगी। बेशक कायस्थ है लेकिन वैजिटेरियन है। दीदी ने मुझे कठघरे में खड़ा कर दिया है। कहने को कुछ बचा ही नहीं है।

में बात शुरू करने से हिसाब से पूछता हूं उससे - कहां से ली थी कम्प्यूटर्स में डिग्री?

- इंदौर से। वह भी संकोच महसूस कर रही है कि उठ, कर रसोई में क्यों चली गयी थी।

- बंबई पहली बार आयी हैं?

- जाँब के हिसाब तो पहली ही बार ही आयी हूं, लेकिन पहले भी कॉलेज ग्रुप के साथ बंबई घूम चुकी हूं।

- चलो, गगनदीप के लिए अच्छा हुआ कि उसे गोल्डी को बंबई नहीं घुमाना पड़ेगा।

- आप तो मेरे पीछे ही पड़ गयी हैं दीदी, मैंने ऐसा कब कहा...

- हां, अब हुई न बात। तो अब पूरी बात सुन। गोल्डी एक हफ्ता पहले ही बंबई आयी है। बिचारी को आते ही रहने की समस्या से जूझना पड़ा। कल ही विनायक क्रॉस रोड पर रहने वाली हमारी विधवा चाची की पेइंग गेस्ट बन कर आयी है। इसे कुछ शॉपिंग करनी है। तू ज़रा इसके साथ जा कर इसे शॉपिंग करा दे।

- ठीक है दीदी, करा देता हूं। दीदी की बात टालने की मेरी हिम्मत नहीं है।

- जा गोल्डी। वैसे तुझे बता दूं कि ये बहुत ही शरीफ लड़का है। पता नहीं रास्ते में तुझसे बात करे या नहीं या तुझे चाट वगैरह भी खिलाये या नहीं, तू ही इसे कुछ खिला देना।

- दीदी, इतनी तो खिंचाई मत करो। अब मैं इतना भी गया गुजरा नहीं हूं कि ....।

- मैं यही सुनना चाहती थी। दीदी ने हँसते हुए हमें विदा किया है।

हम दोनों एक साथ नीचे उतरते हैं।

सीढ़ियों में ही उससे पूछता हूं - आपको किस किस्म की शॉपिंग करनी है? मेरा मतलब उसी तरह के बाज़ार की तरफ जायें।

- अब अगर यहीं रहना है तो सुई से लेकर आइरन, बाल्टी, इलैक्ट्रिक कैटल सब कुछ ही तो लेना पड़ेगा। पहले यही चीजें ले लें - ऑटो ले लें? बांद्रा स्टेशन तक तो जाना पड़ेगा।

दो तीन घंटे में ही उसने काफी शॉपिंग कर ली है। बहुत अच्छी तरह से शॉपिंग की है उसने। उसने सामान भी बहुत बढ़िया क्वालिटी का खरीदा है। ज्यादातर सामान पहली नज़र में ही पसंद किया गया है। दीदी की बात भूला नहीं हूं। गोल्डी को आग्रह पूर्वक शेर पंजाब रेस्तरां में खाना खिलाया है। इस बीच उससे काफी बात हुई है। गोल्डी कराटे में ब्लू बैल्ट है। पुराने संगीत की रसिया है और अच्छे खाने की शौकीन है। उसे फिल्मों बिलकुल अच्छी नहीं लगती।

उसने मेरे बारे में भी बहुत कुछ जानना चाहा है। संकट में डाल दिया है उसने मुझे मेरी डेट ऑफ बर्थ पूछ कर। कभी सोचा भी नहीं था, इधर-उधर के फार्मों में लिखने के अलावा जन्म की तारीख का इस तरह भी कोई महत्व होता है। एक तरह से अच्छा भी लगा है। आज तक यह तारीख महज एक संख्या थी। आज एक सुखद अहसास में बदल गयी है।

मैं भी उससे उसकी डेट ऑफ बर्थ पूछता हूँ। बताती है - बीस जुलाई सिक्सटी नाइन।

मैं हँसता हूँ - मुझसे छः साल छोटी हैं।

वह जवाब देती है - दुनिया में हर कोई किसी न किसी से छोटा होता है तो किसी दूसरे से बड़ा। अगर सब बराबर होने लगे तो चल चुकी दुनिया की साइकिल....।

काफी इंटेलिजेंट है और सेंस ऑफ ह्यूमर भी खूब है। आज से ठीक बीस दिन जनम दिन है गोल्डी का। देखें, तब यहां होती भी है या नहीं....!

- आपका ऑफिस तो बांद्रा कुर्ला कॉम्प्लैक्स में है। सुना है बहुत ही शानदार बिल्डिंग है।

- हां बिल्डिंग तो अच्छी है। कभी ले जाऊंगी आपको। अभी तो नयी हूँ इसलिए हैड क्वार्टर्स दिया है। मैं तो फील्ड स्टाफ हूँ। अपने काम के सिलसिले में सारा दिन एक जगह से दूसरी जगह जाना पड़ेगा।

- बंबई से बाहर भी?

- हां, बाहर भी जाना पड़ सकता है।

हम लदे फदे वापिस पहुंचे हैं। गोल्डी का काफी सारा सामान मेरे दोनों हाथों में है। उसे चाची के घर के नीचे विदा करता हूँ तो पूछती है - ये सारा सामान लेकर मैं अकेली ऊपर जाऊंगी तो आपको खराब नहीं लगेगा!

- ओह, सॉरी, मैं तो ये समझ रहा था मेरा ऊपर जाना ही आपको खराब लगेगा, इसलिए चुप रह गया। लाइये, मैं पहुंचा देता हूँ सामान।

चाची को नमस्ते करता हूँ। उनसे अक्सर दीदी के घर मुलाकात हो जाती है। हालचाल पूछती हैं। गोल्डी का सामान रखवा कर लौटने को हूँ कि वह कहती है - थैंक्स नहीं कहूंगी तो आपको खराब लगेगा और थैंक्स कहना मुझे फॉर्मल लग रहा है।

- इसमें थैंक्स जैसी कोई बात नहीं है। इस बहाने मेरा भी घूमना हो गया। वैसे भी कमरे में बैठा बोर ही तो होता।

हँसती है - वैसे तो दीदी ने मुझे डरा ही दिया था कि आप बिलकुल बात ही नहीं करते। एनी वे थैंक्स फॉर द नाइस डिनर। गुड नाइट।

किसी लड़की के साथ इतना वक्त गुज़ारने का यह पहला ही मौका है। वह भी अनजान लड़की के साथ पहली ही मुलाकात में। ऋतुपर्णा के साथ भी कभी इतना समय नहीं गुज़ारा था। गोल्डी के व्यक्तित्व के खुलेपन के बारे में



सोचना अच्छा लग रहा है। कोई दुराव छुपाव नहीं। साफगोई से अपनी बात कह देना।

चलो, अलका दीदी ने जो झूठी सौंपी थी, उसे ठीक-ठाक निभा दिया।

सुबह सुबह ही मकान मालिक ने बताया है कि दरवाजे पर कोई सिख लड़का खड़ा है जो तुम्हें पूछ रहा है। मैं लपक कर बाहर आता हूँ।

सामने बिल्लू खड़ा है। पास ही बैग रखा है। मुझे देखते ही आगे बढ़ा है और हौले से झुका है।

मैं हैरान - न चिढ़ी न पत्री, हज़ारों मील दूर से चला आ रहा है, कम से कम खबर तो कर देता। उसे भीतर लिवा लाता हूँ। मकान मालिक उसे हैरानी से देख रहा है। उन्हें बताता हूँ - मेरा छोटा भाई है। यहां एक इन्टरव्यू देने आया है। मकान मालिक की तसल्ली हो गयी है कि रहने नहीं आया है।

उसे भीतर लाता हूँ। पूछता हूँ - .. इस तरह .. अचानक ही.. कम से कम खबर तो कर ही देता.. मैं स्टेशन तो लेने आ ही जाता..।

हंसता है बिल्लू - बस, बंबई घूमने का दिल किया तो बैग उठाया और चला आया।

मैं चौंका हूँ - घर पर तो बता कर आया है या नहीं ?

- उसकी चिंता मत करो वीर, उन्हें पता है, मैं यहां आ रहा हूँ।

मुझे अभी भी विश्वास नहीं हो रहा है कि घर वह कह कर आया है। सोच लिया है मैंने, रात को नंदू को फोन करके बता दूंगा - घर बता दे, बिल्लू यहां ठीक ठाक पहुंच गया है। फिकर न करें।

- बेबे कैसी है? दारजी, गुड्डी और गोलू?

- बेबे अभी भी ढीली ही है। ज्यादा काम नहीं कर पाती। बाकी सब ठीक हैं।

मकान मालिक ने इतनी मेहरबानी कर दी है कि दो कप चाय भिजवा दी है।

बिल्लू नहा धो कर आया है तो मैं देखता हूँ कि उसके कपड़े, जूते वगैरह बहुत ही मामूली हैं। घर पर रहते हुए मैंने इस तरफ ध्यान ही नहीं दिया था। आज-कल मैं ही दिलवाने पड़ेंगे। घुमाना-फिराना भी होगा। यही काम मेरे लिए सबसे मुश्किल होता है। मैंने खुद बंबई ढंग से नहीं देखी है, उसे कैसे घुमाऊंगा। पता नहीं कितने दिन का प्रोग्राम बना कर आया है।

पूछ रहा है बिल्लू - क्या सोचा है वीर शादी के बारे में। उसने अपने बैग में से संतोष की तस्वीर निकाल कर मेरे आगे रख दी है। लगता है मुझे शादी के लिए तैयार करने और लिवा लेने के लिए आया है। उसे लिखा-पढ़ा कर भेजा गया है। वह जिस तरह से मेरी चीजों को उलट-पुलट कर देख रहा है और सारी चीजों के बारे में पूछ रहा है उससे तो यही लगता है कि वह मेरा जीवन स्तर, रहने का रंग ढंग और मेरी माली हालत का जायजा लेने आया है। कहा उसने बेशक नहीं है लेकिन उसके हाव-भाव यही बता रहे हैं।

परसों अलका दीदी ने दोनों को खाने पर बुला लिया था। गोल्डी भी थी। वहां पर भी वह सबके सामने मेरे घर छोड़ कर आने के बारे में उलटी-सीधी बातें करने लगा। जब मैं चुप ही रहा तो अलका को मेरे बचाव में उसे चुप करना पड़ा तो जनाब नाराज़ हो गये - आपको नहीं पता है भैनजी, ये किस तरह बिना बताये घर छोड़ कर आ गये थे कि सारी बिरादरी इनके नाम पर आज भी थू थू कर रही है। सगाई की सारी तैयारियां हो चुकी थीं। वो तो लोग-बाग दारजी का लिहाज कर गये वरना..इन्होंने कोई कसर थोड़े ही छोड़ रखी थी।

वह ताव में आ गया था। बड़ी मुश्किल से हम उसे चुप करा पाये थे। हमारी सारी शाम खराब हो गयी थी। गोल्डी क्या सोचेगी मेरे बारे में कि इतना गैर-जिम्मेवार आदमी हूं। उससे बात ही नहीं हो पायी थी। मैं देख सकता था कि वह भी बहुत आक्वर्ड महसूस कर रही थी।

इस बीच देवेन्द्र और अलका जी ने दोबारा बुलाया है लेकिन मेरी हिम्मत ही नहीं हो रही कि उसे वहां ले जाऊं। ले ही नहीं गया। अब तो बिल्लू से बात करने की ही इच्छा नहीं हो रही है। इसके बावजूद बिल्लू को ढेर सारी शापिंग करा दी है। घुमाया-फिराया है और हजारों रुपयों की चीज़ें दिलवायीं हैं। वह बीच-बीच में संतोष कौर का जिक्र छेड़ देता है कि बहुत अच्छी लड़की है, मैं एक बार उसे देख तो लेता। आखिर मुझे दुखी हो कर साफ-साफ कह ही देना पड़ा कि अगली बार जो तूने उस या किसी भी लड़की का नाम लिया तो तूझे अगली ट्रेन में बिठा दूंगा। तब कहीं जा कर वह शांत हुआ है।

अब उसकी मौजूदगी मुझमें खीज पैदा करने लगी है।

उसकी वज़ह से मैं हफ्ते भर से बेकार बना बैठा हूं। जनाब ग्यारह बजे तो सो कर उठते हैं। नहाने का कोई ठिकाना नहीं। खाने-पीने का कोई वक्त नहीं। यहां संकट यह है कि पूरी ज़िंदगी मैं हमेशा सारे काम अनुशासन से बंध कर करता रहा। जरा-सी भी अव्यवस्था मुझे बुरी तरह से बेचैन कर देती है। घूमने-फिरने के लिए निकलते-निकलते डेढ दो बजा देना उसके लिए मामूली बात है। तीन-चार घंटे घूमने के बाद ही जनाब थक जाते हैं और फिर बेताल डाल पर वापिस।

पूरे हफ्ते से उसका यही शेड्यूल चल रहा है। उसकी शॉपिंग भी माशा अल्लाह अपने आप में अजूबा है। पता नहीं किस-किस की लिस्टें लाया हुआ है। यह भी चाहिये और वह भी चाहिये। अब अगर किसी और ने सामान मंगाया है तो उसके लिए पैसे भी तो निकाल भाई। लेकिन लगता है उसके हाथों ने उसकी जेबों का रास्ता ही नहीं देखा। उसकी खुद की हजारों रुपये की शॉपिंग करा ही चुका हूं। उसमें मुझे कोई एतराज़ नहीं है। लेकिन किसी ने अगर कैमरा मंगवाया है या कुछ और मंगवाया है तो उसके लिए भी मेरी ही जेब ढीली करा रहा है। उसके खाने-पीने में मैंने कोई कमी नहीं छोड़ी है। मैं खुद रोज़ाना ढाबे में या किसी भी उडिपी होटल में खा लेता हूं लेकिन उसे रोज ही किसी न किसी अच्छे होटल में ले जा रहा हूं। इसलिए जब उसने कहा कि मैं गोवा घूमना चाहता हूं तो मुझे एक तरह से अच्छा ही लगा। उसे गोवा की बस में बिठा दिया है और हाथ में पांच सौ रुपये भी रख दिये हैं। तभी पूछ भी लिया है - आजकल रश चल रहा है। ऐन वक्त पर टिकट नहीं मिलेगी। तेरा कब का टिकट बुक करा दूं?

उसे अच्छा तो नहीं लगा है लेकिन बता दिया है उसने

- गोवा से शुक्रवार तक लौटूंगा। शनिवार की रात का करा दें।

और इस तरह से बिल्लू महाराज जी मेरे पूरे ग्यारह दिन और लगभग आठ हजार रुपये स्वाहा करने के बाद आज वापिस लौट गये हैं। लेकिन जाते-जाते वह मुझे जो कुछ सुना गया है, उससे एक बार फिर सारे रिश्तों से मेरा मोह भंग हो गया है। उसकी बातें याद कर करके दिमाग की सारी नसें झनझना रही हैं। कितना अजीब रहा यह अनुभव अपने ही सगे भाई के साथ रहने का। क्या वाकई हम एक दूसरे से इतने दूर हो गये हैं कि एक हफ्ता भी साथ-साथ नहीं रह सकते। उसके लिए इतना कुछ करने के बाद भी उसने मुझे यही सिला दिया है....।

गोल्डी से इस बीच एक दो बार ही हैलो हो पायी है। वह भी राह चलते। एक बार बाज़ार में मिल गयी थी। मैं खाना खा कर आ रहा था और वह क्रूरियर में चिढ़ी डालने जा रही थी। तब थोड़ी देर बात हो पायी थी।

उसने अचानक ही पूछ लिया था - आप आइसक्रीम तो खा लेते होंगे?

- हां खा तो लेता हूं लेकिन बात क्या है?

- दरअसल आइसक्रीम खाने की बहुत इच्छा हो रही है। मुझे कम्पनी देंगे ?

- ज़रूर देंगे। चलिये।

- लेकिन खिलाऊंगी मैं।

- ठीक है आप ही खिला देना। तब आइसक्रीम के बहाने ही उससे थोड़ी बहुत बात हो पायी थी।

- बहुत थक जाती हूं। सारा दिन शहर भर के चक्कर काटती हूं। न खाने का समय न वापिस आने का।

- मैं समझ सकता हूं लेकिन आपके सामने कम से कम सुबह के नाश्ते से लेकर रात के खाने तक की समस्या तो नहीं है।

- वो तो खैर नहीं है। फिर भी लगता नहीं इस चाची नाम की लैंड लेडी से मेरी ज्यादा निभ पायेगी। किराया जितना ज्यादा, उतनी ज्यादा बंदिशें। शाम को मैं बहुत थकी हुई आती हूं। तब सहज-सी एक इच्छा होती है कि काश, कोई एक कप चाय पिला देता। लेकिन चाची तो बस, खाने की थाली ले कर हाज़िर हो जाती है। अब सुबह का दूध शाम तक चलता नहीं और पाउडर की चाय में मज़ा नहीं आता।

- मैं आपकी तकलीफ़ समझ सकता हूं।

- और भी दस तरह की बंदिशें हैं। ये मत करो और वो मत करो। रात दस बजे तक घर आ जाओ। अब मैं जिस तरह के जॉब में हूं, वहां देर हो जाना मामूली बात है। कभी कोई कॉल दस मिनट में भी ठीक हो जाती है तो कई बार बिगड़े सिस्टम को लाइन पर लाने में दसियों घंटे लग जाना मामूली बात है। तब वहां हम सामने खुला पड़ा सिस्टम देखें या चाची का टाइम टेबल याद करें।

- किसी गर्ल्स हॉस्टल में क्यों नहीं ट्राई करतीं।

- सुना है वहां का माहौल ठीक नहीं होता और बंदिशें वहां भी होंगी ही। खैर, आप भी क्या सोचेंगे, आइसक्रीम तो दस रुपये की खिलायी लेकिन बोर सौ रुपये का कर गयी। चलिये।

हम टहलते हुए एक साथ लौटे थे।

कहा था उसने - कभी आपके साथ बैठ कर ढेर सारी बातें करेंगे।

उसके बाद एक बार और मिली थी वह। अलका दीदी के घर से वापिस जा रही थी और मैं घर आ रहा था।

पूछा था तब उसने - कुछ फिक्शन वगैरह पढ़ते हैं क्या?

- ज़िंदगी भर तो भारी-भारी टेक्निकल पोथे पढ़ता रहा, फिक्शन के लिए पहले तो फुर्सत नहीं थी, बाद में पढ़ने का संस्कार ही नहीं बन पाया। जैसे तो ढेरों किताबें हैं। शायद कोई पसंद आ जाये। देखना चाहेंगी ?

- चलिये। और वह मेरे साथ ही मेरे कमरे में वापिस आ गयी है।

यहां भी पहली ही बार वाला मामला है। मेरे किसी भी कमरे में आने वाली वह पहली ही लड़की है।

- कमरा तो बहुत साफ सुथरा रखा है। वह तारीफ करती है।

- दरअसल यह पारसी मकान मालिक का घर है। और कुछ हो न हो, सफाई जो ज़रूर ही होगी। जैसे भी अपने सारे काम खुद ही करने की आदत है इसलिए एक सिस्टम सा बन जाता है कि अपना काम खुद नहीं करेंगे तो सब कुछ जैसे ही पड़ा रहेगा। बाद में भी खुद ही करना है तो अभी क्यों न कर लें।

- दीदी आपकी बहुत तारीफ कर रही थीं कि आपने अपने कैरियर की सारी सीढ़ियां खुद ही तय की हैं। ए कम्प्लीट सैल्फ मेड मैन। वह किताबों के ढेर में से अपनी पसंद की किताबें चुन रही है।

हँसता हूँ मैं - आप सीढ़ियां चढ़ने की बात कर रही हैं, यहां तो बुनियाद खोदने से लेकर गिट्टी और मिट्टी भी खुद ही ढोने वाला मामला है। देखिये, आप पहली बार मेरे कमरे में आयी हैं, अब तक मैंने आपको पानी भी नहीं पूछा है। कायदे से तो चाय भी पिलानी चाहिये।

- इन फार्मेलिटीज़ में मत पड़िये। चाय की इच्छा होगी तो खुद बना लूंगी।

- लगता है आपको संगीत सुनने का कोई शौक नहीं है। न रेडियो, न टीवी, न वॉकमैन या स्टीरियो ही। मैं तो जब तब दो-चार घंटे अपना मन पसंद संगीत न सुन लूँ, दिन ही नहीं गुजरता।

- बताया न, इन किताबों के अलावा भी दुनिया में कुछ और है कभी जाना ही नहीं। अभी कहें आप कि फलां थ्योरी के बारे में बता दीजिये तो मैं आपको बिना कोई भी किताब देखे पूरी की पूरी थ्योरी पढ़ा सकता हूँ।

- वाकई ग्रेट हैं आप। चलती हूँ अब। ये पांच-सात किताबें ले जा रही हूँ। पढ़ कर लौटा दूंगी।

- कोई जल्दी नहीं है। आपको जब भी कोई किताब चाहिये हो, आराम से ले जायें। देखा, चाय तो फिर भी रह ही गयी।

- चाय ड्यू रही अगली बार के लिए। ओके।

- चलिये, नीचे तक आपको छोड़ देता हूँ।

जब उसे उसके दरवाजे तक छोड़ा तो हँसी थी गोलडी - इतने सीधे लगते तो नहीं। लड़कियों को उनके दरवाजे तक छोड़ कर आने का तो खूब अनुभव लगता है। और वह तेजी से सीढ़ियां चढ़ गयी थी।

घर लौटा तो देर तक उसके ख्याल दिल में गुदगुदी मचाये रहे। दूसरी-तीसरी मुलाकात में ही इतनी फ्रैंकनेस। उसका साथ सुखद लगने लगा है। देखें, ये मुलाकातें क्या रुख लेती हैं। बेशक उसके बारे में सोचना अच्छा लग रहा है लेकिन उसे ले कर कोई भी सपना नहीं पालना चाहता।

अब तक तो सब ने मुझे छला ही है। कहीं यहां भी...!

बिल्लू को गये अभी आठ दिन भी नहीं बीते कि दारजी की चिट्ठी आ पहुंची है।

समझ में नहीं आ रहा, यहां से भाग कर अब कहां जाऊं। वे लोग मुझे मेरे हाल पर छोड़ क्यों नहीं देते। क्या यह काफी नहीं है उनके लिए कि मैं उन पर किसी भी किस्म का बोझ नहीं बना हुआ हूँ। मैंने आज तक न उनसे कुछ मांगा है न मांगूंगा। फिर उन्हें क्या हक बनता है कि इतनी दूर मुझे ऐसे पत्र लिख कर परेशान करें।

लिखा है दारजी ने

- बरखुरदार

बिल्लू के मार्फत तेरे समाचार मिले और हम लोगों के लिए भेजा सामान भी। बाकी ऐसे सामान का कोई क्या करे जिसे देने वाले के मन में बड़ों के प्रति न तो मान हो और न उनके कहे के प्रति कोई आदर की भावना। हम तो तब भी चाहते थे और अब भी चाहते हैं कि तू घर लौट आ। पुराने गिले शिकवे भुला दे और अपना घर-बार की सोच। आखर उमर हमेशा साथ नहीं देती। तू अट्टाइस-उनतीस का होने को आया। हुण ते करतारे वाला मामला भी खतम हुआ। वे भी कब तक तेरे वास्ते बैठे रहते और लड़की की उमर ढलती देखते रहते। हर कोई वक्त के साथ चला करता है सरदारा.. और कोई किसी का इंतजार नहीं करता। हमने बिल्लू को तेरे पास इसी लिए भेजा था कि टूटे-बिखरे परिवार में सुलह सफाई हो जाये, रौनक आ जाये, लेकिन तूने उसे भी उलटा सीधा कहा और हमें भी। पता नहीं तुझे किस गल्ल का घमंड है कि हर बार हमें ही नीचा दिखाने की फिराक में रहता है। बाकी हमारी दिली इच्छा थी और अभी भी है कि तेरा घर बस जाये लेकिन तू ही नहीं चाहता तो कोई कहां तक तेरे पैर पकड़े। आखर मेरी भी कोई इज्जत है कि नहीं। अब हमारे सामने एक ही रास्ता बचता है कि अब तेरे बारे में सोचना छोड़ कर बिल्लू और गोलू के बारे में सोचना शुरू कर दें। कोई मुझसे यह नहीं पूछने आयेगा कि दीपे का क्या हुआ। सबकी निगाह तो अब घर में बैठे दो जवान जहान लड़कों की तरफ ही उठेगी।

एक बार फिर सोच ले। करतारा न सही, और भी कई अच्छे रिश्तेवाले हमारे आगे पीछे चक्कर काट रहे हैं। अगर बंबई में ही कोई लड़की देख रखी हो तो भी बता, हम तेरी पसंद वाली भी देख लेंगे।

तुम्हारा,

दारजी...।

अब ऐसे खत का क्या जवाब दिया जाये!

[शीर्ष पर जाएँ](#)

>>पीछे>> >>आगे>>

देस बिराना  
सूरज प्रकाश

[अनुक्रम](#)

## अध्याय 3

[पीछे](#)  
[आगे](#)

अलका दीदी छेड़ रही हैं - कै सी लगती है गोल्डी?

- क्यों क्या हो गया हो उसे? मैं अनजान बन जाता हूँ।

- ज्यादा उड़ो मत, मुझे पता है आजकल दोनों में गहरी छन रही है।

- ऐसा कुछ भी नहीं है दीदी, बस, दो-एक बार यूँ ही मिल गये तो थोड़ी बहुत बात हो गयी है वरना वो अपनी राह और मैं अपनी राह?

- अब तू मुझे राहों के नक्शे तो बता मत और न ये बता कि मुझे कुछ पता नहीं है, गोल्डी बहुत ही शरीफ लड़की है। तुझसे उसकी जो भी बातें होती हैं मुझे आ कर बता जाती है। बल्कि तेरी बहुत तारीफ कर रही थी कि इतनी ऊंची जगह पहुंच कर भी दीपजी इतने सीधे सादे हैं।

- गोल्डी अच्छी लड़की है लेकिन आपको तो पता ही है मैं जिस दौर से गुजर रहा हूँ वहाँ किसी भी तरह का मोह पालने की हिम्मत ही नहीं ही नहीं होती। बहुत डर लगता है दीदी अब इन बातों से। वैसे भी पांच-सात मुलाकातों में किसी को जाना ही कितना जा सकता है।

- उसकी चिंता मत कर। रोज़-रोज़ मिलने से वैसे भी प्यार कम हो जाता है। तू मुझे सिर्फ ये बता कि उसके बारे में सोचना अच्छा लगता है या नहीं?

- अब जाने भी दो दीदी, पिछले कई दिनों से उसे देखा भी नहीं।

- बाहर गयी हुई थी। आज शाम को ही लौटी है। अभी फोन आया था। पूछ रही थी तुझे। आज आयेगी यहाँ। जी भर के देख लेना। तुम दोनों खाना यहीं खा रहे हो।

हम दोनों गोल्डी की बात कर ही रहे हैं कि दरवाजे की घंटी बजी। दीदी ने बता दिया है - जा, अपनी मेहमान को रिसीव कर।

- आपको कैसे पता वही है? मैं हैरानी से पूछता हूँ।

- अब तेरे लिए ये काम भी हमें ही करना पड़ेगा। कदमों की आहट, कॉलबैल की आवाज पहचाननी तुझे चाहिये और बता हम रहे हैं। जा दरवाजा खोल, नहीं तो लौट जायेगी।

दरवाजे पर गोल्डी ही है। हँसते हुए भीतर आती है। हाथ में मेरी किताबें हैं।

- हम तेरी ही बात कर रहे थे। दीदी उसे बताती हैं।

- दीपजी ज़रूर मेरी चुगली खा रहे होंगे कि मैं उनकी किताबें लेकर बिना बताये शहर छोड़ कर भाग गयी हूँ। इसीलिए यहां आने से पहले सारी किताबें लेती आयी हूँ।

- आपको हर समय यही डर क्यों लगा रहता रहता है कि आपकी ही चुगली खायी जा रही है। आपकी तारीफ भी तो हो सकती है।

- आपके जैसा अपना इतना नसीब कहां कि कोई तारीफ भी करे। खैर, तो क्या बातें हो रही थी हमारी?

- आज दीप तुझे आइसक्रीम खिलाने ले जा रहा है।

- वॉव !! सिर्फ हमें ही क्यों ? आपको भी क्यों नहीं।

- आपके जैसा अपना नसीब कहां। दीदी ज़ोर से हँसती हैं।

हम देर तक यूँ ही हलकी-फुलकी बातें करते रहे हैं। जब आइसक्रीम के लिए जाने का समय आया तब तक चुन्नू सो चुका है। मैं आइसक्रीम वहीं ले आया हूँ।

वापिस जाते समय पूछा है गोल्डी ने - कुछ किताबें बदल लें क्या?

- ज़रूर .... ज़रूर। चलिये।

किताबें चुन लेने के बाद वह जाने के लिए उठी है। जब हम दरवाजे पर पहुंचे हैं तो उसने छेड़ा है - आज अपने मेहमान को फिर चाय पिलाना भूल गये जनाब....और वह तेजी से नीचे उतर गयी है।

मैं हँसता हूँ - ये लड़की भी अजीब है। रिश्तों में ज़रा सी भी औपचारिकता का माहौल बरदाश्त नहीं कर सकती। अब उसे ले कर मेरे मन में अक्सर धुकधुकी होने लगती है। - गोल्डी आइ हैव स्टार्टेड लविंग यू.. लेकिन क्या मैं ये शब्द उससे कभी कह पाऊंगा !

दीदी को पता चल गया है कि हम दोनों अक्सर मिलते हैं। इसी चक्कर में हम दोनों ही अब उतने नियमित रूप से दीदी के घर नहीं जा पाते। गोल्डी कभी चर्चगेट आ जाती है तो हम मैरीन ड्राइव पर देर तक घूमते रहते हैं। खाना भी बाहर एक साथ ही खा लेते हैं। मैं और गोल्डी रोजाना नयी जगह पर नये खाने की तलाश में भटकते रहते हैं। दोनों पूरी शाम खूब मस्ती करते हैं। उसके जन्म दिन पर मैंने उसे जो वॉकमैन दिया था, वह उसे हर समय लगाये रहती है। मेरी बात सुनने के लिए उसे बार-बार ईयर फोन निकालने पड़ते हैं लेकिन बात सुनते ही वह फिर से ईयर फोन कानों में अड़ा लेती है।



गोल्डी ने मेरे जीवन में रंग भर दिये है। एक ही बार में कई कई रंग। उसके संग-साथ में अब जीवन सार्थक लगने लगा है। उसने जबरदस्ती मेरा जनम दिन मनाया। सिर्फ हम दोनों की पार्टी रखी और मुझे एक खूबसूरत रेडीमेड शर्ट दी। मेरी याद में मेरा पहला जनमदिन उपहार। उसके स्नेह से अब जीवन जीने जैसा लगने लगा है और बंबई शहर रहने जैसा। शामें गुजारने जैसी और दिन उसके इंतज़ार करने जैसा। बेशक हम दोनों ने ही अभी तक मुंह से प्यार जैसा कोई शब्द नहीं कहा है लेकिन पता नहीं, इतने नज़दीकी संबंध जीने के बाद ये ढाई शब्द कोई मायने भी रखते हैं या नहीं। कुल मिला कर मेरे जीवन में गोल्डी की मौजूदगी मुझे एक विशिष्ट आदमी बना रही है।

कमरे पर पहुंचा ही हूं कि मेज पर रखा लिफाफा नज़र आया है। गोल्डी का खत है। उससे आज मिलना ही है। वह डिनर दे रही है। उसके लिए मैंने कुछ अच्छी किताबें खरीद रखी हैं। कमरे पर किताबें लेने और चेंज करने आया हूं। हैरान हो रहा हूं, जब मिल ही रहे हैं तो खत लिखने की ज़रूरत क्यों पड़ गयी है।

लिफाफा खोलता हूं। सिर्फ तीन पंक्तियां लिखी हैं -

- दीप

आज और अभी ही एक प्रोजेक्ट के सिलसिले में हैदराबाद जाना पड़ रहा है। पता नहीं कब लौटना हो। तुमसे बिना मिले जाना खराब लग रहा है, लेकिन सीधे एयरपोर्ट ही जा रही हूं।

कान्टैक्ट करूंगी।

सी यू सून..

लॉट्स ऑफ लव।

गोल्डी।

मैं पत्र हाथ में लिये धम्म से बैठ गया हूं। तो ....गोल्डी भी गयी..। एक और सदमा...। कम से कम मिल कर तो जाती!! फोन तो कर ही सकती थी। रोज़ ही तो करती थी फोन। कहीं भी होती थी बता देती थी और वहां से चलने से पहले भी फोन ज़रूर करती थी। आज ही ऐसी कौन सी बात हो गयी। पता नहीं क्यों लग रहा है, यह सी यू सून शब्द भी धोखा दे गये हैं। ये शब्द अब हम दोनों को कभी नहीं मिलायेंगे।

मेरी आंखें नम हो आयी हैं। अचानक सब कुछ खाली-खाली सा लगने लगा है। सब कुछ इतनी जल्दी निपट गया? अपने आप पर हँसी भी आती है - पता नहीं हर बार ये सब मेरे साथ ही क्यों होता है। अभी खत हाथ में लिये बैठा ही हूं कि दीदी सामने दरवाजे पर नज़र आयी है। मैं तेजी से अपनी गीली आंखें पोंछता हूं। उनके सामने कमज़ोर नहीं पड़ना चाहता। मुस्कराता हूं। आखिर अपना उदास चेहरा उन्हें क्यों दिखाऊं!! लेकिन यह क्या !! दीदी की आंखें लाल हैं। साफ लग रहा है, वे रोती रही हैं। मैं चुपचाप खड़ा रह गया हूं। दीदी अचानक मेरे पास आती हैं और मेरे कंधे से लग कर सुबकने लगती हैं। मैं समझ गया हूं कि गोल्डी उन्हें सब कुछ बता गयी है। मैं संकट में पड़ गया हूं। कहां तो अपने आंसू छुपाना चाहता था और कहां दीदी के आंसू पोंछने की ज़रूरत आ पड़ी है। मैं उनके हाथ पर हाथ रखता हूं। उनसे आंखें मिलती हैं। मैं गोल्डी का खत उन्हें दिखाता हूं और अपनी सारी पीड़ा भूल कर उन्हें

चुप कराने की कोशिश करता हूँ - आप बेकार में ही परेशान हो रही हैं दीदी। मुझे इन सारी बातों की अब तो आदत पड़ गयी है। आप कहां तक और कब तक मेरे लिए आंसू बहाती रहेंगी।

जबरदस्ती हँसती हैं दीदी - पगले में तेरे लिए नहीं, उस पागल लड़की के लिए रोती हूँ।

- क्यों ? उसके लिए रोने की क्या बात हो गयी? कम से कम मैं तो उसे आपसे ज्यादा ही जानता था। वह ऐसी तो नहीं ही थी कि कोई उसके लिए आंसू बहाये।

- इसीलिए तो रो रही हूँ। एक तरफ तेरी तारीफ किये जा रही थी और दूसरी तरफ तेरे लिए अफसोस भी कर रही थी कि तुझे इस तरह धोखे में रख कर जा रही है।

- क्या मतलब ? धोखा कैसा ? आखिर ऐसा क्या हो गया है ?

- तुझे उसने लिखा है कि वह एक प्रोजेक्ट के लिए हैदराबाद जा रही है और उसने तुझे सी यू सून् लिखा है....।

- इसके बावजूद मैं जानता हूँ दीदी वह अब कभी वापिस नहीं आयेगी।

- मैं तुझे यही बताना चाहती थी। दरअसल उसने मुझे कई दिन पहले ही बता दिया था कि वह हैदराबाद जा रही है। किसी प्रोजेक्ट के लिए। आज ही जाते-जाते उसने बताया कि दरअसल ट्रांसफर पर शादी के लिए जा रही है।

- शादी के लिए ?

- हां दीप, वह और उसका इमिडियेट बॉस शादी कर रहे हैं। उसका बॉस भी इंदौर का है और उससे सीनियर बैच का है। दरअसल वह तुम्हारी इतनी तारीफ कर रही थी और साथ ही साथ अफसोस भी मना रही थी कि इस तरह से .....

मैंने खुद पर काबू पा लिया है। जानता हूँ अब रोने-धोने से कुछ नहीं होने वाला। माहौल को हलका करने के लिए पूछता हूँ

- मैं भी सुनूँ, आखिर वह क्या कर रही थी मेरे बारे में?

- कह रही थी कि उसने अपनी ज़िंदगी में दीपजी जैसा ईमानदार, मेहनती, सैल्फमेड और शरीफ आदमी नहीं देखा। उनकी ज़िंदगी में जो भी लड़की आयेगी, वह दुनिया की सबसे खुशनसीब लड़की होगी।

मैं हँसा हूँ - तो उसने दुनिया की सबसे खुशनसीब लड़की बनने का चांस क्यों खो दिया?

- अब मैं क्या बताऊँ। वह खुद इस बात को लेकर बहुत परेशान थी कि उसे इस तरह का फैसला करना पड़ रहा है। दरअसल वह तुम्हें कभी उस रूप में देख ही नहीं पायी कि ... ..

- तो इसका मतलब दीदी, उन दोनों ने पहले से सब कुछ तय कर रखा होगा?

- यह तो उसने नहीं बताया कि क्या मामला है लेकिन तुम्हें इस तरह से छोड़ कर जाने में उसे बहुत तकलीफ हो रही थी।

- अब जाने दो, दीदी, मैं उन्हें दिलासा देता हूँ - आपको तो पता ही है मेरे हाथों में सिर्फ दुर्घटनाओं की ही लकीरें हैं। इन्हें न तो मैं बदल सकता हूँ और न मिटा ही सकता हूँ। गोल्डी पहली और आखिरी लड़की तो नहीं है।

मैं हँसता हूँ - अब आप अपना सुंदर, गृह कार्य में दक्ष और योग्य कन्या खोज अभियान जारी रख सकती हैं।

दीदी आखिर हँसी हैं - वो तो मैं करूंगी ही लेकिन गोल्डी को ऐसा नहीं करना चाहिये था। इधर तेरे साथ इतनी आत्मीयता और उधर....

मैं जानता हूँ कि दीदी कई दिनों तक इस बात को लेकर अफसोस मनाती रहेंगी कि गोल्डी मुझे इस तरह से धोखा दे कर चली गयी है।

गोल्डी के इस तरह अचानक चले जाने से मैं खाली-खाली सा महसूस करने लगा हूँ। हर बार मेरे साथ ही ऐसा क्यों होता है कि मेरे दिल को हर आदमी खेल का मैदान समझ कर दो चार किक लगा जाता है। जब तक अकेला था, अपने आप में खुश था। किसी के भरोसे तो नहीं था और न किसी का इंतज़ार ही रहता था। गोल्डी ने आ कर पहले मेरी उम्मीदें बढ़ायीं। यकायक चले जा कर मेरे सारे अनुशासन तहस-नहस कर गयी है। पहले सिर्फ अकेलापन था, अब उसमें खालीपन भी जुड़ गया है जो मुझे मार डाल रहा है। समझ में नहीं आता, उसने मेरे साथ जानते-बूझते हुए ये खिलवाड़ क्यों किया!

एक तरह से अच्छा ही हुआ कि वह मुझसे मिले बिना ही चली गयी है।

घर से धमकी भरे पत्र आने अभी भी बंद नहीं हुए हैं। आये दिन या तो कोई मांग चली आती है या वे परेशान करने वाली कोई ऐसी बात लिख देते हैं कि न सहते बने न जवाब देते। मैं तो थक गया हूँ। पूरी दुनिया में कोई भी तो अपना नहीं है जो मेरी बात सुने, मेरे पक्ष में खड़ा हो और मेरी तकलीफों में साझेदारी करे। गुड्डी बेचारी इतनी छोटी और भोली है कि उसे अभी से इन दुनियादारी कर बातों में उलझाना उसके साथ अत्याचार करने जैसा लगता है। अलका दीदी मेरे लिए इतना करती हैं और मुझे इतना मानती हैं लेकिन उनकी अपनी गृहस्थी है। अपनी तकलीफें हैं। उन्हें भी कब तक मैं अपने दुखड़े सुना-सुना कर परेशान करता रहूँ। अब तो यही दिल करता है कि कहीं दूर निकल जाऊँ। जहां कोई भी न हो। न कहने वाला, न सुनने वाला, न कोई बात करने वाला ही। न कोई अपना होगा और न कोई मोह ही पालूंगा और न बार-बार दिल टूटेगा।

इतने दिनों के आत्ममंथन के बाद मैंने अब सचमुच बाहर जाने के बारे में गंभीरता से सोचना शुरू कर दिया है। इसके लिए अलग अलग चैनलों की खोज करनी भी शुरू कर दी है कि कहां-कहां और कैसे-कैसे जाया जा सकता है। जब बोस्टन युनिवर्सिटी में पीएच डी कर रहा था तो कुछेक स्थानीय लोगों के पते वगैरह लिये थे। दो एक फैकल्टी मेम्बर्स से भी वहीं नौकरी के बारे में हलकी सी बात हुई थी। उस वक्त तो सारे प्रस्ताव ठुकरा कर चला आया था कि अपने ही देश की सेवा करूंगा, लेकिन अब उन्हीं के पते खोज कर वहां के बारे में पूछ रहा हूँ। अखबारों में विदेशी नौकरियों के विज्ञापन भी देखने शुरू कर दिये हैं। हालांकि देश छोड़ने के बारे में मैं फैसला कर ही चुका हूँ, विदेश जाने के लिए इच्छुक होने के बावजूद विदेशी नौकरी के लिए थोड़ा हिचकिचा भी रहा हूँ क्योंकि आजकल

विदेशी नौकरी का झांसा दे कर सब कुछ लूट लेने वालों की बाढ़-सी आयी हुई है और आये दिन इस तरह की खबरों से अखबार भरे रहते हैं।

ऑफिस में कोई बता रहा था कि आजकल विदेश जाने का सबसे सुरक्षित तरीका है कि वहां रहने वाली किसी लड़की से ही शादी कर लो। बेशक घर जंवाई बनना पड़ सकता है लेकिन न वीजा का झंझट, न नौकरी का और न ही रहने-खाने का।

बात हालांकि बहुत कन्विसिंग नहीं है लेकिन इस पर विचार तो किया ही जा सकता है। हो सकता है इस तरह का कोई प्रोजेक्ट ही क्लिक कर जाये। यह रास्ता भी मैंने बंद नहीं रखा है। बाहर बेशक नौकरी मिल ही जायेगी लेकिन सिर्फ नौकरी से इस अकेलेपन की कैद से छुटकारा तो नहीं ही मिल पायेगा। उसके लिए नये सिरे से जद्दोजहद करनी पड़ेगी। उसके लिए यहां आते भी रहना पड़ेगा। मैं इसी से बचना चाहता हूं और सोच रहा हूं कि कोई बीच का रास्ता मिल जाये तो बेहतर। नौकरी के विज्ञापनों के साथ-साथ मैंने अब अखबारों के इस तरह के मैट्रिमोनियल कॉलमों पर ध्यान देना शुरू कर दिया है। आजकल इसी तरह के पत्राचार में उलझा रहता हूं।

आखिर मेरी मेहनत रंग लायी है। शादी के लिए ही एक बहुत अच्छा प्रस्ताव अचानक ही सामने आ गया है। अब मैं इस दुनिया से काफी दूर जा पाऊंगा। बेशक वह मेरी मनमाफिक दुनिया नहीं होगी लेकिन कम से कम ऐसी जगह तो होगी जहां कोई मुझे परेशान नहीं करेगा और सतायेगा नहीं।

मुझे बताया गया है कि गौरी बीए पास है और इन कम्पनियों में से एक की फुल टाइम डाइरेक्टर है। यह मेरी मर्जी पर छोड़ दिया गया है कि दामाद बन जाने के बाद चाहे तो इन्हीं में से किसी कम्पनी का सर्वेसर्वा बन सकता हूं या फिर कहीं और अपनी पंसद और योग्यता के अनुसार अलग से काम भी देख सकता हूं। ऐसी कोई भी नौकरी तलाशने में मेरी पूरी मदद करने की पेशकश की गयी है। सारी जानकारी के भेजने के बीच और उनके यहां आ कर मिलने के बीच उन्होंने महीने भर का भी समय नहीं लिया है। ट्रेवल डॉक्यूमेंट्स की तैयारी में जो समय लगेगा वही समय अब मेरे पास बचा है।

यह समय मेरे लिए बहुत मुश्किल भरा है। मैंने इस संबंध में अब तक अपने घर में कुछ भी नहीं लिखा है। लिखने का मतलब ही नहीं है।

घर का तो ये हाल है कि वे तो हर खत के जरिये एक नया शगूफा छेड़ देते हैं। मैं अभी उनकी दी एक परेशानी से मुक्त हुआ नहीं होता कि वे परेशान करने वाली दूसरी हरकत के साथ फिर हाज़िर हो जाते हैं। आजकल वे बिल्लू और गोलू की शादी की तारीखें तय करके भेजने में लगे हुए हैं। इन सारे खतों के जवाब में मैं बिलकुल चुप बना हुआ हूं। उनके किसी खत का जवाब ही नहीं देता। मैं वहां नहीं पहुंचता तो यह तारीख आगे खिसका दी जाती है।

सारी तैयारियां हो चुकी हैं। नौकरी से इस्तीफा दे दिया है और ऑफिस को बता दिया है - जाने से एक दो दिन पहले तक काम पर आता रहूंगा। अलका दीदी बहुत उदास हो गयी हैं। आखिर उनका मुंहबोला भाई जो जा रहा है। रोती हैं वे - कितनी मुश्किल से तो तुम्हारे जैसा हीरा भाई मिला था, वो भी रूठ कर जा रहा है।

मैं समझाता हूं - मैं आपसे रूठ कर थोड़े ही जा रहा हूं। अब हालात ऐसे बना दिये गये हैं मेरे लिए कि अब यहां और रह पाना हो नहीं पायेगा। आप तो देख ही रही हैं मेरे परिवार को। किस तरह सताया जा रहा है मुझे। कोई दिन भी

तो ऐसा नहीं होता जब उनकी तरफ से कोई डिमांड या परेशान करने वाली बात न आती हो।

- क्यों अब क्या नयी डिमांड आ गयी है?

- आप खुद ही देख लो। कल की ही डाक में आयी है ये। यह कहते हुए मैं दारजी की ताजा चिट्ठी उनके आगे कर देता हूँ। वे ही तो मेरी हमराज़ हैं यहां पर आजकल। वरना घर वालों ने तो मुझे पागल कर छोड़ने में कोई कसर नहीं छोड़ रखी है।

वे पढ़ती हैं ।

- बरखुदार

तेरी तरफ से हमारी पिछली तीन-चार चिट्ठियों का कोई जवाब नहीं आया है। क्या माने हमें इसे - हमारे प्रति लापरवाही, बेरुखी या फिर आलस। तीनों ही बातें रिश्तों में खटास पैदा करने वाली हैं। हम यहां रोज ही तेरी डाक का इंतजार करते रहते हैं कि आखिर तूने कुछ तो तय किया होगा। हमारे सारे प्रोग्राम धरे के धरे रह जाते हैं।

फिलहाल खबर यह है कि आजकल बछित्तर यहां आया हुआ है। वे सारा मकान बेचना चाहते हैं। इसमें वैसे तो पांच हिस्से बने हुए हैं जो एक साथ होते हुए भी अलग अलग माने जा सकते हैं। वे लोग मकान एक ही पार्टी को बेचना चाहते हैं लेकिन अगर बड़ी पार्टी न मिली तो अलग-अलग हिस्से भी बेच सकते हैं।

तुझे तो पता ही है कि उनकी और हमारी एक दीवार आगे से पीछे तक सांझी है। इस दीवार के साथ साथ उनका एक वरांडा, रसोई, लैट्रीन और आगे-पीछे दो कमरे बने हुए हैं। ये हिस्सा जोगी का है। मैंने बछित्तरे से बात की है। वह इस बात के लिए राजी हो गया है कि अगर हम उसका यह वाला हिस्सा ले लेते हैं तो वह दूसरी पार्टियों के साथ इस हिस्से की बात ही नहीं चलायेगा।

मकान अभी हाल ही में बनाया गया है और उसमें कभी कोई रहा ही नहीं है। उनके पास जैसे-जैसे पैसा आता गया, वे एक के बाद एक हिस्सा बनाते गये थे। हम सब का दिल है कि बछित्तरे से अगर पूरा मकान नहीं तो कम से कम ये वाला हिस्सा तेरे लिए खरीद ही लें। वह हमारा लिहाज करते हुए इतने बड़े हिस्से का सिर्फ दो लाख मांग रहा है वरना तुझे तो पता ही है आजकल मकानों की कीमतें आसमान को छू रही हैं। आज नहीं तो कल को तू यहां रहने के लिए आयेगा ही। तब तक इसी मकान की कीमत पांच-सात गुना बढ़ चुकी होगी। जायदाद बनाने का इससे अच्छा मौका फिर नहीं मिलेगा। मकान बिलकुल तैयार है और अच्छा बना हुआ भी है। मैं यह मान कर चल रहा हूँ कि तुझे यह पेशकश मंज़ूर होगी। तू बेशक हमारी परवाह न करे हमें तो तेरा ही ख्याल रहता है कि तेरा घर बार बन जाये। यही सोच कर मैं आजकल मैं ही इंतज़ाम करके उसे बयाना दे दूंगा। तू वापसी डाक से लिख, कब तक पूरी रकम का इंतज़ाम कर पायेगा। तेरे ऑफिस से मकान के लिए कर्जा तो मिलता ही होगा।

बाकी हम बेसब्री से तेरे खत की राह देख रहे हैं। रकम मिलते ही रजिस्ट्री करवा देंगे। अगर जो तुझे अपने बूढ़े बाप पर भरोसा हो तो ये काम मैं करवा दूंगा वरना तू खुद आ कर ये नेक काम कर जाना। इस बहाने हम सबसे मिल भी लेगा। कितना अरसा हो गया है तुझे गये। बेबे तुझे सुबह शाम याद करती है।

जवाब जल्दी देना कि कब तक रकम आ जायेगी।

तेरा ही

दारजी

अलका दीदी ने पत्र पढ़ कर लौटा दिया है और चाय बनाने चली गयी हैं। मैं जानता हूँ वे अपनी आंखों के आंसू मुझसे छुपाने के लिए ही रसोई में गयी हैं। उन्हें नार्मल होने में कम से कम एक घंटा लगता है। लेकिन आश्चर्य, वे रसोई से मुस्कराती हुई वापिस आ रही हैं। चाय के साथ मट्टी भी है।

आते ही मुझे छेड़ती हैं - चलो, तेरी एक समस्या तो हल हुई। अब तो बना-बनाया घर भी मिल रहा है। मेरी मान, तू उसी कुड़ी, क्या नाम था उसका, संतोष कौर से शादी कर ही ले। दोनों काम एक ही साथ ही निपटा दे। इस बहाने हम देहरादून भी देख लेंगे।

- दीदी, यहां मेरी जान पर बनी हुई है और आपको मज़ाक सूझ रहा है।

- सच्ची कह रही हूँ। तेरे दारजी को भी मानना पड़ेगा। तेरे लिए एक के बाद एक चुगगा तो ऐसे डालते हैं कि पूछो मत। कुछ पैसे-वैसे भेजने की ज़रूरत नहीं है। तू आराम से इस चिट्ठी को भी हजम कर जा। उनके पास बयाने तक के तो पैसे नहीं हैं, लिखा है, इंतजाम करके बयाना दे दूंगा। और दो लाख का मकान खरीद रहे हैं। उनके चक्करों में पड़ने की ज़रूरत नहीं है।

- आपकी बातों से मेरी आधी चिंता दूर हो गयी है। वैसे तो मैं भी कुछ भेजने वाला नहीं था, अब आपके कहने के बाद तो बिलकुल भी इस चक्कर में नहीं फंसूंगा।

यहां से जाने से पहले गुड्डी को आखिरी पत्र लिख रहा हूँ

- प्यारी बहना गुड्डी,

जब तक तुझे यह पत्र मिलेगा मैं यहां से बहुत दूर जा चुका होऊंगा। मैंने बहुत सोच समझ कर देश छोड़ कर लंदन जाने का फैसला किया है। बेशक आखिरी उपाय के रूप में ही किया है। मेरे सामने और कोई रास्ता नहीं था। वैसे मेरी बहुत इच्छा थी कि कम से कम तेरी पढ़ाई पूरी होने तक और कहीं ठीक-ठाक जगह तेरी नौकरी का पक्का करके और तेरा अच्छा सा रिश्ता कराने के बाद ही मैं यहां से जाता लेकिन मैं ये दोनों ही काम पूरे किये बिना भाग रहा हूँ। इसे मेरा एक और पलायन समझ लेना लेकिन मुझसे अब और बरदाश्त नहीं होता। दारजी की धमकी भरी चिट्ठियां और बिल्लू के हिकारत भरे खत अब मुझसे और बरदाश्त नहीं होते। ये लोग मुझे क्यों चैन से नहीं रहने देते। मैं किसी दिन पागल हो जाऊंगा ये सब पढ़ पढ़ कर। मुझे अभी भी अफसोस होता है कि एक बार घर छोड़ देने के बाद मैं क्यों वापिस लौटा जबकि मुझे पता था कि दारजी जिस मिट्टी के बने हुए हैं उनमें कम से कम इस उम्र में बदलाव की तो कोई उम्मीद ही नहीं की जा सकती। अफसोस तो यही है कि बिल्लू भी दारजी के नक्शे कदम पर चल रहा है। वह भी अभी से वही भाषा बोलने लगा है। तो हालात अब इतने बिगड़ गये हैं कि मेरे लिए और निभाना हो नहीं हो पायेगा। जब से दारजी वगैरह को मेरा पता मिला है, हर महीने कोई न कोई डिमांड आ जाती है। अब तक मैं सत्तर अस्सी हजार रुपये भेज चुका हूँ और तकलीफ की बात यही है कि मेरा छोटा भाई मुझे धमकी दे जाता है कि मैं उसकी शादी में रोड़े अटका रहा हूँ। मेरी तरफ से वो एक की जगह चार शादियां करे। मुझसे जो बन

पड़ेगा मैं करूंगा भी लेकिन कम से कम तरीके से तो पेश आये। मैंने तुझे जानबूझ कर नहीं लिखा था कि जब वह यहां आया था तो किस तरह की भाषा में मुझसे क्या-क्या बातें करके गया था। मुझे लिखते हुए भी शर्म आती है। जब वह जाते समय स्टेशन पर मुझे इस तरह की बातें सुना रहा था तो मैंने उससे कहा था - तू कहे तो मैं लिख के दे देता हू कि तू मुझसे पहले शादी कर ले लेकिन फार गॉड सेक, मुझे ये मत बता कि कहां ज्यादा दहेज मिल रहा है और मैं कहां शादी कर लूं। तू अपनी फिकर कर। मेरी रहने दे। तो पता है उसने क्या कहा। कहने लगा - ठीक है, आप दारजी को यही बात लिख दो। मैंने ये सारी बातें एक खत में लिखी थीं लेकिन वह खत तुझे डालने की हिम्मत ही नहीं जुटा पाया और वह खत मैंने फाड़ दिया था।

तो गुड्डी, अब मैं इस इकतरफा पैसे वाले प्यार से थक चुका हूं। वैसे सच तो यह है कि मैं इस खानाबदोशों वाली जिंदगी से ही थक चुका हूं। कितने साल हो गये संघर्ष करते हुए। अकेले लड़ते हुए और हासिल के नाम पर कुछ भी नहीं। मैं यहां से सब कुछ छोड़-छाड़ कर कहीं दूर निकल जाना चाहता हूं। मैं जिम्मेदारियों से नहीं भागता लेकिन मुझे भी तो लगे कि मेरी भी कहीं कदर है। मुझे नहीं पता था कि मुझे घर लौटने की इतनी बड़ी कीमत चुकानी पड़ेगी। शायद मेरे हिस्से में घर लिखा ही नहीं है।

एक और मोरचे पर भी मुझे करारी हार का सामना कर पड़ा है। उस बात ने भी मुझे भीतर तक तोड़ दिया है। मैं तुझे यह खबर देने ही वाला था कि एक बहुत ही सुंदर और गुणी लड़की से मेरा परिचय हुआ है और आगे जा कर शायद कुछ बात बने। इस रिश्ते से मुझे बहुत मानसिक बल मिला था और मैं उम्मीद कर रहा था कि ये परिचय मेरी जिंदगी में एक खूबसूरत मोड़ ले कर आयेगा, लेकिन अफसोस, इस रिश्ते का महल भी रेत के घर की तरह ढह गया और मैं एक छोटे बच्चे की तरह बुरी तरह छला गया। मैं हद दरजे तक अकेला और तनहा हूं, पहले भी अकेला था और आज भी हूं। एक तू ही है जिससे मैं अपने दिल की बात कह पाता हूं। इस अकेलेपन और बार-बार की ठोकरों के बाद ही सोच समझ कर मैंने लंदन जाने का फैसला कर लिया है। फैसला सही है या गलत यह तो वक्त ही बतायेगा। यूँ समझ ले कि मैंने खुद को हालात पर छोड़ दिया है। जो भी पहला मौका सामने आया है, उसके लिए हां कर दी है।

लंदन का कोई हांडा परिवार है। वे लोग पिछले दिनों यहां आये हुए थे। वहां उनकी कई कंपनियां हैं, बीस पच्चीस। उनकी लड़की है गौरी। वह भी आयी हुई थी। लड़की ठीक-ठाक लगी। उसी से मेरी शादी तय हुई है। शादी की कोई शर्तें नहीं हैं। मैं चाहूं तो अपना कोई काम काज तलाश सकता हूं या चाहूं तो उनकी किसी कम्पनी में भी अपनी पसंद का काम देख सकता हूं। सब कुछ मुझ पर छोड़ दिया गया है। ट्रेवल फार्मेलिटीज पूरी होते ही निकल जाऊंगा। गौरी की एक तस्वीर भेज रहा हूं।

मैं जानता हूं कि यह मेरी वादा खिलाफी है और मैं अपने वादे पूरे किये बगैर तुझे इस हालत में छोड़ कर जा रहा हूं। मुझे पता है तेरी लड़ाई बहुत मुश्किल है। जब मैं ही नहीं लड़ पाया इनसे, फिर तू तो लड़की है। मैं सोच-सोच कर परेशान हूं कि तू अपनी लड़ाई अकेले के बलबूते पर कैसे लड़ेगी। लेकिन एक बात याद रखना, हम सब को कभी न कभी, कहीं न कहीं जीवन के इस महाभारत में अपने हिस्से की लड़ाई लड़नी होती है। यह महाभारत बहुत ही अजीब होता है। इस महाभारत में हर योद्धा को अपनी लड़ाई खुद ही तय करनी और लड़नी पड़ती है। यहां न तो कोई कृष्ण होता है न अर्जुन। हमें अपने हथियार भी खुद चुनने पड़ते हैं और अपनी रणनीति भी खुद ही तय करनी पड़ती है। कई बार हार-जीत भी कोई मायने नहीं रखती क्योंकि यह तो अंतहीन लड़ाई है जो हमें हर रोज सुबह

उठते ही लड़नी होती है। कभी खुद से, कभी सामने वाले से तो कभी अपनों से तो कभी परायों से। तुझे भी आगे से अपनी सारी लड़ाइयां खुद ही लड़नी होंगी। कई बार ये लड़ाई खुद से भी लड़नी पड़ती है। सबसे मुश्किल होती है ये लड़ाई। लेकिन अगर एक बार आप अपने भीतर के दुश्मन से जीत गये तो आगे की सारी लड़ाइयां आसान हो जाती हैं। तू समझदार है और न तो खुद के खिलाफ ही कोई अन्याय होने देगी। पहले तुझे अपनी कमजोरियों के खिलाफ, अपने गलत फैसलों के खिलाफ और अपने खिलाफ गलत फैसलों के खिलाफ लड़ना सीखना होगा। तय कर ले कि न गलत फैसले खुद लेगी और न किसी को गलत फैसले खुद पर थोपने देगी। तू तो खुद कविताएं लिखती है और तेरी कविताओं में भी तो बेहतर जीवन की कामना ही होती है। कर सकेगी ना यह काम अपनी बेहतरी के लिए। खुद को बचाये रखने के लिए?

तो गुड्डी, मैं तुझे जीवन के इस कुरुक्षेत्र में लड़ने के लिए अकेला छोड़े जा रहा हूँ। मैं अपनी लड़ाई बीच में ही छोड़े जा रहा हूँ। मुझे भी अपनों से लड़ना था और तुझे भी अपनों से ही लड़ना है। मैं तीसरी बार मैदान छोड़ कर भाग रहा हूँ। लड़ना आता है मुझे भी लेकिन अब मुझसे नहीं होगा। बस यही समझ लो। मैं खुद को परास्त मान कर मैदान छोड़ रहा हूँ। कह लो लड़ने से ही इनकार कर रहा हूँ।

मेरे पास लगभग तीन लाख रुपये हैं। इसमें से दो ढाई तरे लिए छोड़े जा रहा हूँ। साइन किये हुए पांच कोरे चैक साथ में भेज रहा हूँ। जब भी तेरी शादी तय हो या तुझे पढ़ाई के लिए जरूरत हो, अपने खाते के जरिये निकलवा लेना..। इन पैसों के बारे में किसी को भी न तो बताने की जरूरत है और न इन्हें किसी के साथ शेयर करने की। किसी भी हालत में नहीं। ये सिर्फ तेरा हिस्सा है..। एक बेघर-बार बड़े भाई की तरफ से छोटी बहन को घर की कामना के साथ एक छोटी सी सौगात।

अपनी किताबें वगैरह जरूरतमंद स्टूडेंट्स के बीच बांट दी हैं। थोड़े से कपड़े और दूसरा सामान है, वे भी जरूरतमंद लोगों को दे जाऊंगा। यहां से मैं अपने जरूरत भर के कपड़े और तेरा बनाया स्वेटर ही साथ ले कर जाऊंगा। वही तो तेरी याद होगी मेरे पास। नंदू को मेरे बारे में बता देना। लंदन पहुंचते ही नया पता भेज दूंगा। अभी दारजी वगैरह को कुछ भी बताने की जरूरत नहीं है। मैं खुद ही खत लिख कर बता दूंगा...।

मन पर किसी तरह का बोझ मत रखना और अपनी पढ़ाई में दिल लगाना।

अफसोस!! अपने वीर की शादी में नाचने-गाने की की तेरी हसरत पूरी नहीं हो पायेगी। वैसे भी अपनी शादी में मैं लड़के वालों की तरफ से अकेला ही तो होऊंगा। तो इस खत में इतना ही...।

तेरा वीर,

दीप.....

सारी तैयारियां हो गयी हैं। सामान से भी मुक्ति पा ली है। तनावों से भी। बेशक एक दूसरे किस्म का, अनिश्चितता का हलका-सा दबाव है। पता नहीं, आगे वाली दुनिया कैसी मिले। जो कुछ पीछे छूट रहा है, अच्छा भी, बुरा भी, उससे अब किसी भी तरह का मोह महसूस करने का मतलब नहीं है। पूरे होशो-हवास में सब कुछ छोड़ रहा हूँ। लेकिन जो कुछ पाने जा रहा हूँ, वह कैसे और कितना मिलेगा, या मिलेगा भी या नहीं, इसी की हलकी-सी आशंका है। उम्मीद भी और वायदा भी। वैसे तो इतना कुछ सह चुका हूँ कि कुछ न मिले तो भी कोई फर्क नहीं पड़ेगा।



आज की आखरी डाक में दारजी का खत है। पत्र खोलने की हिम्मत नहीं हो रही। फिर कोई मांग होगी या मुझे किसी न किसी चक्कर में फांसने की उनकी कोई लुभावनी योजना। सोचता हूँ अब जाते-जाते मैं उनके लिए क्या कर सकता हूँ। पत्र एक तरफ रख देता हूँ। बाद में देखूंगा।

सहार एयरपोर्ट के लिए निकलने से पहले पत्र उठा कर जेब में डाल लिया था। अलका और देवेन्द्र साथ आये थे। मैं सिक्युरिटी एरिया जा रहा हूँ और वे दोनों आंखों में आंसू भरे मुझे विदा करके लौट गये हैं। मैंने आज तक किसी भी परिवार से इतना स्नेह नहीं पाया जितना इन दोनों ने दिया है। दोनों सुखी बने रहें।

उनसे वादा करता हूँ - उन्हें पत्र लिखता रहूंगा।

जेब में कुछ कड़ा महसूस होता है। देखता हूँ - दारजी का ही पत्र है। खोल कर देखता हूँ

- बरखुरदार,

जीते रहो।

एक बार फिर तेरे कारण मुझे उस बछिल्लरे के आगे नीचा देखना पड़ा। वो तो भला आदमी है इसलिए बयाने के पैसे लौटा दिये हैं वरना.... अब तेरे हाथों ये भी लिखा था हमारी किस्मत में। अच्छा खासा घर मिट्टी के मोल मिल रहा था, तेरे कारण हाथ से निकल गया। बाकी खबर यह है कि बिल्लू के लिए एक ठीक-ठाक घर मिल गया है। उम्मीद तो यही है कि बात सिरे चढ़ जायेगी। बाकी रबब राखा। सोचते तो यही हैं कि कुड़माई और लावां फेरे एक ही साथ ही कर लें। पता नहीं अब कैसे निभेगा। तेरी बेबे चाहती है कि तू अब भी आ जाये तो तेरे लिए भी कोई अच्छी सी कुड़ी वेख कर दोनों भराओं की बारात एक साथ निकालें। अगर तुझे मंजूर हो तो तार से खबर कर और तुरंत आ। बाकी अगर तूने क्वारा ही रहने का मन बना लिया हो तो कम से कम बड़े भाई का फरज निभाने ही आ जा। हम लड़की वालों को कहने लायक तो हो सकें कि हमारे घर में कोई बड़ा अफसर है और हम किसी किस्म की कमी नहीं रहने देंगे। बाकी तू खुद समझदार है।

खत मिलते ही अपने आने की खबर देना।

बेबे ने आसीस कही है।

तुम्हारा

दारजी।

तो यह है असलियत। खत लिखना तो कोई दारजी से सीखे। उन्होंने रुपये पैसे को लेकर एक भी शब्द नहीं लिखा है लेकिन पूरा का पूरा खत ही जैसे आवाजें मार रहा है - तेरे छोटे भाई की शादी है और तू घर की हालत देखते हुए मदद नहीं करेगा तो तुझे बड़ा कौन कहेगा...।

सॉरी दारजी और सॉरी बिल्लू जी...अब वाकई देर हो चुकी है। इस समय मैं एयरपोर्ट की लाउंज में बैठा आपका पत्र पढ़ रहा हूँ। अब मैं बैंक, चैक या ड्राफ्ट की सीमाओं से बाहर जा चुका हूँ। रात के बारह बजे हैं। सारे बैंक बंद हो चुके हैं। बैंक खुले भी होते तो भी उसमें रखे सारे पैसे किसी और के नाम हो चुके हैं। वैसे दारजी, आपने दहेज के लेनदेन

की बात तो पक्की कर ही रखी होगी। मैं मदद न भी करूं तो चलेगा। वैसे भी सिर्फ एक घंटे बाद मेरी फ्लाइट है और मैं चाह कर भी न तो अपने छोटे भाई की शादी में शामिल हो पाऊंगा और न ही तुम लोगों को ही इसी महीने लंदन में होने वाली अपनी शादी में बुलवा पाऊंगा।

फ्लाइट का समय हो चुका है। सिक्योरिटी चैक हो चुका है और बोर्डिंग कार्ड हाथ में लिए मैं लाउंज में बैठा हूं।

तो !! अलविदा मेरे प्यारे देश भारत। तुमने बहुत कुछ दिया मुझे मेरे प्यारे देश! बस, एक घर ही नहीं दिया। घर नाम के दो शब्दों के लिए मुझे कितना रुलाया है.. क्या क्या नहीं दिखाया है मुझे..। हर बार मेरे लिए ही घर छलावा क्यों बना रहा। मैं एक जगह से दूसरी जगह भटकता रहा। खोजता रहा कहां है मेरा घर!! जो मिला, वह घर क्यों नहीं रहा मेरे लिए !! आखिर मैं गलत कहां था और मेरा हिस्सा मुझे क्यों नहीं मिला अब तक। अब जा रहा हूं दूसरे देश में। शायद वहां एक घर मिले मुझे!! मेरी राह देखता घर। मेरी चाहत का घर। मेरे सपनों का एक सीधा सादा सा घर। चार दीवारों के भीतर घर जहां मैं शाम को लौट सकूं। घर जो मेरा हो, हमारा हो। कोई हो उस घर में जो मेरी राह देखे। मेरे सुख-दुख की भागीदार बने और अपनेपन का अहसास कराये। जहां लौटना मुझे अच्छा लगे न कि मजबूरी।

सॉरी गुड्डी, तुम्हें दिये वचन पूरे नहीं कर पाया। तुममें हिम्मत जगा कर मैं ही कमजोर निकल गया। अब अपना ख्याल तुम्हें खुद ही रखना है। बेबे मैं तुम्हें कभी सुख नहीं दे सका। हमेशा दुख ही तो दिया है। बाकी तेरे नसीब बेबे। देख ना तेरे दो-दो लड़कों की शादियां हो रही हैं लेकिन बड़ा लड़का छोटे की शादी में नहीं होगा और बड़े की शादी में तो खैर, तुम्हें बुलाया ही नहीं जा रहा है।

मेरी आंखों से आंसू बह रहे हैं। मैंने ऐसा घर तो नहीं चाहा था बेबे..।

मैं घड़ी देखता हूं। जहाज में चढ़ने की घोषणा हो चुकी है।

तभी अचानक सामने बने एसटीडी बूथ की तरफ मेरी निगाह पड़ती है। सोचता हूं, जाते जाते बड़े भाई का तथाकथित फर्ज भी अदा कर दिया जाये। मैं तेजी एसटीडी बूथ की तरफ बढ़ता हूं। नंदू का नम्बर मिलाता हूं।

घंटी जा रही है। आधी रात को आदमी को उठने में इतनी देर तो लगती ही है।

लाइन पर नंदू ही है।

- नंदू सुन, मैं दीपू बोल रहा हूं।

- बोलो भाई, इस वक्त!! खैरियत तो है। वह पूरी तरह जाग गया है।

- तू मेरी बात सुन पूरी। मेरे पास वक्त कम है, मैं बस पांच-सात मिनट में ही लंदन चला जाऊंगा। गुड्डी तुझे पूरी बात बता देगी। आज ही दारजी की चिट्ठी आयी है, बिल्लू की शादी कर रहे हैं वे। मैं यहां सारे खाते बंद कर चुका हूं और मेरे पास पैसे तो हैं लेकिन समय नहीं है।... मैंने गुड्डी के पास कुछ कोरे चैक भेजे हैं। ये पैसे मैंने गुड्डी की पढ़ाई और शादी के लिए अलग रखे थे। वो ये चैक तेरे पास रखवाने आयेगी। तू इसमें से एक चैक पर पचास हजार

की रकम लिख कर पैसे निकलवा लेना और दारजी को देना। करेगा ना मेरा ये काम..? उसके लिए बाद में और भेज दूंगा।

- तू फिकर मत कर। तेरा काम हो जायेगा। अगर गुड्डी चैक नहीं भी लायेगी तो भी दारजी तक रकम पहुंच जायेगी। और कोई काम बोल..?

- बस, रखता हूँ फोन। फ्लाइट के लिए टाइम हो चुका है।

- ओ के गुड लक, वीरा, अपना ख्याल रखना।

- ओ के नंदू। खत लिखूंगा।

मैं फोन रखता हूँ और जहाज की तरफ लपकता हूँ।

तो..मैं .. आखिर देस छोड़ कर परदेस में आ ही पहुंचा हूँ। कब चाहा था मैंने - मुझे इस तरह से और इन वजहों से घर और अपना देस छोड़ना पड़े। घर तो मेरा कभी रहा ही नहीं। दो-दो बार घर छूटा। गोल्डी ज़िंदगी में ताजा फुहार की तरह आकर जो तन-मन भिगो गयी थी उससे भी लगने लगा था, ज़िंदगी में अब सुख के पल बस आने ही वाले हैं, लेकिन वह सब भी छलावा ही साबित हुआ।

अब मेरे सामने एक नया देश है, नये लोग और एकदम नया वातावरण है। एक नयी तरह की ज़िंदगी की शुरूआत एक तरह से हो ही चुकी है। ज़िंदगी को नये अर्थ मिल रहे हैं। इतने बरस तक उपेक्षित और अकेले रहने के बाद सारा संसार भरा पूरा और अपनेपन से सराबोर लग रहा है। शादी के पहले दिन से लगातार दावतों का सिलसिला चल रहा है। गौरी बहुत खुश है। जैसे-जैसे हम दोनों एक दूसरे के नज़दीक आ रहे हैं, एक दूसरे के साथ ज्यादा वक्त गुजार रहे हैं, हमें एक दूसरे को अच्छी तरह से समझने का मौका मिल रहा है। वह मेरे डरावने अतीत के बारे में कुछ भी नहीं जानती। उसे जानना भी नहीं चाहिये। मैंने उसे अपने घर-परिवार के बारे में बहुत कम बातें ही बतायी हैं। सिर्फ गुड्डी के बारे में बताया है कि वह किस तरह से पढ़ना चाहती है और कविताएं लिखती है। मैंने गौरी को जब गुड्डी का बनाया स्वेटर दिखाया तो उसने तुरंत ही वह स्वेटर मुझसे हथिया लिया और इठलाती हुई बोली थी - हाय, कितना सॉफ्ट और शानदार बनाया है स्वेटर। अब ये मेरा हो गया। तुम उसे मेरी तरफ से लिख देना कि तृम्हें एक और बना कर भेज देगी। जब लैटर लिखो तो मेरी तरफ से खूब थैंक्स लिख देना और मेरी तरफ से ये गिफ्ट भी भेज देना। और उसने अपनी अलमारी से गुड्डी के लिए एक शानदार गिफ्ट निकाल कर दे दिया था।

मुझे गुड्डी पर गर्व हो आया था कि उसकी बनायी चीज़ किस तरह से गौरी ने प्यार से अपने लिए रख ली है।

गुड्डी के अलावा गौरी और किसी के नाम वगैरह भी नहीं जानती। वैसे मैंने उसके चाचा और कजिन को भी तो सिर्फ यही बताया था कि मैं बंबई में अकेला ही रहता हूँ और जब उन्होंने मेरे मां-बाप से मिलने की इच्छा जाहिर की थी तो मैंने उन्हें यही बताया था कि अपनी ज़िंदगी के सारे फैसले मुझे खुद ही करने हैं। मैंने न उन्हें अपने संघर्षों के बारे में बताया था न गौरी को ही अपने संघर्षों की हवा लगने दी थी।

गौरी को दुनियादारी की बातों से कोई लेना-देना नहीं है। आजकल तो वैसे भी उसकी ज़िंदगी के बस दो-चार ही मकसद रह गये हैं। खूब खाना, सोना और भरपूर सैक्स। इनके अलावा उसे न कुछ सूझता है और न ही वह कुछ

सोचना ही चाहती है। वह भीतर-बाहर की सारी प्यास एक साथ ही बुझा लेना चाहती है। ज़रा-सा भी मौका मिलते ही वह बेडरूम के दरवाजे बंद कर लेने की फिराक में रहती है। कई बार मुझे खराब भी लगता है, लेकिन जैसे भी हमारे पास करने-धरने को कुछ भी काम नहीं है। दावतें खाना और सैक्स भोगना। जैसे मेरे साथ दूसरा ही संकट है। ज़िंदगी में कभी भी किसी के भी साथ इतना वक्त एक साथ नहीं गुज़ारा। अकेलेपन के इतने लम्बे-लम्बे दौर गुज़ारे हैं कि अब कई बार लगातार गौरी के साथ-साथ रहने से मन घबराने भी लगता है। आजकल तो यह हालत हो गयी है कि हम बाथरूम जाने के अलावा दिन-रात लगातार साथ-साथ ही रहते हैं।

लगता है, सोने के मामले में हम दोनों को ही अपनी आदतें बदलनी होंगी या उसे बता देना पड़ेगा कि हम बेशक एक साथ सोयें, लेकिन गले लिपटे-लिपटे सोने से मेरा दम घुटता है। हालांकि हनीमून पर हम अगले हफते ही जा पायेंगे लेकिन इस बीच हमें जितने दिन भी मिले हैं, हम दोनों ही जी भी कर एंजाय कर रहे हैं। हनीमून के लिए बचा ही क्या है?

इतने दिनों से गुड्डी को भी पत्र लिखना बाकी है। जैसे आज मेरे पास थोड़ा वक्त है। गौरी अपनी शापिंग के लिए गयी हुई है। गुड्डी को पत्र ही लिख लिया जाये।

प्यारी बहना, गुड्डी

तो मैं आखिर लंदन पहुंच ही गया। पिछली बीस तारीख को जब मैं यहां हीथ्रो हवाई अड्डे पर उतरा तो हांडा परिवार के कई लोग मुझे लेने आये हुए थे। इनमें से मैं सिर्फ दो ही लोगों को पहचानता था। एक गौरी के चाचा चमन हांडा को और दूसरे गौरी के कजिन राजकुमार हांडा को। ये लोग ही मुझे बंबई में मिले थे और इनसे ही सारी बातें हुई थीं। मुझे एयरपोर्ट से सीधे ही हांडा कंपनीज के गेस्ट हाउस में ले जाया गया। वहीं मुझे ठहराया गया था।

शाम को गौरी मिलने आयी थी। थोड़ी देर हाल चाल पूछे, कॉफी पी और चली गयी। जाते-जाते अपना फोन नम्बर दे गयी थी, कहा उसने - फोन करूंगी और आपको ज़रूरत पड़े तो आप भी फोन कर लें। मेरे लिए वे लोग शोफर ड्रिवेन गाड़ी छोड़ गये थे।

खैर, दो-चार दिन मेरी खूब सेवा हुई। सबसे मिलवाया गया। हांडा परिवार के मुखिया से भी मिलवाया गया। वे गौरी के ताऊ जी हैं। सबसे पहले वे ही पचासों साल पहले यहां आये थे और धीरे-धीरे अपनी जायदाद खड़ी की। इन पचास सालों में कम से कम नहीं तो अपने कम से कम सौ आदमी तो लंदन ले ही आये होंगे। अपने आप में बेहद दिलचस्प आदमी हैं। गौरी ने अपने पापा से भी मिलवाया और मम्मी से भी। यहां इंडियन अमीरों की एक बस्ती है - कारपेंडर्स पार्क। वहीं मेरी ससुराल की भव्य इमारत है। जैसे सबके अलग अलग अपार्टमेंट्स हैं।

तो ....मेरी भी शादी हो गयी। हमारी शादी.. मेरी और गौरी की..। बिल्लू की शादी के आगे-पीछे। अब बिल्लू को यह शिकायत नहीं रही होगी कि मैंने उसके रास्ते में रोड़े अटका रखे हैं। हमारी शादी दो तरह से हुई। पहले कोर्ट में, रजिस्ट्रार ऑफ मैरिजेस के ऑफिस में और बाद में पूरी बिरादरी के सामने आर्य समाजी तरीके से। अपनी शादी में लड़के वालों की तरफ से मैं अकेला ही घा। मैं ही दूल्हा, मैं ही बाराती, सबाला और मैं ही बैंड मास्टर। हँसी आ रही थी मुझे अपनी सिंगल मैन बारात देख कर।

मुझे ससुर साहब ने नयी लैक्सस कार की चाबी दी और गौरी को फर्निशड अपार्टमेंट की चाबी। ये कार यहां की काफी शानदार कार मानी जाती है। जब मैंने उनसे कहा कि मुझे कार चलानी तो आती ही नहीं है तो उन्होंने गौरी का हाथ मेरे हाथ में थमा दिया और बोले - ऐ लो जी शोफर भी लो। टर्म्स खुद तय कर लेना।

हनीमून के लिए हमें अगले हफ्ते पैरिस जाना है लेकिन मेरे इंडियन टूरिस्ट पासपोर्ट पर वीसा मिलने में थोड़ी दिक्कत आ रही है। उम्मीद तो यही है कि जा पायेंगे। अगर नहीं भी जा पाये तो भी परवाह नहीं। यहीं इतना घूमना-फिरना और मौज मस्ती हो रहे हैं कि हम दोनों ही लगातार सातवें आसमान रह रहे हैं। ख्बा दावतें खा रहे हैं।

एक नयी ज़िंदगी की शुरुआत हुई है।

गौरी बहुत खुश है इस शादी से और मुझसे एक पल के लिए अलग नहीं होना चाहती। अक्सर तेरे बारे में पूछती रहती है। शादी के और लंदन के कुछ फोटो भेज रहे हैं। तेरे लिए शादी का एक छोटा सा तोहफा मेरी तरफ से और एक गौरी की तरफ से। तेरा बनाया स्वेटर गौरी ने मुझसे छीन लिया था और तुरंत ही पहन भी लिया था। अब तुझे मेरे लिए एक और खरगोशनुमा स्वेटर बनाना पड़ेगा। बना कर भेजेगी ना....।

अपना ख्याल रखना..

दारजी और बेबे को मेरी सत श्री अकाल और गोलू और बिल्लू को प्यार। मेरी छोटी भाभी के लिए भी एक तोहफा मेरी तरफ से। बेबे की तबीयत नयी बहू के आने से संभल गयी होगी।

पता दे रहा हूं। अपने समाचार देना।

तेरा वीर

दीप

अलका दीदी और नंदू को भी इसी तरह के पत्र लिखता हूं। शादी के कुछ फोटो और लंदन के कुछ पिक्चर पोस्ट कार्ड भी भेजता हूं। दीदी को पत्र लिखते समय पता नहीं क्यों बार-बार गोल्डी का ख्याल आ रहा है। अच्छी लड़की थी। अगर मुझसे कहती - मैं शादी करने जा रही हूं। ज़रा मेरी शापिंग करा दो, शादी का जोड़ा दिलवा दो तो मैं मना थोड़े ही करता। हमेशा की तरह उसकी शापिंग कराता। एक पत्र अपने पुराने ऑफिस को भी लिखता हूं ताकि वे मेरे बकाया पैसों का हिसाब किताब कर दें।

गौरी मेरे लिए क्रेडिट कार्ड का फार्म लायी है। मैंने मना कर दिया है - मुझे क्या करना क्रेडिट कार्ड!

- क्यों पैरिस जायेंगे तो ज़रूरत पड़ेगी। वैसे भी यहां लंदन में कोई भी किसी भी काम के लिए कैश ले कर नहीं चलता। दिन में दस तरह के पेमेंट करने पड़ते हैं।

- देखो गौरी, मैं क्या करूंगा ये कार्ड लेकर। न मुझे कोई शापिंग करनी है, न कोई पेमेंट ही करने होंगे। तुम हो न मेरे साथ। तुम्हीं करती रहना सब पेमेंट।

- समझा करो दीप, तुम्हें सिर्फ खर्च करना है। तुम्हें क्रेडिट कार्ड का पेमेंट करने के लिए कौन कह रहा है।

- फिलहाल रहने दो, बाद में देखेंगे।

- जैसी तुम्हारी मर्जी।

हनीमून बढ़िया रहा। शानदार रहना और शानदार घूमना फिरना। सब कुछ भव्य तरीके से। सारी व्यवस्थाएं पहले से ही कर ली गयी थीं। चलते समय ससुर साहब ने मुझे एक भारी सा लिफाफा पकड़ाया था।

जब मैंने पूछा कि क्या है इसमें तो वे हँसे थे - भई, आप अपना तो कर लेंगे, लेकिन शोफर के लिए तो खरचा पानी चाहिये ही होगा ना.. थोड़ी बहुत करेंसी है। गौरी बता रही थी कि आपने क्रेडिट कार्ड के लिए मना कर दिया है। यहां उसके बिना चलता नहीं है, वैसे आपकी मर्जी।

वह लिफाफा मैंने उनके सामने ही गौरी को थमा दिया था - हमारी तो पैकेज डील है। जितना खर्च हो वो करे और बाकी जो बचे वो टिप।

गौरी खिलखिलायी थी - पापा, आपने तो कमाल का दामाद ढूँढा है। यहां तो इतनी टिप मिल जाया करेगी कि कुछ और करने की ज़रूरत ही नहीं पड़ेगी।

मैं हँस दिया हूँ - हमारे साथ रहोगी तो यूँ ही ऐश करोगी।

पैरिस अच्छा लगा। हम दोनों ही तो सातवें आसमान पर थे। गौरी ने खूब शॉपिंग की। अपने लिए भी और मेरे लिए भी। वैसे भी पैसे तो उसके पास ही रखे थे। मैं चाहता भी तो कुछ नहीं खरीद सकता था। इंडिया से जो थोड़ी बहुत रकम लाया था, उससे तो गौरी की एक दिन की शॉपिंग भी नहीं हो पाती। इसलिए मैं अपनी गांठ ढीली करने की हालत में नहीं था। अलबत्ता गौरी के लिए एकाध चीज़ ज़रूर खरीद ली ताकि उसे यह भी न लगे कि कैसे कंगले के साथ आयी है।

हम नये घर में सारी चीज़ें व्यवस्थित कर रहे हैं। गौरी यह देख कर दंग है कि मैं न केवल रसोई की हर तरह की व्यवस्था संभाल सकता हूँ बल्कि घर भर के सभी काम कर सकता हूँ। कर भी रहा हूँ।

पूछ रही है - आपने ये सब जनानियों वाले काम कब सीखे होंगे। आपकी पढ़ाई को देख कर लगता तो नहीं कि इन सबके लिए समय मिल पाता होगा।

- सिर्फ जनानियों वाले काम ही नहीं, मैं तो हर तरह के काम जानता हूँ। देख तो रही ही हो, कर ही रहा हूँ। कोई भी काम सीखने की इच्छा हो तो एक ही बार में सीखा जा सकता है। उसे बार-बार सीखने की ज़रूरत नहीं होती। बस, शौक रहा, और सारी चीज़ें अपने आप आ गयीं।

- थैंक्स दीप, अच्छा लगा ये जान कर कि आप चीज़ों के बारे में इतने खुलेपन से सोचते हैं। मेरे लिए तो और भी अच्छा है। मैं तो मेंडिंग और रिपेयरिंग के चक्कर में पड़ने के बजाये चीज़ें फेंक देना आसान समझती हूँ। अब आप घर-भर की बिगड़ी चीज़ें ठीक करते रहना।

कुल मिला कर अच्छा लग रहा है घर सजाना। अपना घर सजाना। बेशक यहां का सारा सामान अलग-अलग हांडा कम्पनीज़ या स्टोर्स से ही आया है, लेकिन अब से है तो हमारा ही और इन सारी चीजों को एक तरतीब देने में भी हम दोनों को सुख मिल रहा है। वैसे काफी चीजें इस बीच हमने खरीदी भी हैं।

हम दोनों में बीच-बीच में बहस हो जाती है कि कौन सी चीज़ कहां रखी जाये। आखिर एक दूसरे की सलाह मानते हुए और सलाहें देते हुए घर सैट हो ही गया है।

इतने दिनों से आराम की ज़िंदगी गुज़ारते हुए, तफरीह करते हुए मुझे भी लग रहा है कि मेरे सारे दुख दलिद्वर अब खत्म हो गये हैं। अब मुझे मेरा घर मिल गया है।

ससुर साहब की तरफ से बुलावा आया है। वैसे तो हर दूसरे तीसरे दिन वहां जाना हो ही जाता है या फोन पर ही बात हो जाती है लेकिन हर बार गौरी साथ होती है। इस बार मुझे अकेले ही बुलाया गया है। पता नहीं क्या बात हो गयी हो। शायद मेरे भविष्य के बारे में ही कोई बात कहना चाहते हों। वैसे भी अब मज़ा और आराम काफी हो लिये। कुछ काम धाम का सिलसिला भी शुरू होना चाहिये। आखिर कब तक घर जंवाई बन कर ससुराल की रोटियां तोड़ता रहूंगा।

वहां पहुंचा हूं तो मेरे ससुर और उनके बड़े भाई हांडा ग्रुप के मुखिया, दोनों भाई ही बैठे हुए हैं। मैं बारी बारी से दोनों को आदर पूर्वक झुक कर प्रणाम करता हूं। यहां लंदन में भी इस परिवार ने कई भारतीय परम्पराएं बनाये रखी हैं। यहां छोटे-बड़े सभी बुजुर्गों के पैर छू कर ही अभिवादन करते हैं। कोई भी ऊंची आवाज में बात नहीं करता। एक बात और भी देखी है मैंने यहां पर कि हांडा ग्रुप के मुखिया हों या और कोई बुजुर्ग, किसी की भी बात काटी नहीं जाती। वे जो कुछ भी कहते हैं, वही आदेश होता है। ना नुकुर की गुंजाइश नहीं होती। एक दिन गौरी ने बताया था कि बेशक पापा या ताऊजी किसी के भी काम में दखल नहीं देते और न ही रोज़ रोज़ सबसे मिलते ही हैं लेकिन फिर भी इतने बड़े एम्पायर में कहां क्या हो रहा है उन्हें सबकी खबरें मिलती रहती हैं।

- घूमना फिरना कैसा रहा!

- बहुत अच्छा लगा। काफी घूमे।

- कैसा लग रहा है हमारे परिवार के साथ जुड़ना?

- दरअसल मैं यहां पहुंचने तक कुछ भी विजुअलाइज़ नहीं कर पा रहा था कि यहां आ कर ज़िंदगी कैसी होगी। एकदम नया देश, नये लोग और बिलकुल अपरिचित परिवार में रिश्ता जुड़ना, लेकिन यहां आ कर मेरे सारे डर बिलकुल दूर हो गये हैं। बहुत अच्छा लग रहा है।

- और आपकी शोफर के क्या हाल हैं, ससुर साहब ने छोड़ा है - उससे कोई टर्म्स तय की हैं या बेचारी मुफ्त में ही तुम्हारी गाड़ी चला रही है।

- गौरी बहुत अच्छी है लेकिन अब काम धंधे का कुछ सिलसिला बैठे तो टर्म्स भी तय कर ही लेंगे।

- हमने इसी लिए बुलाया है आपको। वैसे आपने खुद काम काज के बारे में क्या सोचा है? वे खुद ही मुद्दे की बात पर आ गये हैं।

- जैसा आप कहें। मैं खुद भी सोच रहा था कि आपसे कहूं कि घूमना फिरना बहुत हो गया है और पार्टियां भी बहुत खा लीं। आपकी इजाजत हो तो मैं किसी अपनी पसंद के किसी काम ... मैंने जानबूझ कर बात अधूरी छोड़ दी है।

- देखो बेटे, हम भी यही चाहते हैं कि तुम अपनी लियाकत, एक्सपीरियंस और पसंद के हिसाब से काम करो। हम तुम्हारी पूरी मदद करेंगे। लेकिन दो एक बातें हैं जो हम क्लीयर कर लें।

- जी... ..

- पहली बात तो यह कि अभी तुम टूरिस्ट वीसा पर आये हो। यहां काम करने के लिए तुम्हें वर्क परमिट की ज़रूरत पड़ेगी जो कि तुम्हें टूरिस्ट वीसा पर मिलेगा नहीं।

- आप ठीक कह रहे हैं। मैंने इस बारे में तो सोचा ही नहीं था।

मैंने सचमुच इस बारे में नहीं सोचा था कि मुझे अपनी पसंद का काम चुनने में इस तरह की तकलीफ भी आ सकती है।

- लेकिन पुत्तर जी हमें तो सारी बातों का खयाल रखना पड़ता है ना जी..।

- आप सही कह रहे हैं। लेकिन फिर मेरा ....

- उसकी फिकर आप मत करो। इसी लिए आपको बुलाया था कि पहले आपकी राय ले लें, तभी फैसला करें।

- जी हुक्म कीजिये...मेरी सांस तेज़ हो गयी है।

- ऐसा है कि इस समय लंदन में हांडा ग्रुप की कोई तीस-चालीस फर्म हैं। पेट्रोल पम्प हैं। डिपार्टमेंटल स्टोर्स हैं और भी तरह तरह के काम काज हैं।

- जी.. गौरी ने बताया था और कुछ जगह तो वो मुझे ले कर भी गयी थी।

- हां, ये तो बहुत अच्छा किया गौरी ने कि तुम्हें सब जगह घुमा फिरा दिया है। तुम्हें अपनी फ्लोरिस्ट शाप में भी ले गयी थी या नहीं?

- इस बारे में तो उसने कोई बात ही नहीं की है।

- यही तो उसकी खासियत है। वैसे तुम्हें बता दें कि हैरो ऑन द हिल पर उसकी फ्लोरिस्ट शॉप लंदन की गिनी चुनी शॉप्स में से एक है। पैलेस और ड्राउनिंग स्ट्रीट के लिए जाने वाले बुके वगैरह उसी के स्टाल से जाते हैं।

- लेकिन इतने दिनों में तो उसने एक बार भी नहीं बताया कि वह कोई काम भी करती है।



- कमाल है, उसने तुम्हें हवा भी नहीं लगने दी। आजकल उसका काम उसकी ही एक कज़िन नेहा देख रही है। दो एक दिन में गौरी भी काम पर जाना शुरू कर देगी। हां तो, हमने सोचा है कि अपना सबसे बड़ा और सबसे रेपुटेड डिपार्टमेंटल स्टोर्स - द बिज़ी कॉर्नर नाम की शाप तुम्हारे नाम कर दें। ये स्टोर्स वेम्बले हाइ स्ट्रीट पर है। गौरी ले जायेगी तुम्हें वहां। तुम्हें पसंद आयेगा। काफी नाम और काम है उसका। वैसे हम उसे नयी इमेज देना चाह रहे हैं। काम बहुत है उसका और नाम भी है लेकिन जरा पुराने स्टाइल का है। हम चाहते हैं कि तुम उसे अपने मैनेजमेंट में ले लो और जैसे चाहे संभालो। क्या ख्याल है?

- जैसा आपका आदेश. . .। मैंने कह तो दिया है लेकिन मैं तय नहीं कर पा रहा हूं कि अपनी इन डिग्रियों और काम काज के अनुभव के साथ मैं डिपार्टमेंटल स्टोर्स में भला क्या कर पाऊंगा। लेकिन इन लोगों के सामने मना करने की गुंजाइश नहीं है। गौरी ने पहले ही इशारा कर दिया था - किसी भी तरह की बहस में मत उलझना। जो कुछ कहना सुनना है, वो खुद बाद में देख लेगी।

- वैसे हमारे और भी कई प्लांस हैं। हम कुछ नये एरियाज़ में डाइवर्सिफाई करने के बारे में सोच रहे हैं, वैसे तुम्हें कभी भी किसी किस्म की तकलीफ नहीं होगी।

- जानता हूं जी, आप लोगों के होते हुए....।

- वैसे सारी चीजें आपको धीरे धीरे पता चल ही जायेंगी। आप हमारे परिवार के नये मैम्बर हैं। खूब पढ़े लिखे और ब्राइट आदमी हैं। हमें यकीन है आप खूब तरक्की करेंगे और आपका हमारे खानदान से जुड़ना हमें और आपको, दोनों को रास आयेगा। यू आर एन एसेट टू हांडा एम्पायर। गॉड ब्लैस यू। हमारे इस प्रोजेक्ट के बारे में क्या ख्याल है ?

- जी दुरुस्त है। मैं कल से ही वहां जाना शुरू कर दूंगा। मैं चाहूं तो भी अब विरोध नहीं कर सकता। ट्रिस्ट वीसा पर आने पर और घर जवाई बनने की कुछ तो कीमत अदा करनी ही पड़ेगी।

- कोई जल्दी नहीं है। वहां और लोग तो हैं ही सही। जब जी चाहे जाओ, आओ, और आराम से सारी चीजों को समझो, जो मरजी आये चेंज करो वहां और उसे अपनी पर्सनैलिटी की मुहर लगा दो। ओके !!

- जी थैंक्स। गुड नाइट। और मैं दोनों को एक बार फिर पैरी पौना करके बाहर आ गया हूं।

घर आते ही गौरी ने घर लिया है - क्या क्या बात हुई और क्या दिया गया है आपको।

मैं निढाल पड़ गया हूं। समझ में नहीं आ रहा, कैसे बताऊं कि अब आगे से मेरी ज़िंदगी क्या होने जा रही है। इंडिया में फंडामेंटल रिसर्च के सबसे बड़े सेंटर टीआइएफआर का सीनियर सांइटिस्ट डॉ. गगनदीप बेंस अब लंदन में अपनी ससुराल के डिपार्टमेंटल स्टोर्स में अंडरवियर और ब्रा बेचने का काम करेगा। कहां तो सोच रहा था, यहां रिसर्च के बेहतर मौके मिलेंगे और कहां ...। मुझे वर्क परमिट का ज़रा सा भी ख्याल होता तो शायद ये प्रोजेक्ट मानता ही नहीं।

मेरा खराब मूड देख कर, गौरी डर गयी है। बार बार मेरा चेहरा अपने हाथों में लेकर मेरे हाथ पकड़ कर पूछ रही है - आखिर इतने टेंस क्यों हो। तुम्हें मेरी कसम। सच बताओ, क्या बात हुई।

मैं उसकी आंखों में झांकता हूँ - वहां मुझे स्नेह का एक हरहराता समंदर ठाँठें मारता दिखायी दे रहा है - वह मेरे माथे पर एक गहरा चुंबन अंकित करती है और एक बार फिर कहती है - खुद को अकेला मत समझो, डीयर। बताओ, किस बात से इतने डिस्टर्ब हो!!

मैं उसे बताता हूँ। अपने सपनों की बात और अपने कैरियर की बात और इन सारी चीजों के सामने उसके पापा के प्रोपोजल।

पूछता हूँ उसी से - क्या मुझे यही सब करना होगा, मैं तो सोच कर आया था कि ...।

वह हँसने लगी है। यहां मेरी जान पर बनी हुई है और ये पागलों की तरह रही है - रिलैक्स डीयर, जब घर में ही इतने सारे शानदार काम हैं तो बाहर किसी और की गुलामी करने की क्या जरूरत। वैसे भी वर्क परमिट के बिना तो आप घरों के बाहर अखबार डालने का काम भी पता नहीं कर पायेंगे या नहीं। आप हांडा ग्रुप के फैमिली मैम्बर हैं। हजारों में से चुन कर लाये गये हैं और आपको लंदन के सबसे बड़े स्टोर्स का काम काज संभालने के लिए दिया जा रहा है। हमारे खानदान के कितने ही लड़कों की निगाह उस पर थी। बल्कि मैं मन ही मन मना रही थी कि तुम्हें द बिजी कॉर्नर ही मिले। कहीं गैस स्टेशन वगैरह दे देते तो मुसीबत होती। यू आर लकी डीयर। चलो, इसे सेलेब्रेट करते हैं। कैंडिल लाइट डिनर मेरी तरफ से।

इतना सुन कर भी मेरा हौसला वापिस नहीं आया है। वह चीयर अप करती है - आप जाकर अपना काम देखें तो सही। वहां बहुत स्कोप है। आप खुद ही तो बता रहे थे कि आपकी निगाह में कोई भी काम छोटा या बड़ा नहीं होता। आप छोटे से छोटे काम को भी पूरी लगन और मेहनत से शानदार तरीके से कर सकते हैं। उसमें पूरा सैटिस्फैक्शन पा सकते हैं। फिर भी वहां अगर आपका मन न लगे तो डाइवर्सिफिकेशन करके आप अपनी पसंद का कोई भी काम शुरू कर सकते हैं। बस, मेरी पोजीशन का भी खयाल रखना।

इसका मतलब अब मेरे पास इस प्रोपोजल को मानने के अलावा और कोई उपाय नहीं है। चलो यही सही, जब चमगादड़ की मेहमाननवाजी स्वीकार की है तो उलटा तो लटकना ही पड़ेगा।

हम पहले गौरी के स्टाल पर गये हैं। पूरा स्टाफ उसे और मुझे शादी की विश कर रहा है। कई लोग तो आये भी थे रिसेप्शन में। अब वह सबसे मेरा परिचय करा रही है। स्टाफ की तरफ से हमें एक खूबसूरत बुके दिया गया है। वाकई बहुत अच्छी शाप है उसकी। वहां कॉफी पी कर गौरी मुझे द बिजी कॉर्नर में ले कर आयी है। मैनेजर से परिचय कराया है। मैनेजर साउथ इंडियन है। उसने बहुत ही सज्जनता से हमारा स्वागत किया है और पूरे स्टाफ से मिलवाया है। स्टोर्स में सब जगह घुमाया है। सारे सैक्शंस में ले कर जा रहा है और सारी चीजों के बारे में बोरियत की हद तक बता रहा है।

गौरी लगातार मेरे साथ है और मेरे साथ ही सारी चीजें समझ रही है। कहीं कहीं कुछ पूछ भी लेती है मैनेजर से। एकाउंट्स और इन्वेंटरी में हमने सबसे ज्यादा वक्त बिताया है। मैनेजर हमें अपने केबिन में लेकर गया है। केबिन क्या है, ज़रा सी जगह को ग्लास की दीवारों से कवर कर दिया गया है। वहीं तीन शार्ट सर्किट टीवी क्रीन लगे हैं जो बारी-बारी से पूरे स्टोर्स में अलग अलग लोकेशनों की गतिविधियां दिखा रहे हैं।

मैनेजर इन सारी चीजों के बारे में बोरियत की हद तक विस्तार से बात कर रहा है।

मैंने और कुछ भी पूछना उचित नहीं समझा है। मैं सब कुछ देख समझ रहा हूँ। कल से तो मुझे यहीं आना ही है। अभी तो पता नहीं कितने दिन लगे इस तंत्र को समझने में।

आज स्टोर्स में दूसरा ही दिन है। मैं अकेला ही पहुंचा हूँ। गौरी ने भी आज ही से अपना काम शुरू किया है। वह अल-सुबह ही निकल गयी थी। मेरे जागने से पहले वह तैयार भी हो चुकी थी और अगर मैं उठ कर उसके लिए चाय न बनाता तो बिना मिले और बिना एक कप चाय पिये ही वह चली जाती। तब मैंने ही उठ कर उसके लिए चाय बनायी और उसे एक स्वीट किस के साथ विदा किया।

आज मैनेजर ने मुझे सारी चीजें फिर से समझानी शुरू कर दी हैं। वह आखिर इतने डिटेल्स में क्यों जा रहा है। सब कुछ तो मैं पहले दिन समझ ही चुका हूँ। और फिर ऐसी भी क्या जल्दी है कि सब कुछ एक साथ ही समझ लिया जाये। मैं हैरान हूँ कि ये सारी औपचारिकताएं किस लिये दोहरायी जा रही हैं। वह भी जिस तरीके से हर मामूली से मामूली चीज के बारे में बता रहा है, मुझे अटपटा लग रहा है लेकिन मैं उसे टोक भी नहीं पा रहा हूँ। सारा दिन उसी के साथ माथा पच्ची करते बीत गया है।

दिन ही बेहद थकाऊ रहा। दुनिया भर की चीजों की इन्वेंट्री दिखा डाली है मैनेजर ने। वैसे भी दिमाग भन्नाया हुआ है। दिन भर ग्राहकों की भीड़ और हिसाब किताब देखने, समझने और रखने का झंझट। इस किस्म के काम का न तो अनुभव है और मानसिक तैयारी ही। गौरी बीच बीच में फोन करती रही है। चार बजे के करीब आयी गौरी तभी मैनेजर नाम के पिस्सु से छुटकारा मिल सका है।

आज दो महीने हो गये हैं मुझे स्टोर्स संभाले। लंदन आये लगभग तीन महीने। मैं ही जानता हूँ कि दो महीने का यह बाद वाला अरसा मेरे लिए कितना भारी गुज़रा है। एक - एक पल जैसे आग पर बैठ कर गुज़ारा हो मैंने। स्टोर्स में जाने के अगले हफ्ते ही उस मैनेजर को स्टोर से निकाल दिया गया था। वह इसीलिए हड़बड़ी में दिखायी दे रहा था। अब मैं ही इसका नया मैनेजर था।

मैं इस नयी हैसियत से डिस्टर्ब हो गया हूँ। यह क्या मज़ाक है। मैंने इस घर में शादी की है और इस शादी का मैनेजरी से क्या मतलब? गौरी के पापा ने तो ये कहा था कि ये स्टोर्स मेरे हवाले कर रहे हैं। अगर यही बात ही थी तो मैनेजर को निकालने का क्या मतलब? अगर वे मैनेजर की ही सेलेरी बचाना चाहते थे तो मुझसे साफ-साफ कह दिया होता कि हमें दामाद नहीं दो-ढाई हजार पाउंड वाला मैनेजर चाहिये। मैं तब तय करता कि मुझे आना भी है या नहीं। यहां की नौकरी करना तो बहुत दूर की बात थी। मुझे वर्क परमिट का खयाल नहीं था या पता ही नहीं था लेकिन उन्हें तो पता था कि यहां मैं आऊं या और कोई दामाद आये, ये समस्या तो आने ही वाली है। इसका मतलब इन लोगों ने अच्छी तरह से सोच-समझ कर ये जाल बुना है। अब दिक्कत ये है कि कहीं सुनवाई भी तो नहीं है। धीरे-धीरे मुझे सारी चीजें समझ में आने लगी थीं। सारा चक्कर ही इन सारी दुकानों के लिए भरोसे का और एक तरह से बिना पैसे का स्टाफ जुटाने का ही था। मैंने पूरी स्टडी की है और मेरा डर सही निकला है।

मुझसे पहले चार लड़कियों के लिये दामाद इसी तरह से लाये गये हैं। पांचवां मैं हूँ। उनके सभी दामाद हाइली क्वालिफाइड हैं। पांचों की शादियां इसी तरह से की गयी हैं। न लड़कियां घर से बाहर गयी हैं और न बिजिनेस ही। सबसे बड़ी शिल्पा की शादी शिशिर से हुई है। शिशिर एमबीए है और चार गैस स्टेशन देख रहा है। सुचेता के पति सुशांत के पास सारे पब और रेस्तरां हैं। वह कैमिकल इंजीनियर है। दोनों मिल कर संभालते हैं ये सारे ठीये।

नीलम का आर्कीटेक्ट पति देवेश बुक शॉप में है और संध्या का एमकॉम पति रजनीश सेन्ट्रल स्टोर्स संभालता है और सारे स्टोर्स के लिए और सारे घरों के लिए सप्लाई देखता है। अलबत्ता घर के सारे आदमी और लड़के इन कम्पनियों के या तो अकेले कर्त्ता हैं या ज्वाइंटली सारा कामकाज संभालते हैं। उनके पास बेहतर पोजीशंस वाली ऐसी इंटरनेशनल कम्पनियां हैं जिनमें खूब घूमना-फिरना और कॉन्टैक्ट्स हैं। वैसे तो इनकी लड़कियों की पोजीशन भी उनकी पढ़ाई के हिसाब से है लेकिन दामादों की हालत मैनेजरो या उसके आसपास वाली है। जहां लड़की दामाद एक साथ हैं भी, वहां वाइफ ही सर्वेसर्वा है और उसके हसबैंड की पोजीशन दोयम दरजे की ही है। हां, लड़का बहू वाले मामले में भी यही दोहरे मानदंड अपनाये गये हैं। बहुएं भी आम तौर पर इंडियन ही हैं और उनके जिम्मे अलग-अलग ठीये हैं।

हम सभी दामाद भारतीय अखबारों के जरिये घरे गये हैं। पता नहीं पूरे खानदान में कितनी लड़कियां और बाकी हैं और कितने दामाद अभी और इम्पोर्ट किये जाने हैं।

अब मुझे गौरी के फ्लोरिस्ट स्टाल पर बैठने का भी कारण समझ में आ गया है। वजह बहुत सीधी सादी है। उसे वहां बहुत कम देर के लिए बैठना पड़ता है और बाकी वक्त वह फिल्में देखते हुए और कॉमिक्स पढ़ते हुए गुजारती है। कई बार वह नहीं भी जाती और स्टाफ ही सारा काम देखता रहता है। वह अक्सर अपनी कजिस की शॉप्स पर चली जाती है।

अब मेरे सामने इस स्टोर्स में मैनेजरी संभालने के अलावा और कोई उपाय नहीं है। गलती मेरी ही थी। मैं ही तो भागा-भागा इतने सारे लालच देख कर खिंचा चला आया हूं। यह तो मुझे ही देखना चाहिये था कि बिना वर्क परमिट के मेरी औकात यहां सड़क पर खड़े मज़दूर जितनी भी नहीं।

लेकिन यहां कोई भी तो नहीं है जिससे मैं ये बातें कह सकूं। हांडा ग्रुप से तो पहली मुलाकात में ही लाल सिग्नल मिल गया था कि नो डिस्कशन एट ऑल। अब कहूं भी तो किससे? मेरे पास घुट-घुट कर जीने कुढ़ने के अलावा उपाय ही क्या है ?

जब मैनेजर को निकाला गया था तो मैंने गौरी से इस बारे में बात की थी - तुम्हें नहीं लगता गौरी, इस तरह से स्टोर्स के मैनेजर को निकाल कर उसकी जगह मुझे दे देना, एनी हाऊ, मैं पता नहीं क्यों इसे एक्सेप्ट नहीं कर पा रहा हूं।

- देखो दीप, जो आदमी वहां का काम देख रहा था, दरअसल स्टॉपगैप एरेंजमेंट था। पहले वहां मेरा कजिन देवेश काम देखता था। उस वक्त वहां कोई मैनेजर नहीं था। वैसे भी हमारे ज्यादातर एस्टेबलिशमेंट्स में मैनेजर नहीं हैं।

उसने मेरा हाथ दबाते हुए कहा है - भला हम तुम्हें मैनेजर की बराबरी पर कैसे रख सकते हैं।

बेशक गौरी ने अपनी तरफ से मुझे बहलाने के लिए ये सारी बातें कही हैं लेकिन असलियत वही है जो मेरे सामने है। मैनेजर का जाना और मेरा आना, इसमें तो मुझे पाउंड बचाने के अलावा और कोई तर्क नज़र नहीं आता।

इस बीच मैंने बारीकी से सारी चीजें देखी भाली हैं और सारे तंत्र को समझने की कोशिश की है। मैंने पाया है कि यहां, घर स्टोर्स में, फैमिली मैटर्स में, बिजिनेस में, मेरे स्टोर्स में हर चीज के लिए सिस्टम बना हुआ है। यही लंदन की खासियत है। कहीं कोई चूक नहीं। कोई सिस्टम फेल्यर नहीं। जब मैनेजर के जाने के बाद के महीने में हांडा ग्रुप के कार्पोरेट ऑफिस से स्टाफ की सैलरी का स्टेटमेंट आया था तो मैंने देखा, पिछली बार की तुलना में मैनेजर की सैलरी के खाते में पूरे ढाई हजार पौंड महीने के बचा लिये गये हैं। अब सारा खेल मेरी समझ में आ गया है। मुफ्त का, भरोसेमंद मैनेजर, घर जवाँई का घर जवाँई। न घर छोड़ कर जाये और न दुकान। अब गौरी के सारे तर्कों की भी पोल खुल गयी है।

मैं पूरी तरह घिर चुका हूँ। अपने घर का सपना एक बार फिर मुझे छल गया है। मेरे हाथ खाली हैं और पूरे देश में मैं किसी को भी नहीं जानता। यहां तो घर में किसी और से कुछ भी कहने का न हक है, न मतलब। यह तो मुझे पहले ही दिन बता दिया गया था कि मुझे जो कुछ कहना है गौरी के जरिये ही कहना है। अलबत्ता सिस्टम, परिवार या पर्सनल लाइफ के बारे में कुछ भी कहने की मनाही है। गौरी से बात करो तो उसके बहलाने के अपने तरीके हैं - क्यों टैशन लेते हो डीयर। तुम्हें किस बात की चिंता? किस बात की तकलीफ है तुम्हें?

इन सारी मानसिक परेशानियों के बावजूद मैंने एक फैसला किया है कि जो काम मुझे सौंपा गया है, वह मैं कर के दिखाऊंगा। गौरी ने जो मेरी ही बात का ताना मारा था कि मेरे लिए कोई भी काम छोटा या बड़ा नहीं है तो सचमुच ऐसा ही है। मैं एक बार तो यह भी कर के दिखा ही देता हूँ कि मैं स्टोर्स भी संभाल सकता हूँ और इस पर भी अपनी छाप छोड़ सकता हूँ। इसमें ऐसा क्या है जो एक मामूली और कम पढ़ा लिखा मद्रासी संभाल सकता है और मैं नहीं संभाल सकता। बल्कि मुझे तो इस बात के पूरे अधिकार भी दे दिये गये हैं कि मैं जैसा चाहूँ इसे बना संवार सकूँ।

मैंने देख लिया है कि मेरे सामने क्या काम है और उसे कैसे करना है। मैंने स्टोर्स की लुक, इसकी सर्विस, इसकी डिज़ाइनिंग और इसकी ओवरऑल इमेज को बेहतर बनाने के लिए सारी चीजों की स्टडी की है। इस पूरे प्रोजेक्ट के लिए मैंने तीन महीने का समय तय किया है और अपनी रिपोर्ट में यह भी जिक्र कर दिया है कि इस बीच कुछ सैक्शन्स को शिफ्ट करना पड़ सकता है या एक आध हफ्ते के लिए बंद भी करना पड़ सकता है लेकिन कुल मिला कर रोजाना के कामकाज पर कोई फर्क नहीं पड़ेगा।

गौरी ने जब रिपोर्ट देखी है तो वह दंग रह गयी है कि मैं इतने सिस्टम से काम करता हूँ - आप तो यार, छुपे रुस्तम निकले। हमारे यहां आज तक किसी ने भी इतनी दिलचस्पी से किसी काम को लेकर रिपोर्ट तैयार नहीं की होगी।

मैं गौरी को बताता हूँ - ये तुम्हारे ही उकसाने की नतीजा है कि मैं ये प्रोजेक्ट कर रहा हूँ।

कुल मिला कर गौरी बहुत खुश है कि उसके हसबैंड ने हांडा एम्पायर के लिए कुछ नया सोचा है।

रिपोर्ट हाथों हाथ एप्रूव कर दी गयी हेदिया गया और पूरे काम का एजेंसी को कांट्रैक्ट दे दिया गया है।

इस तरह से मैंने खुद को स्टोर्स को बेहतर बनाने के लिए व्यस्त कर लिया है। इसके अलावा मैंने जब देखा कि यहां जितने कम्प्यूटर्स थे, वे पुराने थे और उनमें जो पैकेजेस थे वे स्टोर्स की ज़रूरत जैसे तैसे पूरी कर रहे थे।

स्टोर्स के रेनोवेशन का काम पूरा हो गया है। अब नये रूप में स्टोर्स की शक्ल ही बदल गयी है और इसकी इमेज भी एक तरह से नयी हो गयी है। हालांकि इस सबमें खर्च हुआ है और मेहनत भी लगी है, लेकिन रिजल्ट्स सामने हैं।

>>पीछे>> >>आगे>>

[शीर्ष पर जाएँ](#)

देस बिराना  
सूरज प्रकाश

[अनुक्रम](#)

अध्याय 4

[पीछे](#)  
[आगे](#)

हांडा ग्रुप के मुखिया तक ये बातें पहुंच गयी हैं। एक दिन वे खुद आये थे और सारी चीजें खुद देखी भाली थीं। उनके साथ राजकुमार, शिशिर और सुशांत भी थे। सबने काफी तारीफ की थी। मिस्टर हांडा बोले थे - मुझे ये तो मालूम था कि यहां काम करने की जरूरत है लेकिन तुम आते ही इतनी तेजी से और इतनी सिस्टेमैटिकली ये सब कर दोगे, हम सोच भी नहीं सकते थे। वी आर प्राउड ऑफ यू माई सन। गॉड ब्लेस यू। यू हैव इन ए ग्रेट जॉब। उन्होंने वहीं खड़े खड़े राजकुमार से कह दिया है कि लैन और दूसरे सारे पैकेज सभी जगहों के लिए डेवलेप कर लिये जायें। जरूरत पड़े तो दीप जी को इस काम के लिए पूरी तरह फ्री कर दिया जाये।

रिनोवेशन प्रोजेक्ट पूरा होते ही सारी व्यस्तताएं खत्म हो गयी हैं। स्टोर्स का सारा काम स्ट्रीमलाइन हो जाने से अब सुपरविजन का काम नहीं के बराबर रह गया है। अब मैं पूरी तरह खाली हो जाने की वज़ह से फिर अकेला हो गया हूं। फिर से सारे ज़ख्म हरे हो गये हैं और एक सफल प्रोजेक्ट की इन सारी सफलताओं के बावजूद मैं अपने आपको फिर से लुटा-पिटा और अकेला पा रहा हूं।

सारी चिंताओं में घिरा ही हुआ हूं कि एक साथ तीन चिट्ठियां आयी हैं। इस उम्मीद में एक-एक करके तीनों खत खोलता हूं कि शायद इनमें से ही किसी में कोई सुकून भरी बात लिखी हो लेकिन तीनों ही पत्रों में ऐसा कुछ भी नहीं है।

पहला खत गुड्डी का है -

वीरजी,

आपका प्यारा सा पत्र, आपकी नन्हीं सी प्यारी सी दुल्हन के फोटोग्राफ्स और खूबसूरत तोहफे मिले। इससे पहले बंबई से भेजा आपका आखरी खत भी मिल गया था। मैं बता नहीं सकती कि मैं कितनी खुश हूं। आखिर आपको अपना घर नसीब हुआ। बेशक सात समंदर पार ही सही। मेरी खुशी तो आपका घर बस जाने की है।

पहले बिल्लू की शादी के समाचार। मैंने किसी को भी नहीं बताया था कि आप इस तरह से लंदन जा रहे हैं, बल्कि जा चुके हैं। मैं आपकी तकलीफ समझ रही थी लेकिन काश..मैं आपकी किसी खुशी के लिए कुछ भी कर पाती तो ..मुझे बाद में बता चला था कि दारजी ने आपको एक और खत लिखा है - वही आपको मनाने की उनकी तरकीबें

और आपसे पैसे निकलवाने के पुराने हथकंडे। मैं रबब से दुआ कर रही थी कि वह खत आपको मिले ही नहीं और आप एक और ज़हमत से बच जायें लेकिन आपके जाने के अगले दिन ही नंदू वीरजी ने मुझे बुलवाया और चेकों के बारे में पूछा। मैंने उन्हें बताया कि मैं ये लिफाफा ले कर आपके पास आने ही वाली थी। तब उन्होंने एयरपोर्ट से आपके फोन के और दारजी के खत के बारे में बताया। मैं सारे चैक उन्हें दे आयी थी।

इधर दारजी की हालत खराब हो रही थी और वे रोज डाकिये की राह देख रहे थे। एक आध बार शायद नंदू के पास भी चक्कर लगाये कि शायद उसके पास कोई फोन आया हो। अगर आपका ड्राफ्ट न आये तो उनकी हालत खराब हो जाने वाली थी। तभी नंदू वीरजी जैसे उनके लिए देवदूत की तरह प्रकट हुए और पचास हजार के कड़कते नोट उनके हाथ पर धर दिये। साथ में एक चटपटी कहानी भी परोस दी.. आपका दीपू अब बंबई में नहीं है। एक बहुत बड़ी नौकरी के सिलसिले में रातों रात उसे लंदन चले जाना पड़ा। वहां जाते ही उसे आपकी चिट्ठी रीडाइरेक्ट हो कर मिली और वह बड़ी मुश्किल से कंपनी से एडवांस ले कर ये पैसे मेरे बैंक के जरिये भिजवा पाया है ताकि आपका नेक कारज न रुके। बल्कि कल आधी रात ही लंदन से उसका फोन आया था। बहुत जल्दी में था। कह रहा था दारजी और बेबे को कह देना कि अपने घर में खुशी के पहले मौके पर भी नहीं पहुंच पा रहा हूं। क्या करूं नौकरी ही ऐसी है। रात-दिन काम ही काम कि पूछो नहीं।

इतने सारे कड़कते नोट देख कर तो दारजी खुशी के मारे पागल हो गये। वे तो सिर्फ पंद्रह बीस हजार की उम्मीद लगाये बैठे थे। सारी बिरादरी में आपकी जय-जय कार करा दी है दारजी ने। नंदू वीरजी वाली कहानी को ही खूब नमक मिर्च लगा कर सारी बिरादरी को सुनाते रहे। घर से आपके घर से अचानक चले जाने को भी अब दारजी ने एक और किस्से के जरिये ऑफिशियल बना दिया है - मैंने ते जी बाद विच पता लगेया। दरअसल साडे दीपू दे बार जाण दी गल चल रई सी, ते उन्ने पासपोर्ट वास्ते जी अप्लाई कित्ता होया सी। उत्थों ई अचानक तार आ गयी सी कि छेत्ती आ जाओ। कुछ सरकारी कागजां दा मामलां सी। विचारा पक्की रोटी छड्ड के ते दिलियों हवाई जहाज ते बैठ के बंबई पोंचेया सी।..

तो वीर जी, ये रही आपके पीछे तैयार की गयी कहानी..।

आप इस भ्रम में न रहें वीरजी कि दारजी बदल गये हैं या अब आपके घर वापिस लौटने पर वे आपसे बेहतर तरीके से पेश आयेंगे। दरअसल वे इस तरह की कहानियां कह के बिल्लू के ससुराल में अपनी मार्केट वैल्यू तो बढ़ा ही रहे हैं, गोलू के लिए भी जमीन तैयार कर रहे हैं। वे हवा में ये संकेत भेज रहे हैं कि उन्हें अब कोई लल्लू पंजून समझे। उनका बड़ा लड़का अब बहुत बड़ी नौकरी में लंदन में है। अब उनसे उनकी नयी मार्केट वैल्यू के हिसाब से बात की जाये।

बिल्लू की शादी अच्छी तरह से हो गयी है। गुरविन्दर कौर नाम है हमारी भाभी का। छोटी सी गोल मटोल सी है। स्वभाव की अच्छी है। बिल्लू खुश है। बेबे भी। उसे दिन भर का संग साथ भी मिल गया और काम में हाथ बंटाने वाला भी। मुझे भी अपने बराबर की एक सहेली मिल गयी है। बेबे ने दहेज की सारी अच्छी अच्छी चीजें यहां तक कि उस बेचारी की रोजाना की जरूरत की चीजें भी बड़े बक्से में पहुंचा दी हैं। मेरे दहेज में देने के लिए। छी मुझे कितनी शरम आ रही है लेकिन मुझे पूछता ही कौन है। मैं भाभी को चुपके से बाजार ले गयी थी और उन्हें सारी की सारी चीजें नयी दिलवा दीं। उस बेचारी को कम से कम चार दिन तो खुशी से अपनी चीजें इस्तेमाल कर लेने देते।



इतना ही,

मेरी प्यारी भाभी को मेरी तरफ से ढेर सा प्यार.।, भाभी की एक फोटो भेज रही हूं।

आपकी बहन,

गुड्डी

दूसरा खत दारजी का है-

बेटे दीपजी

(तो इस बार दारजी का संबोधन दीपजी हो गया है। जरूर कुछ बड़ी रकम चाहिये होगी!!)

जींदे रहो। पहले तो शादी और परदेस की नौकरी की बधाई लो। बाकी हमें और खास कर तेरी बेबे को चंगा लगा कि तुम बहुत वडी नौकरी के सिलसिले में लंदन जा पहुंचे हो। रबब करे खूब तरक्की करो और खुशियां पाओ। बाकी तुम्हारी शादी की खबर से भी हमें अच्छा लगा कि तुम्हारा घर बार बस गया और अब तुम्हें दुनियादारी से कोई शिकायत नहीं होनी चाहिये। बेशक हम सबकी तुम्हारी शादी में शामिल होने की हसरत तो रह ही गयी। तुम्हें और तुम्हारी वोटी को खुद आसीसें देते तो हमें चंगा लगता। बाकी हमारी आसीसें हमेशा तुम्हारे साथ हैं। बाकी तुमने बिल्लू के वक्त जो अपना फरज निभाया, उससे बिरादरी में हमारा सीना चौड़ा हो गया कि तुमने परदेस में जाते ही कैसे भी करके इतनी बड़ी रकम का इंतजाम करके हमारे हाथ मजबूत किये। सब अश अश करने लगे कि बेटा हो तो दीपजी जैसा!! बेटेजी अब तो मेरी एक ही चिंता है कि किसी तरह गुड्डी के हाथ पीले कर दूं। तुझे तो पता ही है कि बेबे की तबीयत ठीक नहीं रहती और मेरा भी काम धंधा मंदा ही है। अब उमर भी तो हो चली है। कब तक खटता रहूंगा जबकि मेरा घर बार संभालने वाले तीन-तीन जवान जहान बेटे हैं। बाकी बिल्लू की शादी के बाद से हाथ थोड़ा तंग हो गया है। उसके अपने खरचे भी बढ़े ही हैं। वैसे अगर तेरा भी रिश्ता यहीं हो जाता तो बात ही और थी। बिल्लू के सगों ने भी एक तरह से निराश ही किया है। मैंने तो तेरी बहुत हवा बांधी थी लेकिन कुछ बात बनी नहीं। अब तो यही देखना है कि गुड्डी के समय हमारी इज्जत रह जाये। गोलू फिर भी एकाध बरस इंतजार कर सकता है लेकिन लड़की कितनी भी पढ़ी लिखी क्यों न हो, सीने पर बोझ तो रहता ही है। ये खत सिर्फ इस वास्ते लिखा कि कभी भी गुड्डी की बात आगे बढ़ सकती है। दो- एक जगह बात चल भी रही है। बाकी तुम खुद समझदार हो।

तुम्हारा,

दारजी

तो यह बात थी। कैसी मीठी छुरी चलाते हैं दारजी भी। पहले से खबर कर रहे हैं कि भाया, तैयारी रख, तेरी बहन के हाथ भी पीले करने हैं। आज ही नंदू से बात करनी पड़ेगी कि किसी भी तरह से दारजी को समझाये कि गुड्डी के लिए जल्दीबाजी न मचायें। कब और कैसे रुख बदलना है, दारजी बखूबी जानते हैं।

अलबत्ता तीसरी चिट्ठी मेरे लिए थोड़ी सुकून भरी है। पत्र टीआइएफआर से है। उन्होंने मेरे बकाया पैसों का स्टेटमेंट बना कर भेजा है और पूछा है कि मैं ये पैसे कहां और कैसे लेना चाहूंगा। लगभग दो लाख के करीब हैं।

सोचता हूँ ये पैसे मैं भसीन साहब के जरिये किसी चैनल से यहां मंगवा लूँ। वक्त जरूरत काम आयेंगे। रोजाना कितनी तो जरूरतें होती हैं मेरी और मुझे गौरी के आगे हाथ फैलाना पड़ता है। ऑफिस को यही लिख दिया है मैंने कि ये पैसे मिस्टर देवेन्द्र को दे दिये जायें। ऑफिस और देवेन्द्र जी को एंथारिटी लैटर भेज दिया है।

शिशिर आया है। मेरे डेवलेप किये हुए पैकेज लेने। वैसे हम कई बार मिले हैं। उनके घर खाना खाने भी गये हैं और पार्टियों में भी मिलते रहे हैं लेकिन यह पहली बार है कि हम दोनों अकेले आमने सामने बात कर रहे हैं। वह मेरा सबसे बड़ा सादू है। वह भी मेरी ही तरह हांका करके लाया गया है। चार साल हो गये हैं उसकी शादी को। एक बच्चा भी है उनका। कलकत्ता से एमबीए है। अच्छी भली नौकरी कर रहा था कि लंदन में मेरी ही तरह शानदार कैरियर का चुग्गा देख कर फंस गया था। वह गैस स्टेशनों का काम देख रहा है। हम सब जवांइयों में से उसकी हालत कुछ बेहतर है क्योंकि उसने अपनी बीवी को बस में कर रखा है और लड़ झगड़ कर अपनी बात मनवा लेता है।

पूछ रहा है वह -आपने तो वाकई कमाल कर दिया कि इतने कम समय में अपने ठीये को पूरी तरह चेंज करके रख दिया। वह हँसा है - बस हमारा खयाल रखना, कहीं हमें घर से या ससुराल से मत निकलवा देना। और कोई ठिकाना नहीं है अपना।

- क्यों मेरे जले पर नमक छिड़क रहे हो भाई। ये तो मैं ही जानता हूँ कि ये सब मैंने क्यों और किसलिए किया। अचानक इतने दिनों से दबा मेरा आक्रोश बाहर का रास्ता तलाशने लगा है। मेरी आवाज भारी हो गयी है।

शिशिर ने मेरे कंधे पर हाथ रखा है - आयम सौरी गगनदीप, मुझे नहीं मालूम था। वैसे आप मुझ पर भरोसा कर सकते हैं। बेशक मेरी भी वही हालत है जो कमोबेश आपकी है बल्कि मैंने तो यहां इससे भी बुरे दिन देखे हैं। आपने कम से कम कुछ काम करके अपनी इमेज तो ठीक कर ली है।

- दरअसल मुझे यहां के जो सब्जबाग दिखाये गये थे और मैं जो उम्मीदें ले कर आया था, शादी के कुछ ही दिन बाद मुझे लगने लगा था कि मैं बुरी तरह छला गया हूँ।

- बेशक हम आपस में आमने सामने नहीं मिले है लेकिन मैं आपकी हालत के बारे में जानता हूँ कि आप बहुत भावुक किस्म के आदमी हैं और उतने प्रैक्टिकल नहीं हैं। लेकिन मुझे ये नहीं पता था कि आप किसी जिद में या खुद को जस्टीफाई करने के लिए ये सब कर रहे हैं। चलिये, कहीं बाहर चलते हैं। वहीं बात करते हैं।

- चलिये।

हम सामने ही कॉफी शॉप में गये हैं ।

मैं बात आगे बढ़ाता हूँ - मुझे पता नहीं कि आपकी बैंक ग्राउंड क्या है और आप यहां कैसे आ पहुंचे लेकिन मैं यहां एक घर की तलाश में आया था। मुझे पता नहीं था कि घर तो नहीं ही मिलेगा, मेरी आजादी और प्राइवसी भी मुझसे छिन जायेंगे। इतने दिनों के बाद शिशिर अपना-सा लग रहा है जिसके सामने मैं अपने आपको खोल पा रहा हूँ।

- आप ठीक कहते हैं। हम सबकी हालत कमोबेश एक जैसी ही है। हम में से किसी का भी अपना कहने को कुछ भी नहीं है। जो कुछ अपना था भी वह भी उन्होंने रखवा लिया है। न हम कहीं जॉब तलाश कर सकते हैं और न वापिस भाग ही सकते हैं। हम में से कुछ ने एकाध बच्चा भी पैदा करके अपने गले के फंदे को और भी मजबूती से कसवा लिया है। मैं खुद पछता रहा हूँ कि मैं इस बच्चे वाले चक्कर में फंसा ही क्यों। खैर। मैं तो अब इस बारे में सोचता ही नहीं... जो है जैसा है, चलने दो, लेकिन आप नये आये हैं, अकेले हैं और किसी को जानते भी नहीं हैं। न हांडा परिवार में और न हममें से किसी को। और शायद आप सोचते भी बहुत हैं, इसीलिए भी आपको ऐसा लगता रहा है।

शिशिर की बात सुन कर मेरा दबा आक्रोश फिर सिर उठा रहा है। शिशिर मेरे मन की बात ही तो कर रहा है - हम बंधुआ मजदूर ही तो हैं जिनकी आज़ादी का कोई जरिया नहीं है।

आज मैंने और शिशिर ने इस पहली ही मुलाकात में अपने अपने जख्म एक दूसरे के सामने खोल दिये हैं। एक मायने में शिशिर की हालत मुझसे अलग और बेहतर है कि वह घर परिवार से आया है, मेरी तरह घर की तलाश में नहीं आया। उसके पीछे इंडिया में कुछ जिम्मेदारियां हैं जिन्हें वह चोरी छुपे पूरी कर रहा है। उसने हेरा-फेरी के कुछ बहुत ही बारीक तरीके ढूँढ लिये हैं या इजाद कर लिये हैं और इस तरह हर महीने चार पांच सौ पौंड अलग से बचा लेता है। इस तरह से कमाये हुए पैसों को वह नियमित चैनलों से भारत भेज रहा है।

मैं उसकी बात सुन कर दंग रह गया हूँ। उसने मेरा हाथ दबाया है - आप ही पहले शख्स हैं जिसे मैंने इस सीक्रेट में राज़दार बनाया है। मैंने अपने घर वालों को सख्त हिदायत दे रखी है कि भूल कर भी अपने पत्रों में रुपये पैसे मंगाने या पाने का जिक्र न करें। अपनी पर्सनल डाक भी मैं अलग-अलग दोस्तों के पत्रों पर मंगाता हूँ और ये पते बदलता रहता हूँ। वह बता रहा है - पहले मैं भी आपकी तरह कुढ़ता रहता था लेकिन जब मैंने देखा कि यहां की गुलामी तो हम चाह कर भी खत्म नहीं कर सकते और मरते दम तक हांडा परिवार के गुलाम ही बने रहेंगे तो फिर हमीं क्यों हरिश्चंद्र की औलाद बने रहें। पहले तो मैं भी बहुत डरा, मेरी आत्मा गवारा ही नहीं करती थी। आज तक मैंने कोई ऐसा काम नहीं किया था लेकिन आज तक किसी ने मेरा शोषण भी नहीं किया था इसलिए मैंने भी मन मार कर ये सब करना शुरू कर दिया है, बेशक चार पांच सौ पौंड यहां के लिहाज से कुछ नहीं होते लेकिन वहां मेरा पूरा घर इसी से चलता है। इनके भरोसे रहें तो जी चुके हम और हमारे परिवार वाले।

शिशिर से मिलने के बाद बहुत सुकून मिला है। एक अहसास यह भी है कि मैं ही अकेला नहीं हूँ। दूसरा, यह भी कि शिशिर है जिससे मैं कभी-कभार सलाह ले सकता हूँ या अपने मन की बात कह सकता हूँ।

शिशिर ने वादा किया है कि वह नियमित रूप से फोन करता रहेगा और हफ्ते दस दिन में मिलता भी रहेगा।

इधर गौरी बहुत खुश है कि मैंने हांडा परिवार के लिए, अपने ससुराल के लिए, गौरी के मायके के लिए इतना कुछ किया है। लेकिन मैं ही जानता हूँ कि इन दिनों मैं किस मानसिक द्वंद्व से गुजर रहा हूँ। गौरी का साथ भी अब मुझे उतना सुख नहीं दे पाता। जब मन ही ठिकाने पर न हो तो तन कैसे रहेगा।

अभी उस दिन मैं अपने पुराने कागज देख रहा था तो देखा - मेरे सारे पेपर्स अटैची में से गायब हैं। मैं एकबारगी तो घबरा ही गया कि कहीं चोरी तो नहीं चले गये हैं। जब गौरी से पूछा तो वह लापरवाही से बोली - संभाल कर रख दिये हैं। तुमने तो इतनी लापरवाही से खुली अटैची में रखे हुए थे। वैसे भी तुम्हें क्या ज़रूरत है इन सब पेपर्स की?

में चुप रह गया था। क्या जवाब देता। मैं जानता था कि गौरी झूठ बोल रही है। मेरे पेपर्स खली अटैची में तो कल्टई नहीं रखे हुए थे। मैं कभी भी अपनी चीजों के बारे में लापरवाह नहीं रहा।

डिपार्टमेंटल स्टोर का सारा हिसाब-किताब कम्प्यूटराइज्ड होने के कारण मैं हमेशा खाली हाथ ही रहता हूँ। यहां तक कि मुझे अपनी पर्सनल ज़रूरतों के लिए भी गौरी पर निर्भर रहना पड़ता है। मैं भरसक टालता हूँ लेकिन फिर भी शेव, पेट्रोल, बस, ट्राम, ट्यूब वगैरह के लिए ही सही, कुछ तो पैसों की जरूरत पड़ती ही है। मांगना अच्छा नहीं लगता और बिन मांगे काम नहीं चलता। इस कुनबे के अलिखित नियमों में से एक नियम यह भी है कि कोई भी कहीं से भी हिसाब में से पैसे नहीं निकालेगा। निकाल सकता भी नहीं क्योंकि कैश आपके हाथों तक पहुंचता ही नहीं और न सिस्टम में कहीं गुंजाइश ही है। ज़रूरत है तो अपनी अपनी बीवी से मांगो। बहुत कोफ्त होती है गौरी से पैसे मांगने में। बेशक घर में अलमारी में ढेरों पैसे रखे रहते हैं और गौरी ने कह भी रखा है कि पैसे कहां रखे रहते हैं जब भी ज़रूरत हो ले लिया करूँ लेकिन इस तरह पैसे उठाने में हमेशा मुझे क्या किसी को भी संकोच ही होगा। यहां तो न बोलने का इजाज़त है न किसी बात पर उंगली उठाने की।

दिन भर स्टोर में ऐसी-तैसी कराओ, रात में थके हारे आओ। मूड है तो नहाओ, अगर गौरी जाग रही है तो डिनर उसके साथ लो, नहीं तो अकेले खाना भकोसो और अंधेरे में उसके बिस्तर में घुस कर, इच्छा हो या न हो, सैक्स का रिचुअल निभाओ। बात करने का कोई मौका ही नहीं। अगर कभी बहुत जिद कर के बात करने की कोशिश भी करो तो गौरी की भृकुटियां तन जाती हैं - तुम्हीं अकेले ही तो नहीं खटते डियर, यहां सभी बराबरी का काम करते हैं। मैं भी तो तुम्हारे बराबर ही काम करती हूँ, मैंने तो कभी अपने लिए अलग से कुछ नहीं मांगा। तुम्हारी सारी ज़रूरतें तो ठाठ से पूरी हो रही हैं।

मैं उसे कैसे बताऊँ कि ये ज़रूरतें तो मैं भारत में भी बहुत शानदार तरीके से पूरी कर रहा था और अपनी शर्तों पर कर रहा था। मैं यहां कुछ सपने ले कर आया था। घर के, परिवार के और एक सुकून भरी ज़िंदगी के, प्यार दे कर प्यार पाने के लेकिन गौरी के पास न तो इन सारी बातों को समझ सकने लायक दिमाग है और न ही फुर्सत।

एक अच्छी बात हुई कि देवेन्द्र जी ने टीआइएफआर से मेरे बकाया पैसे ले कर अपने किसी परिचित के जरिये का हवाला के जरिये यहीं पर दिलवा दिये हैं। उनके ऑफिस का कोई आदमी यहां आया हुआ है। उसे बंबई अपने घर पैसे भिजवाने थे। उसके पैसे देवेन्द्र जी ने वहीं बंबई में दे दिये हैं और वह आदमी मुझे यहीं पर पाउंड दे गया है। फिलहाल मुझे एक हजार पाउंड मिल गये हैं और मैं रातों रात अमीर हो गया हूँ। हँसी भी आती है अपनी अमीरी पर। इतने पैसे तो गौरी दो दिन में ही खर्च कर देती है। मेरी तो इतने भर से ही काफी बड़ी समस्या हल हो गयी है। पैसों को ले कर गौरी से रोज़ रोज़ की खटपट के बावजूद आज मैंने उसे डिनर दिया है। मेरी अपनी कमाई में से पहला डिनर। बेशक कमाई पहले की है। फिर भी इस बात की तसल्ली है कि घर जवाँई होने के बावजूद मेरे पास आज अपने पैसे हैं। गौरी डिनर खाने के बावजूद मेरे सैंटीमेंट्स को नहीं समझ पायी। न ही उसने ये पूछा कि जब तुम्हारे पास पैसे नहीं होते तो तुम कैसे काम चलाते हो ! क्यों अपनी ये छोटी सी पूंजी को इस तरह उड़ा रहे हो, हजार पाउंड आखिर होते ही कितने हैं? लेकिन उसने एक शब्द भी नहीं कहा।

आज की डाक में तीन पत्र एक साथ आये हैं। तीनों ही पत्र परेशानी बढ़ाने वाले हैं।

पहला खत गुड्डी का है।

लिखा है उसने

- वीरजी,

सत श्री अकाल

कैसे लिखूं कि यहां सब कुछ कुशल है। होता तो लिखने की जरूरत ही न पड़ती। आप भी क्या सोचते होंगे वीरजी कि हम लोग छोटे-छोटे मसले भी खुद सुलटा नहीं सकते और सात समंदर पार आपको परेशान करते रहते हैं। मैं आपको आखरी बार परेशान कर रही हूं वीरजी। अब कभी नहीं करूंगी। मैं हार गयी वीर जी। मेरी एक न चली और मेरे लिए तीन लाख नकद और अच्छे कहे जा सकने वाले दहेज में एक इंजीनियर खरीद लिया गया हालांकि उसका बाजार भाव तो बहुत ज्यादा था। वीर जी, ये कैसा फैसला है जो मेरी बेहतरी के नाम पर मुझ पर थोपा जा रहा है।

दारजी को उस गोभी के पकोड़े जैसी नाक वाले इंजीनियर मे पता नहीं कौन से लाल लटकते नज़र आ रहे थे कि बस हां कर दी कि हमें रिश्ता मंज़ूर है जी। आप कहेंगे वीरजी, मेरी मर्जी के खिलाफ मेरी शादी हो रही है और मुझे मजाक सूझ रहा है। हँसूँ नहीं तो और क्या करूँ वीर जी। मैं कितना रोई, छटपटाई, दौड़ कर नंदू वीरजी को भी बुला लायी लेकिन दारजी ने उन्हें देखते ही बरज दिया- यह हमारा घरेलू मामला है बरखुरदार..। जब आधी-आधी रात को पैसे चाहिये होते हैं तो यही नंदू वीरजी सबसे ज्यादा सगे हो जाते हैं और जब वे मेरे पक्ष में सही बात करने के लिए आये तो वे बाहर के आदमी हो गये।

मेरा तो जी करता है कहीं भाग जाऊं। काश, हम लड़कियों के लिए भी घर छोड़ कर भागना आसान हो पाता। गलत न समझें लेकिन आप इतने सालों बाद घर लौट कर आये तो सबने आपको सर आंखों पर बिठाया। अगर मैं एक रात भी घर से बाहर गुजार दूँ तो मां-बाप तो मुझे फाड़ खायेंगे ही, अड़ोसी-पड़ोसी भी लानतें भेजने में किसी से पीछे नहीं रहेंगे।

ऐसा क्यों होता है वीरजी, ये हमारे दोहरे मानदंड क्यों। आप को संतोष पसंद नहीं थी तो आप एक बार फिर घर छोड़ कर भाग गये। किसी ने आपको तो कुछ भी नहीं कहा.. लेकिन मुझे वो पकोड़े जैसी नाक वाला आदमी रत्ती भर भी पसंद नहीं है तो मैं कहां जाऊं। क्यों नहीं है मुक्ति हम लड़कियों की। जो रास्ता आपके लिए सही है वही मेरे लिए गलत क्यों हो जाता है। मैं क्यों नहीं अपनी पसंद से अपनी ज़िंदगी के फैसले ले सकती !! आप हर बार पलायन करके भी अपनी बातें मनवाने में सफल रहे। आप बिना लड़े भी जीतते रहे और मैं लड़ने के बावजूद क्यों हार रही हूँ। क्या विकल्प है मेरे पास वीरजी !!

मैं भी घर से भाग जाऊं !! सहन कर पायेंगे आप कि आपकी कविताएं लिखने वाली और समझदार बहन जिस पर आपको पूरा भरोसा था, घर से भाग गयी है। संकट तो यही है वीरजी, कि भाग कर भी तो मेरी या किसी भी लड़की की मुक्ति नहीं है। अकेली लड़की कहां जायेगी और कहां पहुंचेगी। अकेली लड़की के लिए तो सारे रास्ते वहीं जाते हैं। मैं भी आगे पीछे वहीं पहुंचा दी जाऊंगी। मेरे पास भी सरण्डर करने के और कोई उपाय नहीं है। बीए में पढ़ने वाली और कविताएं लिखने वाली बेचारी लड़की भूख हड़ताल कर सकती है, जहर खा सकती है, जो मैं नहीं खाऊंगी। तीन महीने बाद, इसी वैसाखी पर मैं दुल्हन बना दी जाऊंगी। हो सकता है, अब तक आपके पास दारजी का पत्र पहुंच गया हो। आप नंदू वीर जी को फोन करके बता दें कि उनके पास जो चैक रखे हैं उनका क्या करना है।

मुझे नहीं पता दारजी ने किस भरोसे से पकौड़े वालों से तीन लाख नकद की बात तय कर ली है। रबब न करे इंतज़ाम न हो पाया तो स्टोव तो मेरे लिए ही फटेगा।

कब से ये सारी चीजें मुझे बेचैन कर रही थीं। आपको न लिखती तो किसे लिखती वीर जी, आप ही ने तो मुझे बोलना सिखाया है। बेशक मैं वक्त आने पर अपने हक के लिए नहीं बोल पायी।

मेरी बेसिर पैर की बातों का बुरा नहीं मानेंगे।

आपकी लाडली

गुरप्रीत कौर

उसने इतनी चिट्ठियों में पहली बार अपना नाम गुरप्रीत लिखा है। मैं उसकी हालत समझ सकता हूँ।

दूसरा खत नंदू का है, लिखा है उसने -

प्रिय दीपजी

अब तक आपको गुड्डी का पत्र मिल गया होगा। मेरे पास आयी थी। बहुत रोती थी बेचारी कि मैं शादी से इनकार नहीं करती कम से कम मुझे पढ़ाई तो पूरी करने दें। मेरा और मेरे वीरजी का सपना है कि मैं एमबीए करूं। सच मान मेरे वीरा, मैं भी दारजी को समझा-समझा कर थक गया कि उसे पढ़ाई तो पूरी कर लेने दो। आखिर मैंने एक चाल चली। तुमने जो चैक मेरे पास रख छोड़े हैं, उनके बारे में उन्हें कुछ भी नहीं पता। ये पैसे मैं उन्हें ऐन वक्त पर ही दूंगा कि दीपजी ने भेजे हैं.. तो उन्हीं पैसों को ध्यान में रखते हुए मैंने उन्हें समझाया कि आखिर दीप को भी तो कुछ समय दो कि वह अपनी बहन के लिए लाख दो लाख का इंतज़ाम कर सके। उसकी भी तो नयी नौकरी है और परदेस का मामला है। कुछ भी ऊंच-नीच हो सकती है। बात उनके दिगाम में बैठ गयी है, और वे कम से कम इस बात के लिए राजी हो गये हैं कि वे लड़के वालों को कहेंगे कि भई अगर शादी धूमधाम से करना चाहते हो तो वैसाखी के बाद ही शादी हो पायेगी। मेरा खयाल है तब तक गुड्डी के बीए फाइनल के पेपर हो चुके होंगे। तब तक वह अपनी पढ़ाई भी बिना किसी तकलीफ के कर पायेगी।

थोड़ी सी गलती मेरी भी है कि मैंने यहां पर लंदन में तुम्हारी नौकरी, रुतबे, और दूसरी चीजों की कुछ ज्यादा ही हवा बांध दी है जिससे दारजी हवा में उड़ने लगे हैं।

तू यहां की चिंता मत करना। मैं अपनी हैसियत भर संभाले रहूंगा। गुड्डी का हौसला बनाये रखूंगा। वैसे लड़का इतना बुरा भी नहीं है। कोई आदमी किसी को पसंद ही न आये तो सारी अच्छाइयों के बाद भी उसमें ऐब ही ऐब नजर आते हैं। वैसे भी गुड्डी इस वक्त तनावों से गुजर रही है और किसी से भी शादी से बचना चाह रही है। अपना खयाल रखना..मैं यहां की खबर देता रहूंगा। तू निश्चिंत रह।

तेरा ही

नंदू

तीसरा खत दारजी का है।

बेटे दीप जी

खुश रहो।

बाकी खास खबर ये है कि सानू गुड्डी के लिए एक बहुत ही चंगा लड़का ते रजेया कजेया घर मिल गया है। असां सगाई कर दित्ती है। लड़का बिजली महकमे विच इंजीनियर है और उनकी कोई खास डिमांड नहीं है। बाकी बाजार में जो दस्तूर चल रहा है तीन-चार लाख आजकल होता क्या है। लोग मुंह खोल के बीस-बीस लाख मंग भी रहे हैं और देण वाले दे भी रहे हैं। ज्यादा दूर क्यों जाइये। त्वाडे वास्ते भी तो पांच छः लाख नकद और कार और दूसरी किन्नी ही चीजों की ऑफर थी। आखिर देण वाले दे ही रहे थे कि नहीं। अब हम इतने नंगे बुच्चे भी तो नहीं हैं कि कुड़ी को खाली हाथ टोर दें। आखिर उसका भाई भी बड़ा इंजीनियर है और विलायत विच काम करता है। हमें तो सारी बातें देखणी हैं और बिरादरी में अपनी नाक भी ऊंची रखणी है।

बाकी हम तो एक दो महीने में ही नेक कारज कर देना चाहते थे कि कुड़ी अपने घर सुख सांद के साथ पहुंच जाये लेकिन नंदू की बात मुझे समझ में आ गयी है कि रकम का इंतजाम करने में हमें कुछ वकत तो लग सकता है। परदेस का मामला है, और फिर रकम इन्नी छोटी वीं नइं है। बाकी अगर ते त्वाडा आना हो सके तो इस तों चंगी कोई गल्ल हो ही नहीं सकती। बाकी तुसी वेख लेणा। बाकी गौरी नूं असां दोंवां दी असीस।

तुम्हारा

दारजी

समझ में नहीं आ रहा कि इन पत्रों का क्या जवाब दूं। अपने यहां के मोरचे संभालूं या देहरादून के। दोनों ही मोर्चे मुझे पागल बनाये हुए हैं। गुड्डी ने तो कितनी आसानी से लिख दिया है बेशक भारी मन से ही लिखा है लेकिन मैं कैसे लिख दूं कि यहां भी सब खैरियत है जबकि सब कुछ तो क्या कुछ भी ठीक ठाक नहीं है। मैं तो चाह कर भी नहीं लिख सकता कि मेरी प्यारी बहना, खैरियत तो यहां पर भी नहीं है। मैं भी यहां परदेस में अपने हाथ जलाये बैठा हूं और कोई मरहम लगाने वाला भी नहीं है।

तीनों चिट्ठियां पिछले चार दिन से जेब में लिये घूम रहा हूं। तीनों ही खत मेरी जेब जला रहे हैं और मैं कुछ भी नहीं कर पा रहा हूं। बात करूं भी तो किससे? कोई भी तो नहीं है यहां मेरा जिससे अपने मन की बात कह सकूं। गौरी से कुछ भी कहना बेकार है। पहले दो एक मौकों पर मैं उसके सामने गुड्डी का जिक्र करके देख चुका हूं। अब उसकी मेरे घर बार के मामलों में कोई दिलचस्पी नहीं रही है। बल्कि एक आध बार तो उसने बेशक गोल-मोल शब्दों में ही इशारा कर दिया था - डीयर, तुम छोड़ो अब वहां के पचड़ों को। तुम अपने नसीब को भोगो। वे अपनी किस्मत का वहीं मैनेज कर ही लेंगे।

अचानक शिशिर का फोन आया है तो मुझे सूझा है, उसी से अपनी बात कह कर मन का कुछ तो बोझ हलका किया जा सकता है।

शिशिर को बुलवा लिया है मैंने। हम बाहर ही मिले हैं। उसे मैं संक्षेप में अपनी बैकग्राउंड के बारे में बताता हूँ और तीनों पत्र उसके सामने रखता हूँ। वह तीनों पत्र पढ़ कर लौटा देता है।

- क्या सोचा है तुमने इस बारे में। पूछता है शिशिर।

- मैं यहां आने से पहले गुड्डी के लिए वैसे तो इंतज़ाम कर आया था। उसे मैं तीन लाख के ब्लैंक चैक दे आया था। दारजी को इस बारे में पता नहीं है। मैं बेशक यहां से न तो ये शादी रुकवा सकता हूँ और न ही उसके लिए यहां या वहां बेहतर दूल्हा ही जुटा सकता हूँ। अब सवाल यह है कि उसकी ये शादी मैं रुकवाऊं तो रुकवाऊं कैसे? वैसे नंदू इसे अप्रैल तक रुकवाने में सफल हो ही चुका है। तब तक वह बीए कर ही लेगी। मुझे कुछ सूझ नहीं रहा है इसीलिए तुम्हें मैंने बुलाया था।

- फिलहाल तो तुम यही करो कि गुड्डी को यही समझाओ कि जब तक शादी टाल सके टाले, जब बिलकुल भी बस न चले तो करे शादी। दारजी को भी एक बार लिख कर तो देख लो कि उसे पढ़ने दें। एक बार शादी हो जाने के बाद कभी भी पढ़ाई पूरी नहीं हो पाती। और अगर गुड्डी को लड़का पसंद नहीं है तो क्यों नहीं वे कोई बेहतर लड़का देखते। बीए करने के बाद तो गुड्डी के लिए बेहतर रिश्ते भी आयेंगे ही।

- हां, ये ठीक रहेगा। मैं इन्हीं लाइंस पर तीनों को लिख देता हूँ। आज तुम से बात करके मेरा आधी परेशानी दूर हो गयी है।

- ये सिर्फ तुम्हारी ही समस्या नहीं है मेरे दोस्त। वहां घर घर की यही कहानी है। अगर तुम्हारी गुड्डी की शादी के लिए तुम्हें लिखा जा रहा है तो मेरी बहनों अनुश्री और तनुश्री की शादी के लिए भी मेरे बाबा भी मुझे इसी तरह की चिट्ठियां लिखते हैं। तुम लकी हो कि तुम गुड्डी के लिए कम से कम तीन लाख का इंतज़ाम करके तो आये थे और इस फ्रंट के लिए तुम्हें रातों की नींद तो खराब नहीं करनी है। हर समय ये हिसाब तो नहीं लगाना पड़ता कि तुम्हारा जुटाया या बचाया या चुराया हुआ एक पाउंड वहां के लिए क्या मायने रखता है और उनकी कितनी ज़रूरतें पूरी करता है। मुझे यहां खुद को मेनटेन करने के लिए तो हेराफेरी करनी ही पड़ती है, साथ ही वहां का भी पूरा हिसाब-किताब दिमाग में रखना पड़ता है। मुझे न केवल दोनों बहनों के लिए यहीं से हर तरह के दंड फंड करके दहेज जुटाना पड़ा बल्कि मैं तो आज भी बाबा, मां और दोनों बहनों, जीजाओं की हर तरह की मांगें पूरी करने के लिए अभिशप्त हूँ। मैं पिछले चार साल से यानी यहां आने के पहले दिन से ही यही सब कर रहा हूँ।

- तो बंधु, हम लोगों की यही नियति है कि घर वालों के सामने सच बोल नहीं सकते और झूठ बोलते बोलते, झूठी ज़िंदगी जीते जीते एक दिन हम मर जायेंगे। तब हमारे लिए यहां कोई चार आंसू बहाने वाला भी नहीं होगा। वहां तो एक ही बात के लिए आंसू बहाये जायेंगे कि पाउंड का हमारा हरा-भरा पेड़ ही सूख गया है। अब हमारा क्या होगा।

- कभी वापिस जाने के बारे में नहीं सोचा?

- वापिस जाने के बारे में मैं इसलिए नहीं सोच सकता कि शिल्पा और मॉटू मेरे साथ जायेंगे नहीं। अकेले जाने का मतलब है - तलाक ले कर, सब कुछ छोड़-छाड़ कर जाओ। फिर से नये सिरे से ज़िंदगी की शुरुआत !! वह अब इस उम्र में हो नहीं पायेगा। अब यहां जिस तरह की ज़िंदगी की तलब लग गयी है, वहां ये सब कहां नसीब होगा।



खटना तो वहां भी पड़ेगा ही लेकिन हासिल कुछ होगा नहीं। जिम्मेवारियां कम होने के बजाये बढ़ ही जायेंगी। तो यहीं क्या बुरा है।

- तुम सही कह रहे हो शिशिर। आदमी जिस तरह की अच्छी बुरी ज़िंदगी जीने का आदी हो जाता है, उम्र के एक पड़ाव के बाद उसमें चेंज करना इतना आसान नहीं रह जाता। मैं भी नहीं जानता, क्या लिखा है मेरे नसीब में। यहां या कहीं और, कुछ भी तय नहीं कर पाता। वहां से भाग कर यहां आया था, अब यहां से भाग कर कहां जाऊंगा। यहां कहने को हम हांडा खानदान के दामाद हैं लेकिन अपनी असलियत हम ही जानते हैं कि हमारी औकात क्या है। हम अपने लिए सौ पाउंड भी नहीं जुटा सकते और अपनी मर्जी से न कुछ कर सकते हैं न किसी के सामने अपना दुखड़ा ही रो सकते हैं।

- आयेंगे अच्छे दिन भी, शिशिर हँसता है और मुझसे विदा लेता है।

मैं शिशिर के सुझाये तरीके से दारजी और गुड्डी को संक्षिप्त पत्र लिखता हूँ। एक पत्र नंदू को भी लिखता हूँ। मैं जानता हूँ कि इन खतों का अब कोई अर्थ नहीं है फिर भी गुड्डी की हिम्मत बढ़ाये रखनी है। मैंने दारजी को यह भी लिख दिया है कि मैं यहां गुड्डी के लिए कोई अच्छा सा लड़का देखता रहूंगा। अगर इंतज़ार कर सकें। उस इंजीनियर से अच्छा लड़का यहां भी देखा जा सकता है लेकिन इसके लिए वे मुझे थोड़ा टाइम जरूर दें।

बहुत दिनों बाद मिला है शिशिर इस बार।

- कैसे हो, दीप, तुम्हारे पैकैजेस ने तो धूम मचा रखी है।

- जाने दो यार, अब उनकी बात मत करो। अपनी कहो, नयी फैक्टरी की बधाई लो शिशिर, सुना है तुमने इन दिनों हांडा ग्रुप को अपने बस में कर रखा है। तुम्हारे लिए एक फैक्टरी लगायी जा रही है। इससे तो तुम्हारी पोजीशन काफी अच्छी हो जायेगी।

- वो सब शिल्पा के ज़रिये ही हो पाया है। मैंने उसे ही चने के झाड़ पर चढ़ाया कि मैं कब तक गैस स्टेशनों पर हाथों की ग्रीस उतारने के लिए उससे साबुन मांगता रहूंगा, आखिर वही सबसे बड़ी है। उसके हसबैंड को भी अच्छी पोजीशन दी जानी चाहिये। बस बात क्लिक कर गयी और ये फैक्टरी हांडा ग्रुप ने मेरे बेटे के नाम लगाने का फैसला किया है।

- चलो, कहीं तो मॉटू की किस्मत चमकी।

- खैर, तुम कहो, होम फ्रंट पर कैसा चल रहा है। पूछा है शिशिर ने।

- बस, चल ही रहा है। मैं भरे मन से कहता हूँ।

- क्या कोई ज्यादा डिफरेंसेंस हैं?

- हैं भी और नहीं भी। अब तो कई बार तो हममें बात तक नहीं होती।

- कोई खास वज़ह?

- यही वज़ह क्या कम है? जब आपका मन ही ठिकाने पर न हो, आप को मालूम हो कि आपके आस पास जो कुछ भी है, एक झूठा आवरण है और कदम कदम पर झूठ बोल कर आपको घेर कर लाया गया है तो आप अपने सबसे नजदीकी रिश्ते भी कहां जी पाते हैं। और उस उस रिश्ते में भी खोट हो तो ...। खै। मेरी छोड़ो, अपनी कहो।

- नहीं दीप नहीं, तुम्हारी बात को यूँ ही नहीं जाने दिया जा सकता। अगर तुम इसी तरह घुटते रहे तो अपनी ही सेहत का फलूदा बनाओगे। यहां तब कोई पूछने वाला भी नहीं मिलेगा। मुझसे मत छिपाओ, मन की बात कह दो। आखिर मैं इन लोगों को तुमसे तो ज्यादा ही जानता हूँ। सच बताओ, क्या बात है। उसने मेरे कंधे पर हाथ रखा है।

- सच बात हो यह है कि मैं थक गया हूँ। अब बहुत हो गया। आदमी कब तक अपना मन मार कर रहता रहे, जबकि सुनवाई कहीं नहीं है। यहां तो हर तरफ झूठ ही झूठ है।

- बताओ तो सही बात क्या है।

- कुछ दिन पहले हम एक कपबोर्ड का सामान दूसरे कमरे में शिफ्ट कर रहे थे तो गौरी के पेपर्स में मुझे उसका का बायोडाटा मिला। आम तौर पर मैं गौरी की किसी भी चीज़ को छूता तक नहीं और न ही उसके बारे में कोई भी सवाल ही पूछता हूँ। दरअसल उन्हीं कागजों से पता चला कि गौरी सिर्फ दसवीं पास है जबकि मुझे बताया गया था कि वह ग्रेजुएट है। मुझे समझ नहीं आ रहा कि इस बारे में भी मुझसे झूठ क्यों बोला गया? मुझे तो यह भी बताया गया था कि वह अपनी कम्पनी की फुल टाइम डाइरेक्टर है। यहां तो वह सबसे कम टर्नओवर वाले फ्लोरिस्ट स्टाल पर है और स्टाल का एकाउंट भी सेन्ट्रलाइज है।

- यही बात थी या और भी कुछ?

- तो क्या यह कुछ कम बात है। मुझसे झूठ तो बोला ही गया है ना....।

- तुम मुझसे अभी पूछ रहे थे ना कि मैंने अपनी पोजीशन काफी अच्छी कैसे बना रखी है। तो सुनो, मेरी बीबी शिल्पा डाइवोर्सि है और यह बात मुझसे भी छुपायी गयी थी।

- अरे...तो पता कैसे चला तुम्हें...?

- इन लोगों ने तो पूरी कोशिश की थी कि मुझ तक यह राज़ जाहिर न हो लेकिन शादी के शुरू शुरू में शिल्पा के मुंह से अक्सर संजीव नाम सुनाई दे जाता लेकिन वह तुरंत ही अपने आप को सुधार लेती। कई बार वह मुझे भी संजीव नाम से पुकारने लगती। हनीमून पर भी मैंने पाया था कि उसका बिहेवियर कम से कम कुंवारी कन्या वाला तो नहीं ही था। वापिस आ कर मैंने पता किया, पूरे खानदान में संजीव नाम का कोई भी मेम्बर नहीं रहा था। मेरा शक बढ़ा। मैंने शिल्पा को ही अपने विश्वास में लिया। जैसे वही मेरी ज़िंदगी की सबसे बड़ी खुशी हो। उसे खूब प्यार दिया। फिर उसके बारे में बहुत कुछ जानने की इच्छा जाहिर की। वह झांसे में आ गयी। बातों बातों में उसके दोस्तों का जिक्र आने लगा तो उसमें संजीव का भी जिक्र आया। वह इसका क्लास फेलो था। पता चला, हमारी शादी से दो साल पहले उन दोनों की शादी हुई थी। यह शादी कुल चार महीने चली थी। हालांकि मैं अब इस धोखे के खिलाफ कुछ नहीं कर सकता था लेकिन मैंने इसी जानकारी को तुरुप के पत्ते की तरह इस्तेमाल करना शुरू कर दिया। शिल्पा भी समझ गयी कि मुझे सब पता चल चुका है। तब से मेरी कोई भी बात न तो टाली जाती है और न

ही कोई मेरे साथ कोई उलटी सीधी हरकत ही करता है। बल्कि जब जरूरत होती है, मैं उसे ब्लैक मेल भी करता रहता हूँ। कई बार तो मैंने उससे अच्छी खासी रकम भी ऐंठी हैं।

- लेकिन इतनी बड़ी बात जान कर भी चुप रह जाना.... मेरा तो दिमाग खराब हो जाता..।

- दीप तुम एक बात अच्छी तरह से जान लो। मैंने भी अपने अनुभव से जानी है और आज यह सलाह तुम्हें भी दे रहा हूँ। बेशक शिल्पा डाइवोर्स थी और यह बात मुझसे छिपायी गयी लेकिन यहां लंदन में तुम्हें कोई लड़की कुंवारी मिल जायेगी, इस बात पर सपने में यकीन नहीं किया जा सकता। अपोज़िट सैक्स की फ्रेंडशिप, मीटिंग और आउटिंग, डेटिंग और इस दौरान सैक्स रिलेशंस यहां तेरह चौदह साल की उम्र तक शुरू हो चुके होते हैं। अगर नहीं होते तो लड़की या लड़का यही समझते हैं कि उन्हीं में कोई कमी होगी जिसकी वज़ह से कोई उन्हें डेटिंग के लिए बुला नहीं रहा है। कोई कमी रह गयी होगी वाला मामला ऐसा है जिससे हर लड़का और लड़की बचना चाहते हैं। दरअसल ये चीजें यहां इतनी तेजी से और इतनी सहजता से होती रहती हैं कि सत्तर फीसदी मामलों में नौबत एबार्शन तक जा पहुंचती है। अगर शादी हो भी जाये तो रिलेशंस पर से चांदी उतरते देर नहीं लगती। तब डाइवोर्स तो है ही सही। इसलिए जब मैंने देखा कि ऐसे भी और वैसे भी यहां कुंवारी लड़की तो मिलने वाली थी नहीं, यही सही। बाकी अदरवाइज शिल्पा इज ए वेरी गुड वाइफ। दूसरी तकलीफें अगर मैं भुला भी दू तो कम से कम इस फ्रंट पर मैं सुखी हूँ।

हँसा है शिशिर - बल्कि कई बार अब मैं ही रिश्तों में बेईमानी कर जाता हूँ और इधर-उधर मुंह मार लेता हूँ। वैसे भी दूध का धुला तो मैं भी नहीं आया था। यहां भी वही सब जारी है।

- यार, तुम्हारी बातें तो मेरी आंखें खोल रही हैं। मैं ठहरा अपनी इंडियन मेंटैलिटी वाला आम आदमी। इतनी दूर तक तो सोच भी नहीं पाता। वैसे भी तुम्हारी बातों ने मुझे दोहरी दुविधा में डाल दिया है। इसका मतलब ..

- पूछो.. पूछो.. क्या पूछना चाहते हे.. शिशिर ने मेरी हिम्मत बढ़ाई है।

- तो क्या गौरी भी...?

- अब अगर तुममें सच सुनने की हिम्मत है और तुम सच सुनना ही चाहते हो और सच को झेलने की हिम्मत भी रखते हो तो सुनो, लेकिन यह बात सुनने से पहले एक वादा करना होगा कि इसके लिए तुम गौरी को कोई सज़ा नहीं दोगे और अपने मन पर कोई बोझ नहीं रखोगे।

- तुम कहो तो सही।

- ऐसे नहीं, सचमुच वादा करना पड़ेगा। वैसे भी तुम्हारे रिश्तों में दरार चल रही है। बल्कि मैं तो कहूंगा कि तुम भी अपनी लाइफ़ स्टाइल बदलो। हर समय देवदास की तरह कुढ़ने से न तो दुनिया बदलेगी और न कुछ हासिल ही होगा। उठो, घर से बाहर निकलो और ज़िंदगी को ढंग से जीओ। ये ज़िंदगी एक ही बार मिली है। इसे रो धो कर गंवाने के कुछ भी हासिल नहीं होने वाला।

- अरे भाई, अब बोलो भी सही।

- तो सुनो। गौरी को भी एबार्शन कराना पड़ा था। हमारी शादी के पहले ही साल। यानी तुम्हारी शादी से तीन साल पहले। उसे शिल्पा ही ले कर गयी थी। लेकिन मैंने कहा न.. ऐसे मामलों में शिल्पा या गौरी या विनिता या किसी भी लड़की का कोई कुसूर नहीं होता। यहां की हवा ही ऐसी है कि आप चाह कर भी इन रिश्तों को रोक नहीं सकते। मां-बाप को भी तभी पता चलता है जब बात इतनी आगे बढ़ चुकी होती है। थोड़ा बहुत रोना-धोना मचता है और सब कुछ रफा दफा कर दिया जाता है। इंडिया से कोई भी लड़का ला कर तब उसकी शादी कर दी जाती है। अब यही देखो ना, कि इस हांडा फेमिली के ही लड़के भी तो यहां की लड़कियों के साथ यही सब कुछ कर रहे होंगे और उन्हें प्रेगनेंट कर रहे होंगे।

- लेकिन ..गौरी भी.. अचानक मुझे लगता है किसी ने मेरे मुंह पर एक तमाचा जड़ दिया है या बीच चौराहे पर नंगा कर दिया है.. ये सब मेरे साथ ही क्यों होता है। मैं एकाएक चुप हो गया हूं।

- देखो दीप मैंने तुम्हें ये बात जानबूझ कर बतायी ताकि तुम इन इन्हीबीशंस से मुक्त हो कर अपने बारे में भी कुछ सोच सको। अब तुम ये भी तो देखो कि गौरी अब तुम्हारे प्रति पूरी तरह ईमानदार है बल्कि गौरी ने खुद ही शिल्पा को बताया था कि वह तुम्हें पा कर बहुत सुखी है। खुश है और शी इज रीयली प्राउड आफ यू। वह शिल्पा को बता रही थी कि वह एक रात भी तुम्हारे बिना नहीं सो सकती। तो भाई, अब तुम अपने इंडियन सैंटीमेंट्स की पुड़िया बना कर दफन करो और अपनी भी ज़िंदगी को एंजाय करो। वैसे बुरा मन मानना, गौरी ने तो तुमसे शादी से पहले के रिलेशंस के बारे में कुछ नहीं पूछा होगा।

मैं झेंपी हँसी हँसता हूँ - पूछ भी लेती तो उसे कुछ मिलने वाला नहीं था। गौरी से पहले तो मैंने किसी लड़की को चूमा तक नहीं था। बिस्तर पर मैं कितना अनाड़ी था, ये तो गौरी को पहली ही रात पता चल गया था।

- इसके बावजूद वह तुम्हारे बिना एक रात भी सोने के लिए तैयार नहीं है। इसका कोई तो मतलब होगा ही सही।

- तुम गौरी पर पूरा भरोसा रखो और उसके मन में इस बात के लिए कोई गिल्ट मत आने दो। अक्वल तो तुम बदला ले नहीं सकते। लेना भी चाहो तो अपना ही नुकसान करोगे। खैर, अब तुम मन पर बोझ मत रखो। बेईमानी करने को जी करता है तो जरूर करो लेकिन फॉर गॉड सेक, अपनी इस रोनी सूरत से छुटकारा पाओ। रियली इट इज किलिंग यू। ओके!! टेक केयर ऑफ यूअरसेल्फ।

शिशिर बेशक इतनी आसानी से सारी बातें कह गया था लेकिन मेरे लिए ये सारी बातें इतनी सहजता से ले पाना इतना आसान नहीं है। शिशिर जिस मिट्टी का बना हुआ है, उसने शिल्पा की सच्चाई जानने के बावजूद उसे न केवल स्वीकार कर रखा है बल्कि अपने तरीके से उसे ब्लैकमेल भी कर रहा है और रिश्तों में बेईमानी भी कर रहा है। ये तीनों बातें ही मुझसे नहीं हो पा रहीं। न मैं गौरी के अतीत का सच पचा पा रहा हूँ, न उसे ब्लैकमेल कर पाऊंगा और न ही इन सारी बातों के बावजूद पति-पत्नी के रिश्ते में बेईमानी ही कर पाऊंगा। हालांकि गौरी मेरी बगल में लेटी हुई है और मेरा हाथ उसके नंगे सीने पर है, वह रोज ऐसे ही सोती है, मेरे मन में उसके प्रति कोई भी कोमल भाव नहीं उपज रहा। आज भी उसकी सैक्स की बहुत इच्छा थी लेकिन मैंने मना कर दिया कि इस समय मूड नहीं है। बाद में रात को देखेंगे। अक्सर ऐसा भी हो जाता है। कई बार उसका भी मूड नहीं होने पर हम बाद के लिए तय करके सो जाते हैं और बाद में नींद खुलने पर इस रिचुअल को भी निभा लेते हैं। अब यह रिचुअल ही तो रहा है। न हमारे पास एक दूसरे के सुख दुख के लिए समय है न हम अपनी पर्सनल बातें ही एक दूसरे से शेयर कर

पाते हैं। डिनर या लंच हम एक साथ छुट्टी के दिनों में ही ले पाते हैं और एक दूसरे के प्रति पूरा आकर्षण खो चुके हैं। कम से कम मुझे तो ऐसा ही लगता है। मुझे पता है कि गौरी का मेरे प्रति आकर्षण का एक और एकमात्र कारण भरपूर सैक्स है और उसके बिना उसे नींद नहीं आती। मेरी मजबूरी है कि मुझे खाली पेट नींद नहीं आती। कई बार हमारा झगड़ा भी हो जाता है और हम दोनों ही किसी नतीजे पर पहुंचे बिना एक दूसरे से रूठ कर एक अलग-अलग सो जाते हैं लेकिन नींद दोनों को ही नहीं आती। गौरी को पता है मैं खाली पेट सो ही नहीं सकता और मुझे पता है जब तक उसे उसका टॉनिक न मिल जाये, वह करवटें बदलती रहेगी। कभी उठ कर बत्ती जलायेगी, कभी दूसरे कमरे में जायेगी, कोई किताब पढ़ने का नाटक करेगी या बार-बार मुझे सुनाते हुए तीखी बातें करेगी। उसके ये नाटक देर तक चलते रहेंगे। वैसे तो मैं भी नींद न आने के कारण करवटें ही बदलता रहूंगा। तब मान मनौव्वल का सिलसिला शुरू होगा और बेशक रोते धोते ही सही, कम्बख्त सैक्स भी ऐसी नाराज़गी भरी रातों में कुछ ज्यादा ही तबीयत से भोगा जाता है।

अब शिशिर की बातें लगातार मन को मथे जा रही हैं।

गौरी के इसी सीने पर किसी और का भी हाथ रहा होगा। गौरी किसी और से भी इसी तरह हर रोज सैक्स की, भरपूर सैक्स की मांग करती होगी और खूब एंजाय करने के बाद सोती होगी। आज यह मेरी बीवी बन कर मेरे साथ इस तरह अधनंगी लेटी हुई है, किसी और के साथ भी लेटती रही होगी। छी छी। मुझे ही ये सब क्यों झेलना पड़ता है!! मैं ही क्यों हर बार रिसेविंग एंड पर होता हूं। क्या मैं भी शिशिर की तरह गौरी से बेईमानी करना शुरू कर दूं या उसे ब्लैकमेल करना शुरू कर दूं। ये दोनों ही काम मुझसे नहीं होंगे और जिस काम के लिए शिशिर ने मुझे मना किया है, मैं वही करता रहूंगा। लगातार कुढ़ता रहूंगा और अपनी सेहत का फलूदा बनाता रहूंगा।

मेरा मन काम से उचटने लगा है। नतीजा यह हुआ है कि मैं घुटन महसूस करने लगा हूं। मेरी बेचैनी बढ़ने लगी है। मैं पहले भी अकेला था अब और अकेला होता चला गया हूं। इसी दौर में मैंने बाहर एकाध जगह काम की तलाश की है। काम बहुत हैं और मेरी लियाकत और ट्रेनिंग के अनुरूप हैं, लेकिन दिक्कतें हैं कि हांडा परिवार से कहा कैसे जाये और दूसरे वर्क परमिट को हासिल किया जाये।

कई बार इच्छा भी होती है कि मैं भी पैसे के इस समंदर में से अपनी मुट्टियों में भर कर थोड़े बहुत पाउंड निकाल लूं लेकिन मन नहीं माना। यह कोई बहुत इज्जतदार सिलसिला तो नहीं ही है। हम यहां बेशक बेगारी की जिंदगी जी रहे हैं और हेरा फेरी जैसी टुच्ची हरकतों से इस जलालत के बदले कुछ ही तो भरपाई हो पायेगी। हालांकि कई बार गौरी मेरी बेचैनी और छटपटाहट को समझने की कोशिश करती है लेकिन या तो उसके सामने भी बंधन हैं या फिर जिस तरह की उसकी परवरिश है, वहां इन सब चीजों के लिए कोई जगह ही नहीं है। हम पांच जवान, पढ़े-लिखे लड़के उस घर के जवाई हैं, बेशक घर जवाई लेकिन हैं तो उस खानदान में सबसे पढ़े लिखे, लेकिन हमें कभी भी घर के सदस्य की तरह ट्रीटमेंट नहीं मिलता। मैं इस घर में कभी भी, एक दिन के लिए भी, न तो कभी सहज हो पाया हूं और न ही मेरी नाराज़गी की, उदासी की वजह ही किसी ने पूछने की ज़रूरत ही समझी है।

दारजी और नंदू के पत्र आये हैं। आखिर गुड्डी की शादी कर ही दी गयी। लिखा है नंदू ने - टीचर्स की हड़ताल की वजह से मार्च में ही पता चल गया था कि बीए की परीक्षाएं अप्रैल में नहीं हो पायेंगी। गुड्डी ने दारजी से भी कहा था और मेरे ज़रिये भी दारजी कहलवाया था कि वह शादी से इनकार नहीं करती लेकिन कम से कम उसके इम्तिहान

तो हो जाने दें लेकिन दारजी ने साफ साफ कह दिया - शादी की सारी तैयारियां हो चुकी हैं अब तारीख नहीं बदलेंगे।

वही हुआ और गुड्डी इतनी कोशिशों के बावजूद बीए की परीक्षा नहीं दे पायी। मुझे नहीं लगता कि गुड्डी की ससुराल वाले इतने उदार होंगे कि उसे इम्तिहान में बैठने दें। वैसे मैं खुद गुड्डी के घरवाले से मिल कर उसे समझाने की कोशिश करूंगा। शादी ठीक-ठाक हो गयी है। बेशक तेरी गैर हाजरी में मैंने गुड्डी के बड़े भाई का फर्ज निभाया है लेकिन तू होता तो और ही बात होती। तेरी सलाह के अनुसार मैंने सारे पेमेंट्स कर दिये थे और दारजी तक यह खबर दे दी थी कि जो कुछ भी खरीदना है या लेनदेन करना है, मुझे बता दें। मैं कर दूंगा। मैंने उन्हें पटा लिया था कि दीप ने गुड्डी की शादी के लिए जो ड्राफ्ट भेजा है, वह पाउंड में है और उसे सिर्फ इन्टरनेशनल खाते में ही जमा किया जा सकता है। दारजी झांसे में आ गये और सारे खर्च मेरी मार्फत ही कराये। मैं इस तरीके से काफी फालतू खर्च कम करा सका। दारजी और गुड्डी के खत भी आगे पीछे पहुंच ही रहे होंगे।

नंदू के खत के साथ-साथ गुड्डी का तो नहीं पर दारजी का खत जरूर मिला है। इसमें भी गुड्डी की शादी की वही सारी बातें लिखी हैं जो नंदू ने लिखी हैं। अलबत्ता दारजी की निगाह में दूसरी चीजें ज्यादा अहमियत रखती हैं, वही उन्होंने लिखी हैं। मेरे भेजे गये पैसों से बिरादरी में उनकी नाक ऊंची होना, शादी धूमधाम से होना, फिर भी काफी कर्जा हो जाना वगैरह वगैरह। उन्होंने इस बात का एक बार भी जिक्र नहीं किया है कि गुड्डी उनकी ज़िद के कारण बीए होते होते रह गयी या वे इस बात की कोशिश ही करेंगे कि गुड्डी के इम्तिहानों के लिए उसे मायके ही बुला लेंगे। सारे खत में दारजी ने अपने वही पुराने राग अलापे हैं। इस बात का भी कोई जिक्र नहीं है कि ये सब मेरे कारण ही हो पाया है और कि अगर मैं वहां होता तो कितना अच्छा होता।

दारजी का पत्र पढ़ कर मैंने एक तरफ रख दिया है।

अलबत्ता अगर गुड्डी का पत्र आ जाता तो तसल्ली रहती।

इन दिनों खासा परेशान चल रहा हू। न घर पर चैन मिलता है न स्टोर्स में। समझ में नहीं आता, मुझे ये क्या होता जा रहा है। अगर कोई बंबई का कोई पुराना परिचित मुझे देखे तो पहचान ही न पाये, मैं वही अनुशासित और कर्मठ गगनदीप हू जो अपने सारे काम खुद करता था और कायदे से, सफाई से किया करता था। जब तक बंबई में था, मुझे ज़िंदगी में जरा सी भी अव्यवस्था पसंद नहीं थी और गंदगी से तो जैसे मुझे एलर्जी थी। अब यहां कितना आलसी हो गया हू। चीजें टलती रहती हैं। अब न तो उतना चुस्त रहा हू और न ही सफाई पसंद ही। अब तो शेव करने में भी आलस आने लगा है। कई बार एक-एक हफ्ता शेव भी नहीं करता। गौरी ने कई बार टोका तो दाढ़ी ही बढ़ानी शुरू कर दी है। मैं अब ऐसे सभी काम करता हू जो गौरी को पसंद नहीं हैं। छुट्टी के दिन गौरी की बहुत इच्छा होती है, कहीं लम्बी ड्राइव पर चलें, किसी के घर चलें या किसी को बुला ही लें, मैं तीनों ही काम टालता हू।

वैसे भी जब से आया हू, गौरी पीछे पड़ी है, घर में दो गाड़ियां खड़ी हैं, कम से कम ड्राइविंग ही सीख लो। मैंने भी कसम खा रखी है कि ड्राइविंग तो नहीं ही सीखूंगा, भले ही पूरी ज़िंदगी पैदल ही चलना पड़े। अभी तक गौरी और मेरे बीच इस बात पर शीत युद्ध चल रहा है कि मैं उससे पैसे मांगूंगा नहीं। वह देती नहीं और मैं मांगता नहीं। एक बार शिशिर ने कहा भी था कि तुम्हीं क्यों ये सारे त्याग करने पर तुले हो। क्यों नहीं अपनी ज़रूरत के पैसे गौरी से मांगते या गौरी के कहने पर पूल मनी से उठा लेते। आखिर कोई कब तक अपनी ज़रूरतें दबाये रह सकता है।

गौरी को जब पता चला तो उसने उंह करके मुंह बिचकाया था - अपनी गगनदीप जानें। मेरा पांच सात हजार पाउंड का जेब खर्च मुझे मिलना ही चाहिये।

जब शिशिर को यह बात पता चली तो वह हँसा था - यार, तुम्हें समझना बहुत मुश्किल है। भला ये सब तुम सब किस लिए कर रहे हो। अगर तुम एक्सपेरिमेंट कर रहे हो तो ठीक है। अगर तुम गौरी या हांडा ग्रुप को इम्प्रेस करना चाहते हो तो तुम बहुत बड़ी गलती कर रहे हो। वे तो ये मान लेंगे कि उन्हें कितना अच्छा दामाद मिल गया है जो ससुराल का एक पैसा भी लेना या खर्च करना हराम समझता है। उनके लिए इससे अच्छी और कौन सी बात हो सकती है। दूसरे वे ये भी मान कर चल सकते हैं कि वे कैसे कंगले को अपना दामाद बना कर लाये हैं जो अंडरग्राउंड के चालीस पेंस बचाने के लिए चालीस मिनट तक पैदल चलता है और ये नहीं देखता कि इन चालीस मिनटों को अपने कारोबार में लगा कर कितनी तरक्की कर सकता था। इससे तुम अपनी क्या इमेज बनाओगे, ज़रा यह भी देख लेना।

- मुझे किसी की भी परवाह नहीं है। मेरी तो आजकल ये हालत है कि मैं अपने बारे में कुछ नहीं सोच पा रहा हूँ।

गुड्डी का खत आया है। सिर्फ तीन लाइन का। समझ नहीं पा रहा हं, झ जब उसके सामने खुल कर खत लिखने की आज्ञादी नहीं है तो उसने ये पत्र भी क्यों लिखा! बेशक पत्र तीन ही पंक्तियों का है लेकिन मैं उन बीस पच्चीस शब्दों के पीछे छुपी पीड़ा को साफ साफ पढ़ पा रहा हूँ।

लिखा है उसने

- वीरजी,

इस वैसाखी के दिन मेरी डोली विदा होने के साथ ही मेरी ज़िंदगी में कई नये रिश्ते जुड़ गये हैं। ये सारे रिश्ते ही अब मेरा वर्तमान और भविष्य होंगे। मुझे अफ़सोस है कि मैं आपको दिये कई वचन पूरे न कर सकी। मैं अपने घर, नये माहौल और नये रिश्तों की गहमागहमी में बहुत खुश हूँ। मेरा दुर्भाग्य कि मैं आपको अपनी शादी में भी न बुला सकी। मेरे और उनके लिए भेजे गये गिफ्ट हमें मिल गये थे और हमें बहुत पसंद आये हैं।

मेरी तरफ से किसी भी किस्म की चिंता न करें।

आपकी छोटी बहन,

हरप्रीत कौर

(अब नये घर में यही मेरा नया नाम है।)

इस पत्र से तो यही लगता है कि गुड्डी ने खुद को हालात के सामने पूरी तरह सरंजर कर दिया है नहीं तो भला ऐसे कैसे हो सकता था कि वह इतना फार्मल और शुष्क खबर देने वाला ऐसा खत लिखती और अपना पता भी न लिखती।

मैं भी क्या करूँ गुड्डी! एक बार फिर तुझसे भी माफी मांग लेता हूँ कि मैं तेरे लिए इस जनम में कुछ भी नहीं कर पाया। वो जो तू अपने बड़े भाई की कद काठी, पर्सनैलिटी और लाइफ़ स्टाइल देख कर मुग्ध हो गयी थी और लगे

हाथों मुझे अपना आदर्श बना लिया था, मैं तुझे कैसे बताऊं गुड्डी कि मैं एक बार फिर यहां अपनी लड़ाई हार चुका हूं। अब तो मेरी ख्दा की जीने की इच्छा ही मर गयी है। तुझे मैं बता नहीं सकता कि मैं यहां अपने दिन कैसे काट रहा हूं। तेरे पास फिर भी सगे लोग तो हैं, बेशक उनसे अपनापन न मिले, मैं तो कितना अकेला हूं यहां और खालीपन की ज़िंदगी किसी तरह जी रहा हूं। मैं ये बातें गुड्डी को लिख भी तो नहीं सकता।

कल रात गौरी से तीखी नॉक झोंक हो गयी थी। बात वही थी। न मैं पैसे मांगूंगा और न उसे इस बात का ख्याल आयेगा। हम दोनों को एक शादी में जाना था। गौरी ने मुझे सुबह बता दिया था कि शादी में जाना है। कोई अच्छा सा गिफ्ट ले कर रख लेना। मैं वहीं तुम्हारे पास आ जाऊंगी। सीधे चले चलेंगे। जब गौरी ने यह बात कही थी तो उसे चाहिये था कि मेरे स्वभाव और मेरी जेब के मिज़ाज को जानते हुए बता भी देती कि कितने तक का गिफ्ट खरीदना है और कहती - ये रहे पैसे। उसने दोनों ही काम नहीं किये थे। अब मुझे क्या पड़ी थी कि उससे पैसे मांगता कि गिफ्ट के लिए पैसे दे दो। जब हांडा ग्रुप घर खर्च के सारे पैसे तुम्हें ही देता है तो तुम्हीं संभालो ये सारे मामले। फिलहाल तो मैं ठनठन गोपाल हूं और मैं किसी को गिफ्ट देने के लिए गौरी से पैसे मांगने से रहा।

शाप बंद हो जाने के बाद गौरी जब शादी के रिसेप्शन में जाने के लिए आयी तो कार में मेरे बैठने के साथ ही उसने पूछा - तुम्हारे हाथ खाली हैं, गिफ्ट कहां है?

- नहीं ले पाया।

- क्यों, कहा तो था मैंने, उसने गाड़ी बीच में ही रोक दी है।

- बताया न, नहीं ले पाया, बस।

- लेकिन कोई वज़ह तो होगी, न लेने की। अब सारी शॉप्स बंद हो गयी हैं। क्या शादी में खाली हाथ जायेंगे। दीप, तुम भी कई बार .. वह झल्ला रही है।

- गौरी, इस तरह से नाराज़ होने की कोई ज़रूरत नहीं है। न चाहते हुए भी मेरा पारा गर्म होने लगा है। तुम्हें अच्छी तरह से पता है, मेरे पास पैसों का कोई इंतज़ाम नहीं है। और तुम्हें यह भी पता है कि न मैं घर से बिना तुम्हारे कहे पैसे उठाता हूं और न ही स्टोर्स में से अपने पर्सनल काम के लिए कैशियर से वाउचर ही बनवाता हूं। गिफ्ट के लिए कहते समय तुम्हें इस बात का ख्याल रखना चाहिये था।

- यू आर ए लिमिट ! गौरी ज़ोर से चीखी है। मैं तो तंग आ गयी हूं तुम्हारे इन कानूनों से। मैं ये नहीं करूंगा और मैं वो नहीं करूंगा। आखिर तुम्हें हर बार ये जतलाने की ज़रूरत क्यों पड़ती है कि तुम्हारे पास पैसे नहीं हैं। क्यों बार-बार तुम यही टॉपिक छेड़ देते हो। आखिर मैं भी क्या करूं? क्रेडिट कार्ड तुम्हें चाहिये नहीं, कैश तुम उठाओगे नहीं और मांगोगे भी नहीं, बस, ताने मारने का कोई मौका छोड़ोगे नहीं।

- देखो गौरी, इस तरह से शोर मचाने की ज़रूरत नहीं है। मैं फिर भी ख्दा को शांत रखे हुए हूं - जहां तक पैसों या किसी भी चीज को लेकर मेरे प्रिंसिपल्स की बात है, तुम कई बार मेरे मुंह से सुन चुकी हो कि मैं अपने आप कहीं से भी पैसे नहीं उठाऊंगा। काम होता है या नहीं होता, मेरी जिम्मेवारी नहीं है।



- मैं तुमसे कितनी बार कह चुकी हूँ, डीयर कि धममें जो पैसे दिये जाते हैं वे हम दोनों के लिए हैं और सांझे हैं। हम दोनों के कॉमन पूल में रखे रहते हैं। तुम उसमें से लेते क्यों नहीं हो। अब तो तुम नये नहीं हो। न हमारे रिश्ते इतने फार्मल हैं कि आपस में एक दूसरे से पूछना पड़े कि ये करना है और वो करना है। अब तुम्हारी ज़रा सी जिद की वजह से गिफ्ट रह गया न.. अब जा कर अपनी शॉप से कोई बुके ही ले जाना पड़ेगा।

- हमारे आपसी रिश्तों की बात रहने दो, बाकी, जहां तक पैसों की बात है तो मैं अभी भी अपनी बात पर टिका हुआ हूँ कि मैं आज तक हांडा ग्रुप का सिस्टम समझ नहीं पाया कि मेरी हैसियत क्या है इस घर में !!

- अब फिर लगे कोसने तुम हांडा ग्रुप को। इसी ग्रुप की वजह से तुम...।

- डॉट क्रॉस यूअर लिमिट गौरी। मुझे भी गुस्सा आ गया है - पहली बात तो यह कि मैं वहां सड़क पर नहीं बैठा था कि मेरे पास यहां रहने खाने को नहीं है, कोई मुझे शरण दे दे और दूसरी बात कि बंबई में पहली ही मुलाकात में ही तुम्हारे सामने ही मुझसे दस तरह के झूठ बोले गये थे। मुझे पता होता कि यहां आ कर मुझे मुफ्त की सैल्समैनी ही करनी है तो मैं दस बार सोचता।

- दीप, तुम ये सारी बातें मुझसे क्यों कर रहे हो। आखिर क्या कमी है तुम्हें यहां..मजे से रह रहे हो और शानदार स्टोर्स के अकेले कर्त्ताधर्त्ता हो। अब तुम्हीं पैसे न लेना चाहो तो कोई क्या करे!!

- पैसे देने का कोई तरीका भी होता है। अब मैं रहूँ यहां और पैसे इंडिया में अपने घर से मंगाऊँ, ये तो नहीं हो सकता।

- तुम्हें किसने मना किया है पैसे लेने से। सारे दामाद कॉमन पूल से ले ही रहे हैं और क्रेडिट कार्ड से भी खूब खर्च करते रहते हैं। कैश भी उठाते रहते हैं। कभी कोई उनसे पूछता भी नहीं कि कहां खर्च किये और क्यों किये। किसी को खराब नहीं लगता। तुम्हारी समझ में ही यह बात नहीं आती। तुम्हें किसने मना किया है पैसे लेने से।

- मेरे अपने कुछ उसूल हैं।

- तो उन्हीं उसूलों का ट्रिंक बना कर दिन रात पीते रहो। सारा मूड ही चौपट कर दिया। गौरी झल्लाई है।

- कभी मेरे मूड की भी परवाह कर लिया करो। मैंने भी कह ही दिया है।

- तुमसे तो बात करना भी मुश्किल है।

कार में हुई इस नॉक-झोंक का असर पूरे रास्ते में और बाद में पार्टी में भी रहा है। शिशिर ने एक किनारे ले जा कर पूछा है - आज तो दोनों तरफ ही फुटबाल फूले हुए हैं। लगता है, काफी लम्बा मैच खेला गया है।

मैं भरा पड़ा हूँ। हालांकि मुझे अफसोस भी हो रहा है कि मैं पहली बार गौरी से इतने जोर से बोला और उससे ऐसी बातें कीं जो मुझे ही छोटा बनाती हैं। लेकिन मैं जानता हूँ, मेरी ये झल्लाहट सिर्फ पैसों के लिए या गिफ्ट के लिए नहीं है। इसके पीछे मुझसे बोले गये सारे झूठ ही काम कर रहे हैं। जब से शिशिर ने मुझे गौरी के अबॉर्शन के बारे में बताया है, मैं तब से भरा पड़ा था। आज गुस्सा निकला भी तो कितनी मामूली बात पर। हालांकि मैं शिशिर के सामने मैं खुद को खोलना नहीं चाहता लेकिन उसके सामने कुछ भी छुपाना मेरे लिए बहुत मुश्किल हो जाता है।

मैंने उसे पूरा किस्सा सुना दिया है। शिशिर ने फिर मुझे ही डांटा है

- तुम्हें मैं कितनी बार समझा चुका हूँ कि अब तो तुम्हें यहां रहते इतना अरसा हो गया है। अब तक तो तुम्हें हांडा ग्रुप से अपने लायक एक आध लाख पाउंड अलग कर ही लेने चाहिये थे। इतना बड़ा स्टोर्स संभालते हो और तुम्हारी जेब में दस पेंस का सिक्का भी खोजे नहीं मिलेगा। मेरी मानो, इन बातों की वजह से गौरी से लड़ने झगड़ने की ज़रूरत नहीं है। थोड़ी डिप्लोमेसी भी सीखो। चोट कहीं और करनी चाहिये तुम्हें और एनर्जी यहां वेस्ट कर रहे हो। खैर, ये भी ठीक हुआ कि तुमने गौरी से ही सही, अपने मन की बात कही तो सही। अब देखें, ये बातें कितनी दूर तक जाती हैं।

इस बीच मेरी छटपटाहट बहुत बढ़ चुकी है। गौरी से अबोला चल रहा है। न वह अपने किये के लिए शर्मिंदा है, न मैं यह मानने के लिए तैयार हूँ कि मैं गलत हूँ। अब तो वह भी बिना सैक्स के सो रही है और मैं भी, जो भी मिलता है, खा लेता हूँ। दोनों ही एक दूसरे से काफी दूर होते जा रहे हैं। मैं भी अब चाहने लगा हूँ, ये सब यहीं खत्म हो जाये तो पिंड छूटे। किसी तरह वापिस लौटा जा सकता तो ठीक रहता। काम की तरफ ध्यान देना मैंने कब से छोड़ दिया है। भाड़ में जायें सब। मैं ही हांडा परिवार की दौलत बढ़ाने के लिए क्यों दिन रात खटता रहूँ। मेरी सेहत भी आजकल खराब चल रही है। मैं बेशक इस बाबत किसी से बात नहीं करता और किसी से कोई शिकायत भी नहीं करता लेकिन बात अब हांडा परिवार के मुखिया तक पहुंच ही गयी है।

उन तक बात पहुंचाने के पीछे गौरी का नहीं, शिशिर का ही हाथ लगता है।

शिशिर ने शिल्पा से कहा होगा और शिल्पा ने अपने पापा तक बात पहुंचायी होगी कि ज़रा ज़रा सी बात पर गौरी दीप से लड़ पड़ती है और बार बार उस बेचारे का अपमान करती रहती है। उसी ने पापा से कहा होगा कि आप लोग बीच में पड़ कर मामले को सुलझायें वरना अच्छा खासा दामाद अपना दिमाग खराब कर बैठेगा। शायद उसने उन्हें पैसे न लेने के बारे में मेरी ज़िद के बारे में भी कहा हो। बताया होगा - अगर यही हाल रहा तो आप लोग एक अच्छे भले आदमी को इस तरह से मार डालेंगे। इसमें नुकसान आपका और गौरी का ही है। पता नहीं, उन्हें ये बात क्लिक कर गयी होगी, इसीलिए गौरी के शॉप पर जाने के बाद पापा मुझसे मिलने आये हैं।

यह इन दो ढाई साल में पहली बार हो रहा है कि मैं और मेरे ससुर इस तरह अकेले और इन्फार्मली बात कर रहे हैं। उन्होंने मेरी सेहत के बारे में पूछा है। मेरी दिनचर्या के बारे में पूछा है और मेरी उदासी का कारण जानना चाहा है। पहले तो मैं टालता हूँ। उनसे आंखें मिलाने से भी बचता हूँ लेकिन जब उन्होंने बहुत ज़ोर दिया है तो मैं फट पड़ा हूँ। इतने अरसे से मैं घुट रहा था। कितना कुछ है जो मैं किसी से कहना चाह रहा था लेकिन आज तक कह नहीं पाया हूँ और न ही किसी ने मेरे कंधे पर हाथ ही रखा है। पहले तो वे चुपचाप मेरी बातें ध्यान से सुनते रहे। मैंने उन्हें विस्तार से सारी बातें बतायी हैं। बंबई में हुई पहली मुलाकात से लेकर आज तक कि किस तरह मेरे साथ एक के बाद एक झूठ बोले गये और एक तरह से झांसा दे कर मुझे यहां लाया गया है। मैंने उन्हें गौरी की पढ़ाई के बारे में बोले गये झूठ के बारे में भी बताया लेकिन उसके एबार्शन वाली बात गोल कर गया। यह एक पिता के साथ ज्यादाती होती। जब उन्होंने देखा कि मैं जो कुछ कहना चाहता था, कह चुका हूँ तो वे धीरे से बोले हैं

- तुम्हारे साथ बहुत जुल्म हुआ है बेटे। मुझे नहीं मालूम था कि तुम अपने सीने पर इतने दिनों से इतना बोझ लिये लिये घूम रहे हो। तुम अगर मेरे पास पहले ही आ जाते तो यहां तक नौबत ही न आती। इस तरह तो तुम्हारी

सेहत खराब हो जायेगी। तुम चिंता मत करो। हमें एक मौका और दो। तुम्हें अब किसी भी बात की शिकायत नहीं रहेगी। गौरी ने भी कभी ज़िक्र नहीं किया और न ही चमन वगैरह ने ही बताया कि तुम्हारी क्या बातें हुई थीं। बल्कि हम तो शॉप में और हांडा ग्रुप में तुम्हारी दिलचस्पी देख कर बहुत खुश थे। आज तक किसी भी दामाद ने हमारे ऐस्टैब्लिशमेंट में इतनी दिलचस्पी नहीं ली थी। बेहतर यही होगा कि तुम अब इस हादसे को भूल जाओ और हमें एक मौका और दो। मैं गौरी को समझा दूंगा। तुम्हारे लिए एक अच्छी खबर है कि तुम्हारी शॉप के प्रॉफिट भी इस दौरान बहुत बढ़े हैं। सब तुम्हारी मेहनत का नतीजा है। तुम्हें इसका इनाम मिलना ही चाहिये। एक काम करते हैं, गौरी और तुम्हारे लिए पूरे योरोप की ट्रिप एरेंज करते हैं। थोड़ा घूम फिर आओ। थकान भी दूर हो जायेगी और तुम दोनों में पैचअप भी हो जायेगा। जाओ, एंजाय करो और एक महीने से पहले अपनी शकल हमें मत दिखाना। जाने का सारा इंतजाम हो जायेगा। गौरी भी खुश हो जायेगी कि तुम्हारे बहाने उसे भी घूमने फिरने का मौका मिल रहा है। जाते जाते वे मेरे हाथ में फिर एक बड़ा सा लिफाफा दे गये हैं - अपने लिए शॉपिंग कर लेना। उन्होंने मेरा कंधा दबाया है - देखो इनकार मत करना। मुझे खराब लगेगा। और सुनो, ये पैसे गौरी को दिये जाने वाले पैसों से अलग हैं इसलिए इनके बारे में गौरी को बताने की जरूरत नहीं है।

मैं समझ रहा हूँ कि ये रिश्वत है मुझे शांत करने की, लेकिन अब वे खुद पैच अप का प्रस्ताव ले कर आये हैं तो एक दम इनकार करना भी ठीक नहीं है।

मुझे हनीमून के बाद आज पहली बार एक साथ इतने पैसे दिये जा रहे हैं।

जब शिशिर को इस बारे में मैंने बताया तो वह खुशी से उछल पड़ा - अब आया न उंएट पहाड़ के नीचे। ये सब मेरी ही शरारत का नतीजा है कि तुमने इतना बड़ा हाथ मारा है। अब बीच बीच में इस तरह के नाटक करते रहोगे तो सुखी रहोगे।

और इस तरह मेरे सामने ये चुग्गा डाल दिया गया है। हालांकि गौरी ने सौरी कह दिया है लेकिन मलाल की बारीक सी रेखा भी उसके चेहरे पर नहीं है। जिस तरह की बातें उसने की थीं, उससे मेरी मानसिक अशांति इतनी जल्दी दूर नहीं होगी। वैसे भी जब भी मेरे सामने पड़ती है, मुझे उसके अतीत का भूत सताने लगता है और मैं बेचैन होने लगता हूँ। उसके प्रति मेरे स्नेह की बेलें सूखती चली जा रही हैं।

लेकिन मेरी ये खुशी भी कितनी अल्पजीवी है। हांडा ग्रुप से पैसे मिलने के अगले दिन ही नंदू का पत्र आ गया है। पत्र वाकई परेशानी में डालने वाला है। उसने लिखा है कि गुड्डी की ससुराल में उसे दहेज के लिए परेशान किया जा रहा है। दारजी उसके पास बहुत परेशानी में गये थे और उसे बता रहे थे कि गुड्डी की ससुराल वालों ने न तो उसे इम्तिहान देने दिये और न ही वे उसे मायके ही आने देते हैं। ऊपर से दहेज के लिए सता रहे हैं कि तुम्हारे लंदन वाले भाई का क्या फायदा हुआ। एक लाख की मांग रखी है उन्होंने।

नंदू ने लिखा है - ये पैसे तो मैं भी दे दूँ लेकिन संकट ये है कि उनका मुंह एक बार खुल गया तो वे अक्सर मांग करते रहेंगे और न मिलने पर गुड्डी को सतारेंगे। बोलो, क्या करूं। हो सके तो फोन कर देना।

हमारे दारजी ने तो जैसे पूरे परिवार को ही तबाह करने की कसम खा रखी है। मुझे बेघर करके भी उन्हें चैन नहीं था, अब उस मासूम की जान ले कर ही छोड़ेंगे। उन्हें लाख कहा कि गुड्डी की शादी के मामले में जल्दीबाजी मत करो लेकिन दारजी अगर किसी की बात मान लें तो फिर बात ही क्या !! अब पैसे दे भी दें तो इस बात की क्या

गारंटी कि वे लोग अब गुड्डी को सताना बंद कर देंगे। अब तो उनकी निगाह लंदन वाले भाई पर है। इतनी आसानी से थोड़े ही छोड़ेंगे। नंदू से फोन पर बात करके देखता हूँ।

नंदू ने तसल्ली दी है कि जैसे घबराने की कोई जरूरत नहीं है। दारजी ने कुछ ज्यादा ही बढ़ा-चढ़ा कर बात कही थी। जैसे वे लोग गुड्डी पर दबाव बनाये हुए हैं कि कुछ तो लाओ, लेकिन दारजी के पास कुछ हो तो दें। मैं उन्हें बता दूंगा कि तुझसे बात हो गयी है। तू घबरा मत। मैं सब संभाल लूंगा।

नंदू ने बेशक तसल्ली दे दी है लेकिन मैं ही जानता हूँ कि इस वक्त गुड्डी बेचारी पर क्या गुजर रही होगी। उसने तो मुझे पत्र लिखना भी बंद कर दिया है ताकि उसकी तकलीफों की तत्ती हवा भी मुझ तक न पहुंचे। इस बारे में शिशिर से बात करके देखनी चाहिये, वही कोई राह सुझायेगा। मेरा तो दिमाग काम नहीं कर रहा है।

शिशिर ने पूरी बात सुनी है। उसका कहना है कि जैसे तो यहां से इस तरह के नाजुक संबंधों का निर्वाह कर पाना बहुत मुश्किल है, क्योंकि यहां से तुम कुछ भी करो, तुम्हारे दारजी सारे कामों पर पानी फेरने के लिए वहां बैठे हुए हैं। दूसरे, तुम्हें फीडबैक आधा अधूरा और इतनी देर से मिलेगा कि तब तक वहां कोई और डेवलेपमेंट हो चुका होगा और तुम्हें पता भी नहीं चल पायेगा। फिर भी, यह बहन की ससुराल का मामला है। ज़रा संभल कर काम करना होगा और फिर गुड्डी का भी देखना होगा। उसे भी इस तरह से उन जंगलियों के बीच अकेला भी नहीं छोड़ा जा सकता। उसकी सुख शांति में तुम्हारा भी योगदान होगा ही। जैसे, थोड़ा इंतज़ार कर लेने में कोई हर्ज नहीं है।

उसी की सलाह पर मैं नंदू को फिर फोन करता हूँ और बताता हूँ कि मैं पचास हजार रुपये के बराबर पाउंड भिजवा रहा हूँ। कैश कराके दारजी तक पहुंचा देना। बस दारजी ये देख लें कि वे लोग ये पैसे देख कर बार बार मांग न करने लगे और कहीं इसके लिए गुड्डी को सतारें नहीं। नंदू को यह भी बता दिया है मैंने कि मैं महीने भर की ट्रिप पर रहूंगा। जैसे मैं उससे कांटेक्ट करता रहूंगा फिर भी कोई अर्जेंट मैसेज हो तो इस नम्बर पर शिशिर को दिया जा सकता है। मुझ तक बात पहुंच जायेगी।

नंदू को बेशक मैंने तसल्ली दे दी है लेकिन मेरे ही मन को तसल्ली नहीं है, फिर भी ड्राफ्ट भेज दिया है। शायद ये पैसे ही गुड्डी की ज़िंदगी में कुछ रौनक ला पायें।

हमारी ट्रिप अच्छी रही है लेकिन मेरे दिमाग में लगातार गुड्डी ही छायी रही है। इस ट्रिप में जैसे तो हम दोनों की ही लगातार कोशिश रही कि पैच अप हो जाये और हमारे संबंधों में जो खटास आ गयी है उसे कम किया जा सके। मैं अपनी ओर से इस ट्रिप को दुखद नहीं बनाना चाहता। मैं भरसक नार्मल बना हुआ हूँ। दिमाग में हर तरह की परेशानियां होते हुए भी उसके सुख और आराम का पूरा ख्याल रख रहा हूँ।

गौरी ने फिर जिद की है कि मैं भी क्रेडिट कार्ड बनवा लूँ या उसी के कार्ड में ऐड ऑन ले लूँ लेकिन इस बार भी मैंने मना कर दिया है।

हम लौट आये हैं। हम दोनों ने हालांकि आपसी संबंध नार्मल बनाये रखे हैं लेकिन मुझे नहीं लगता, जो दरार हम दोनों के बीच एक बार आ चुकी है, उसे कोई भी सीमेंट ठीक से जोड़ पायेगा।

लौटने के बाद भी स्थितियों में कोई खास परिवर्तन नहीं हुआ है। सिर्फ बोलचाल हो रही है और हम जाहिर तौर पर किसी को भनक नहीं लगाने देते कि हममें डिफरेंसेस चल रहे हैं। जो पैसे मुझे दिये गये थे, उसमें से जो बचे हैं वे मेरे ही पास हैं। वे भी इतने हैं कि मेरे जैसे कंजूस आदमी के लिए तो महीनों काफी

रहेंगे।

मेरी गैरहाजरी में सिर्फ अलका दीदी और देवेद्र जी का ही पत्र आया हुआ है। एक तरह से तसल्ली भी हुई है कि घर से कोई पत्र नहीं आया है, इसलिए मैं मान कर चल रहा हूँ कि वहां सब ठीक ही होगा। फिर भी शिशिर से पूछ लेता हूँ कि नंदू का कोई फोन वगैरह तो नहीं आया था। वह इनकार करता है - नहीं, कोई संदेश नहीं आया तो सब ठीक ही होना चाहिये। वैसे तुम भी एक बार नंदू को फोन करके हाल चाल ले ही लो।

मैं भी यही सोच कर नंदू से ही बात करता हूँ। वह जो कुछ बताता है वह मुझे परेशान करने के लिए काफी है। नंदू ने जब ये बताया कि उसे तो आज ही मेरा भेजा एक हजार पाउंड का दूसरा ड्राफ्ट भी मिल गया है तो मैं हैरान हो गया हूँ। ज़रूर दूसरा ड्राफ्ट शिशिर ने ही भेजा होगा जबकि मुझे मना कर रहा था कि नंदू का कोई फोन नहीं आया।

मैं नंदू से ही पूछता हूँ - तूने शिशिर को फोन किया था क्या ?

बताता है वह - हां, किया तो था लेकिन पैसों के लिए नहीं बल्कि यह बताने के लिए कि तुझ तक यह संदेश पहुंचा दे कि ड्राफ्ट मिल गया है और कि गुड्डी की परेशानी में कोई कमी नहीं आयी है। बेशक वह ससुराल की कोई शिकायत नहीं करती और उनके संदेश हम तक पहुंचाती भी नहीं, लेकिन कुल मिला कर वह तकलीफ में है।

बता रहा है कि दारजी आये थे और रो रहे थे कि किन भुक्खे लोगों के घर अपनी लड़की दे दी है। बेचारी को घर भी नहीं आने देते। वही बता रहे थे किसी तरह पचास हजार का इंतज़ाम हो जाता तो उनका मुंह बंद कर देते। बहुत सोचने विचारने के बाद मैंने तेरे भेजे ड्राफ्ट में से दारजी को पचास हजार रुपये दिये थे ताकि उनका मुंह बंद कर सकें। मैंने तो खाली शिशिर को यही कहा था कि तुझे खबर कर दे कि पैसों को ले कर परेशान होने की ज़रूरत नहीं है।

पूछता हूँ मैं - और पैसे भेजूं क्या?

- नहीं ज़रूरत नहीं है। ये दो हजार पाउंड भी तो एक लाख रुपये से ऊपर ही होते हैं। तू फिकर मत कर.. मैं हूँ न....।

मैं दोहरी चिंता में पड़ गया हूँ। उधर गुड्डी की परेशानी और इधर अपने आप आगे बढ़ कर शिशिर ने इतनी बड़ी रकम भेज दी है। पचास हजार की रकम कोई मामूली रकम नहीं होती और जब मैंने पूछा तो साफ मुकर गया कि कोई फोन ही नहीं आया था। उससे इन पैसों के बारे में कुछ कह कर उसे छोटा बना सकता हूँ और न ही चुप ही रह सकता हूँ। उसने इधर उधर से इंतज़ाम किया होगा। शायद अपने घर भेजे जाने वाले पैसों में ही कुछ कमी कटौती की हो उसने। उधर नंदू अपने आप मेरी जगह मेरे घर की सारी जिम्मेवारी उठा रहा है और बिना एक भी शब्द बोले दारजी को पचास हजार थमा आता है कि उनकी लड़की को ससुराल में कोई परेशानी न हो। ये वही दारजी है जिन्होंने गुड्डी की सिफारिश लाने पर उससे कह दिया था कि ये हमारा घरेलू मामला है, और मैं यहां अपने घर से

सात समंदर पार सारी जिम्मेवारियों से मुक्त बैठा हुआ हूं। उनके लिए न कुछ कर पा रहा हूं और न उनके सुख दुख में शामिल हो पा रहा हूं।

दारजी, नंदू, गुड्डी और अलका दीदी को लम्बे लम्बे पत्र लिखता हूं। मन पर इतना बोझ है कि जीने ही नहीं दे रहा है। गौरी अपनी दुनिया में मस्त है और मैं अपने संसार में। द बिजी कार्नेर ठीक ठाक चल रहा है और अब उसमें ऐसा कुछ भी नहीं बचा जिसे चैलेंज की तरह लिया जा सके। सब कुछ रूटीन हो चला है। अब तो दिल करता है, यहां से भी भाग जाऊं। कहीं भी दूर चला जाऊं। जहां कुछ करने के लिए नया हो, कुछ चुनौतीपूर्ण हो और जिसे करने में मज़ा आये। अलबत्ता कम्प्यूटर से ही नाता बना हुआ है और मैं कुछ न कुछ नया करता रहता हूं।

शिशिर के लिए तो पैकेज बना कर दिये ही हैं, सुशांत की बुक शॉप्स के लिए भी प्रोग्रामिंग करके कुछ नये पैकेज बना दिये हैं जिससे उसका काम आसान हो गया है। अब वह भी शिशिर की तरह मेरे काफी नज़दीक आ गया है और हम सुख दुख की बातें करने लगे हैं।

नंदू का फोन आया है। उसने जो खबर सुनाई है उससे मैं एकदम अवाक् रह गया हूं। नंदू ने यह क्या बता दिया है मुझे! गुड्डी की मौत की खबर सुनने से पहले मैं मर क्यों नहीं गया! मैंने उससे दो तीन बार पूछा - क्या वह गुड्डी की ही बात कर रहा है ना ? तो नंदू ने जवाब दिया है - हां, दीप, मैं अभागानंदू तुझे गुड्डी की ही मौत की खबर दे रहा हूं। उन लुटेरों ने हमारी प्यारी बहन को हमसे छीन लिया है। उसे दहेज का दानव खा गया और हम कुछ भी नहीं कर सके। यह समाचार देते समय नंदू ज़ार ज़ार रो रहा था।

मैं हक्का बक्का बैठा रह गया हूं। यह क्या हो गया मेरी बेबे !! मेरे दारजी !! आपने तो उसके लिए रजेया कजेया घर देखा था और ये क्या हो गया। इतना दहेज देने के बाद भी स्टोव उसी के लिए क्यों फटा ओ मेरे रब्बा !! लिखा भी तो था गुड्डी ने कि अगर पैसों का इंतजाम न हो पाया तो स्टोव तो उसी के लिए फटेगा। दारजी ने तो ठोक बजा कर दामाद खोजा था, वह कसाई कैसे निकल गया।

गुड्डी के बारे में सोच सोच कर दिमाग की नसें फटने लगी हैं। नंदू बताते समय हिचकियां ले ले कर रो रहा था - मुझे माफ कर देना दीप, मैं तेरी बहन को उन राक्षसों के हाथ से नहीं बचा पाया मेरे दोस्त, बेशक गुड्डी की ससुराल वालों को पुलिस ने पकड़ लिया है लेकिन उनकी गिरफ्तारी से गुड्डी तो वापिस नहीं आ जायेगी। तू धीरज धर।

नंदू मेरे यार, मैं तुझे तो माफ कर दूँ, लेकिन मुझे कौन माफ करेगा। तू मेरी जगह मेरे घर की सारी जिम्मेवारियां निभाता रहा और मैं सिर्फ अपने स्वार्थ की खातिर यहां परदेस में बैठा अपने घर के ही सपने देखता रहा। न मैं अपना घर बना पाया, न गुड्डी का घर बसता देख पाया। अब तो वही नहीं रही, मैं माफी भी किससे मांगूँ। वह कितना कहती थी कि मैं आगे पढ़ना चाहती हूँ, कुछ बन के दिखाना चाहती हूँ, और मिला क्या उस बेचारी को!! आखिर दारजी की जिद ने उस मासूम की जान ले ही ली। मेरा जाना तो नहीं हो पायेगा। जा कर होगा भी क्या। मैं किस की सुनूंगा और किसको जवाब दूंगा। दोनों ही काम मुझसे नहीं हो पायेंगे।

दारजी, बेबे, नंदू और अलका दीदी को भी लम्बे पत्र लिखता हूं ताकि सीने पर जमी यह शिला कुछ तो खिसके। गौरी भी इस खबर से भौंचकी रह गयी है। उसे विश्वास ही नहीं हो रहा है कि मात्र एक दो लाख रुपये के दहेज के लिए किसी जीते जाने इंसान को यूँ जलाया भी जा सकता है।

बताता हूँ उसे - गुड्डी बेचारी दहेज की आग में जलने वाली अकेली लड़की नहीं है। वहां तो घर-घर में यह आग सुलगती रहती है और हर दिन वहां दहेज कम लाने वाली या न लाने वाली मासूम लड़कियों को यूँ ही जलाया जाता है।

पूछ रही है वह - इंडिया में हवस और लालच इतने ज्यादा बढ़ गये हैं और आपका कानून कुछ नहीं करता?

- अब कैसा कानून और किसका कानून, मैं उसे भरे मन से बताता हूँ - जहां देश का राजकाज चलाने वाले आइएएस अधिकारी का दहेज के मार्केट में सबसे ज्यादा रेट चलता हो, वहां का कानून कितना लचर होगा, तुम कल्पना कर सकती हो। बेशक गौरी ने गुड्डी की सिर्फ तस्वीर ही देखी है फिर भी वह डिस्टर्ब हो गयी है। दुख की इस घड़ी में वह मेरा पूरा साथ दे रही है।

शिशिर भी इस हादसे से सन्न रह गया है। वह बराबर मेरे साथ ही बना हुआ है। उसी ने सबसे पहले हमारी सस्जारा ल में खबर दी थी। मेरे ससुर और दूसरे कई लोग तुरंत अफसोस करने आये थे। हांडा साहब ने पूछा भी था - अगर जाना चाहो इंडिया, तो इंतज़ाम कर देते हैं, लेकिन मैंने ही मना कर दिया था। अब जा कर भी क्या करूंगा।

गौरी और शिशिर के लगातार मेरे साथ बने रहने और मेरा हौसला बढ़ाये रखने के बावजूद मैं खुद को एकदम अकेला महसूस कर रहा हूँ। अब तो स्टोर्स में जाने की भी इच्छा नहीं होती। थोड़ी देर के लिए चला जाता हूँ। सारा दिन गुड्डी के लिए मेरा दिल रोता रहता है। कभी किसी के लिए इतना अफसोस नहीं मनाया। अपने दुख किसी के सामने आने नहीं दिये लेकिन गुड्डी का यूँ चले जाना मुझे बुरी तरह तोड़ गया है, बार बार उसका आंखें बड़ी बड़ी करके मेरी बात सुनना, वीरजी ये और वीरजी वो कहना, बार बार याद आते हैं। कितने कम समय के लिए मिली थी और कितना कुछ दे गयी थी मुझे और कितनी जल्दी मुझे छोड़ कर चली भी गयी।

जब से गुड्डी का यह दुखद समाचार मिला है, मैं महसूस कर रहा हूँ कि मेरा सिर फिर से दर्द करने लगा है। ये दर्द भी वैसा ही है जैसा बचपन में हुआ करता था। मैं इसे वहम मान कर भूल जाना चाहता हूँ लेकिन सिर दर्द है कि दिन प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है। पता नहीं, उस दर्द के अंश बाकी कैसे रह गये हैं। हालांकि इलाज तो तब भी नहीं हुआ था लेकिन दर्द तो ठीक हो ही गया था। गौरी को मैं बता भी नहीं सकता, मेरा क्या छिन गया है।

>>पीछे>> >>आगे>>

[शीर्ष पर जाएँ](#)

देस बिराना  
सूरज प्रकाश

अस्पताल में दस दिन काटने के बाद आज ही घर वापिस आया हूँ। इनमें से तीन दिन तो आइसीयू में ही रहा। बाद में पचास तरह के टेस्ट चलते रहे और बीसियों तरह की रिपोर्टें तैयार की गयीं, निष्कर्ष निकाले गये लेकिन नतीजा ज़ीरो रहा। डॉक्टर मेरे सिर दर्द का कारण तलाशने में असमर्थ रहे और मैं जिस दर्द के साथ आधी रात को अस्पताल ले जाया गया था उसी दर्द के साथ दस दिन बाद लौट आया हूँ। गौरी बता रही थी, एक रात मैं सिर दर्द से बुरी तरह से छटपटाने लगा था। वह मेरी हालत देख कर एकदम घबरा गयी थी। उसने तुरंत डॉक्टर को फोन किया था। उसने मुझे कभी एक दिन के लिए भी बीमार पड़ते नहीं देखा था और उसे मेरी इस या किसी भी बीमारी के बारे में कुछ भी पता नहीं था इसलिए वह डॉक्टर को इस बारे में कुछ भी नहीं बता पायी थी। डॉक्टर ने बेशक दर्द दूर करने का इंजेक्शन दे दिया था लेकिन जब वह कुछ भी डायग्नोस नहीं कर पाया तो उसने अस्पताल ले जाने की सलाह दी थी। गौरी ने तब अपने घर पापा वगैरह को फोन किया और मेरी हालत के बारे में बताया था। सभी लपके हुए आये थे और इस तरह मैं अस्पताल में पहुंचा दिया गया था।

अब बिस्तर पर लेटे हुए और इस समय भी दर्द से कराहते हुए मुझे हँसी आ रही है - क्या पता चला होगा डॉक्टरों को मेरे दर्द के बारे में। कोई शारीरिक वज़ह हो भी तो वे पता लगा सकते। रिपोर्टें इस बारे में बिलकुल मौन हैं।

इस बीच कई बार पूछ चुकी है गौरी - अचानक ये तुम्हें क्या हो गया था दीप ? क्या पहले भी कभी... ..?

- नहीं गौरी, ऐसा तो कभी नहीं हुआ था। तुमने तो देखा ही है कि मुझे कभी जुकाम भी नहीं होता। मैं उसे आश्वस्त करता हूँ। बचपन के बारे में मैं थोड़ा-सा झूठ बोल गया हूँ। वैसे भी वह मेरे केशों के मामले और दर्द के संबंध और अब गुड्डी की मौत के लिंक तो क्या ही जोड़ पायेगी। कुछ बताऊं भी तो पूरी बात बतानी पड़ेगी और वह दस तरह के सवाल पूछेगी। यही सवाल उसके घर के सभी लोग अलग-अलग तरीके से पूछ चुके हैं। मेरा जवाब सबके लिए वही रहा है।

शिशिर भी पूछ रहा था। मैं क्या जवाब देता। मुझे पता होता तो क्या ससुराल के इतने अहसान लेता कि इतना महंगा इलाज कराता!! वैसे दवाएं अभी भी खा रहा हूँ और डॉक्टर के बताये अनुसार कम्पलीट रेस्ट



भी कर ही रहा हूँ, लेकिन सारा दिन बिस्तर पर लेटे-लेटे रह-रह के गुड्डी की यादें परेशान करने लगती हैं। आखिर उस मासूम का कुसूर क्या था। जो दहेज हमने गुड्डी को देना था या दिया था वो हमारी जिम्मेवारी थी। हम पूरी कर ही रहे थे। ज़िंदगी भर करते ही रहते।

सारा दिन बिस्तर पर लेटा रहता हूँ और ऐसे ही उलटे-सीधे ख्याल आते रहते हैं। अपनी याद में यह पहली बार हो रहा है कि मैं बीमार होने की वज़ह से इतने दिनों से बिस्तर पर लेटा हूँ और कोई काम नहीं कर रहा हूँ। बीच-बीच में सबके फोन भी आते रहते हैं। गौरी दिन में कई बार फोन कर लेती है।

लेटे लेटे संगीत सुनता रहता हूँ। इधर शास्त्राय संगीत की तरफ रुझान शुरू हुआ है। गौरी ने एक नया डिस्कमैन दिया है और शिशिर इंडियन क्लासिकल संगीत की कई सीडी दे गया है। शिल्पा भी कुछ किताबें छोड़ गयी थी। और भी सब कुछ न कुछ दे गये हैं ताकि मैं लेटे लेटे बोर न होऊँ।

लगभग छः महीने हो गये हैं सिरदर्द को झेलते हुए। इस बीच ज्यादातर अरसा आराम ही करता रहा या तरह तरह के टैस्ट ही कराता रहा। नतीजा तो क्या ही निकलना था। वैसे सिरदर्द के साथ मैं अब स्टोर्स में पूरा पूरा दिन भी बिताने लगा हूँ लेकिन मैं ही जानता हूँ कि मैं कितनी तकलीफ से गुज़र रहा हूँ। बचपन में भी तो ऐसे ही दर्द होता था और मैं किसी से भी कुछ नहीं कह पाता था। सारा सारा दिन दर्द से छटपटाता रहता था जैसे कोई सिर में तेज छुरियां चला रहा हो। तब तो के स कटवा कर दर्द से मुक्ति पा ली थी लेकिन अब तो केस भी नहीं हैं। समझ में नहीं आता, अब इससे कैसे मुक्ति मिलेगी। यहां के अंग्रेज़ डॉक्टरों को मैंने जानबूझ कर बचपन के सिर दर्द और उसके दूर होने के उपाय के बारे में नहीं बताया है। मैं जानता हूँ ये अंग्रेज तो मेरे इस अनोखे दर्द और उसके और भी अनोखे इलाज के बारे में सुन कर तो मेरा मज़ाक उड़ारेंगे ही, गौरी और उसके घर वालों की निगाह में भी मैं दकियानूसी और अंधविश्वासी ही कहलाऊंगा। मैं ऐसे ही भला। बेचारी बेबे भी नहीं है जो मेरे सिर में गर्म तेल चुपड़ दे और अपनी हथेलियों से मेरे सिर में थपकियां दे कर सुला ही दे।

अभी सो ही रहा हूँ कि फोन की घंटी से नींद उचटी है। घड़ी देखता हूँ, अभी सुबह के छः ही बजे हैं। गौरी बाथरूम में है। मुझे ही उठाना पड़ेगा।

- हैलो,

- नमस्ते दीप जी, सो रहे थे क्या?

एकदम परिचित सी आवाज, फिर भी लोकेट नहीं कर पा रहा हूँ, कौन हैं जो इतनी बेतकल्लुफी से बात कर रही हैं।

- नमस्ते, मैं ठीक हूँ लेकिन माफ कीजिये मैं पहचान नहीं पा रहा हूँ आपकी आवाज....

- कोशिश कीजिये!

- पहले हमारी फोन पर बात हुई है क्या?

- हुई तो नहीं है।

- मुलाकात हुई है क्या?

- दो तीन बार तो हुई ही है।

- आप ही बता दीजिये, मैं पहचान नहीं पर रहा हूँ।

- मैं मालविका हूँ। मालविका ओबेराय।

- ओ हो मालविका जी। नमस्ते. आयम सौरी, मैं सचमुच ही पहचान नहीं पा रहा था, गौरी अकसर आपका ज़िक्र करती रहती है। कई बार सोचा भी कि आपकी तरफ आर्यें। इतने अरसे बाद भी उसका दिपदिपाता सौन्दर्य मेरी आंखों के आगे झिलमिलाने लगा है।

- लेकिन मैं शर्त लगा कर कह सकती हूँ कि आपको हमारी कभी याद नहीं आयी होगी। शकल तो मेरी क्या ही याद होगी।

- नहीं, ऐसी बात तो नहीं है। दरअसल मुझे आपकी शकल बहुत अच्छी तरह से याद है, बस उस तरफ आना ही नहीं हो पाया। फिलहाल कहिये कैसे याद किया..कैसे कहूँ कि जो उन्हें एक बार देख ले, ज़िदंगी भर नहीं भूल सकता।

- आपका सिरदर्द कैसा है अब?

- अरे, आपको तो सारी खबरें मिलती रहती हैं।

- कम से कम आपकी खबर तो है मुझे, मैं आ नहीं पायी लेकिन मुझे पता चला, आप खासे परेशान हैं आजकल इस दर्द की वज़ह से।

- हां हूँ तो सही, समझ में नहीं आ रहा, क्या हो गया है मुझे।

- गौरी से इतना भी न हुआ कि तुम्हें मेरे पास ही ले आती। अगर आपको योगाभ्यास में विश्वास हो तो आप हमारे यहां क्यों नहीं आते एक बार। वैसे तो आपको आराम आ जाना चाहिये, अगर न भी आये तो भी कुछ ऐसी यौगिक क्रियाएं आपको बता दूंगी कि बेहतर महसूस करेंगे। योगाभ्यास के अलावा एक्यूप्रेशर है, नेचुरोपैथी है और दूसरी भारतीय पद्धतियां हैं। जिसे भी आजमाना चाहें।

- ज़रूर आउंगा मैं। वैसे भी पचास तरह के टेस्ट कराके और ये दवाएं खा खा कर दुखी हो गया हूँ।

- अच्छा एक काम कीजिये, मैं गौरी से खुद ही बात कर लेती हूँ, आपको इस संडे लेती आयेगी। गौरी से बात करार्येंगे क्या?

- गौरी अभी बाथरूम में है और अभी थोड़ी देर पहले ही गयी है। उसे कम से कम आधा घंटा और लगेगा।

- खैर उसे बता दीजिये कि मैंने फोन किया था। चलो इस बहाने आप से भी बात हो गयी। आपका इंतज़ार रहेगा।

- जरूर आयेंगे। गौरी के साथ ही आऊंगा।

- ओके , थैंक्स।

मालविका से मुलाकात अब याद आ रही है। गौरी के साथ ही गया था उनके सेन्टर में। नार्थ वेम्बले की तरफ था कहीं। गौरी के साथ एक - आध बार ही वहां जा पाया था।

जब हम वहां पहली बार गये थे तब मालविका एक लूज़ सा ट्रैक सूट पहने अपने स्टूडेंट्स को लैसन दे रही थी।

उन्हें देखते ही मेरी आंखें चुंधियां गयी थीं। मैं ज़िंदगी में पहली बार इतना सारा सौंदर्य एक साथ देख रहा था। भरी भरी आंखें, लम्बी लहराती केशराशि। मैं संकोचवश उनकी तरफ देख भी नहीं पा रहा था। वे बेहद खूबसूरत थीं और उन्हें कहीं भी, कभी भी इग्नोर नहीं किया जा सकता था। मैं हैरान भी हुआ था कि रिसेप्शन में मैं उनकी तरफ ध्यान कैसे नहीं दे पाया था।

गौरी ने उबारा था मुझे - कहां खो गये दीप, मालविका कब से आपको हैलो कर रही है। मैं झोंप गया था।

हमने मालविका से एपाइंटमेंट ले लिया है और आज उनसे मिलने जा रहे हैं। जब मैंने गौरी को मालविका का मैसेज दिया तो वह अफसोस करने लगी थी - मैं भी कैसी पागल हूं। तुम इतने दिन से इस सिरदर्द से परेशान हो और हमने हर तरह का इलाज करके भी देख लिया लेकिन मुझे एक बार भी नहीं सूझा कि मालविका के पास ही चले चलते। आइ कैन बैट, अब तक तुम ठीक भी हो चुके होते। ऐनी आउ, अभी भी देर नहीं हुई है।

मालविका जी हमारा ही इंतज़ार कर रही हैं। उन्होंने उठ कर हम दोनों का स्वागत किया है। दोनों से गर्मजोशी से हाथ मिलाया है और गौरी से नाराज़गी जतलायी है - ये क्या है गौरी, आज कितने दिनों बाद दर्शन दे रही हो। तुमसे इतना भी न हुआ कि दीप जी को एक बार मेरे पास भी ला कर दिखला देती। ऐसा कौन-सा रोग है जिसका इलाज योगाभ्यास न से किया जा सकता हो। अगर मुझे शिशिर जी ने न बताया होता तो मुझे तो कभी पता ही न चलता। वे मेरी तरफ देख कर मुस्करायी हैं।

गौरी ने हार मान ली है - क्या बताऊं मालविका, इनकी ये हालत देख-देख कर मैं परेशान थी कि हम ढंग से इनके मामूली सिरदर्द का इलाज भी नहीं करवा पा रहे हैं। लेकिन बिलीव मी, मुझे एक बार भी नहीं सूझा कि इन्हें तुम्हारे पास ही ले आती।

- कैसे लाती, जब कि तुम खुद ही साल भर से इस तरफ नहीं आयी हो। अपनी चर्बी का हाल देख रही हो, कैसे लेयर पर लेयर चढ़ी जा रही है। खैर, आइये दीप जी, हमारी ये नोक झोंक तो चलती ही रहेगी। पहले आप ही को एनरोल कर लिया जाये। वैसे तो आपको शादी के तुरंत बाद ये यहां आना शुरू करदेना चाहिये था।

मैं देख रहा हूँ मालविका जी अभी भी उतनी ही स्मार्ट और सुंदर नज़र आ रही हैं। स्पॉटलैस ब्यूटी। मानना पड़ेगा कि योगाभ्यास का सबसे ज्यादा फायदा उन्हीं को हुआ है।

उन्होंने मुझे एक फार्म दिया है भरने के लिए - जब तक कॉफी आये, आप यह फार्म भर दीजिये। हमारे सभी क्लायंट्स के लिए ज़रूरी होता है यह फार्म।

वे हँसी हैं - इससे हम कई उलटे-सीधे सवाल पूछने से बच जाते हैं। इस बीच मैं आपकी सारी मेडिकल रिपोर्ट्स देख लेती हूँ। मैं फार्म भर रहा हूँ। व्यक्तिगत बायोडाटा के अलावा इसमें बीमारियों, एलर्जी, ईटिंग हैबिट्स वगैरह के बारे में ढेर सारे सवाल हैं। जिन सवालों के जवाब हां या ना में देने हैं, वे तो मैंने आसानी से भर दिये हैं लेकिन बीमारी के कॉलम में मैं सिर दर्द लिख कर ठहर गया हूँ। इसके अगले ही कालम में बीमारी की हिस्ट्री पूछी गयी है। समझ में नहीं आ रहा, यहां पर क्या लिखूं मैं ? क्या बचपन वाले सिरदर्द का जिक्र करूं यहां पर।

मैंने इस कालम में लिख दिया है - बचपन में बहुत दर्द होता था लेकिन केस कटाने के बाद बिलकुल ठीक हो गया था। नीचे एक रिमार्क में यह भी लिख दिया है कि इस बारे में बाकी डिटेल्स आमने सामने बात दूंगा। फार्म पूरा भर कर मैंने उसे मालविका जी को थमा दिया है। इस बीच कॉफी आ गयी है। कॉफी पीते-पीते वे मेरा भरा फार्म सरसरी निगाह से देख रही हैं।

कॉफी खत्म करके उन्होंने गौरी से कहा है - अब तुम्हारी ड्यूटी खत्म गौरी। तुम जाओ। अब बाकी काम मेरा है। इन्हें यहां देर लगेगी। मैं बाद में तुमसे फोन पर बात कर लूंगी। चाहो तो थोड़ी देर कुछ योगासन ही कर लो। गौरी ने इनकार कर दिया है और जाते-जाते हँसते हुए कह गयी है - अपना ख्याल रखना दीप, मालविका इज वेरी स्ट्रिक्ट योगा टीचर। एक बार इनके हत्थे चढ़ गये तो ज़िंदगी भर के लिए किसी मुश्किल आसन में तुम्हारी गर्दन फंसा देगी।

मालविका जी ने नहले पर दहला मारा है - शायद इसीलिए तुम महीनों तक अपना चेहरा नहीं दिखातीं।

गौरी के जाने के बाद मालविका जी इत्मिनान के साथ मेरे सामने बैठ गयी हैं। मैं उनकी आंखों का तेज सहन करने में अपने आपको असमर्थ पा रहा हूँ। मैं बहुत कम ऐसी लड़कियों के सम्पर्क में आया हूँ जो सीधे आंखें मिला कर बात करें।

वे मेरे सामने तन कर बैठी है।

पूछ रही हैं मुझसे - देखिये दीप जी, नैचुरोपैथी वगैरह में इलाज करने का हमारा तरीका थोड़ा अलग होता है। जब तक हमें रोग के कारण, उसकी मीयाद, उसके लक्षण वगैरह के बारे में पूरी जानकारी न मिल जाये, हम इलाज नहीं कर सकते। इसके अलावा रोगी का टेम्परामेंट, उसकी मनस्थिति, रोग और उसके इलाज के प्रति उसके दृष्टिकोण के बारे में भी जानना हमारे लिए और रोगी के लिए भी फायदेमंद होता है। तो जनाब, अब मामला यह बनता है कि आपने फार्म में बचपन में होने वाले दर्द का जिक्र किया है और ये केस कटाने वाला मामला। आप उसके बारे में तो बतायेंगे ही, आप यह समझ लीजिये कि आप मालविका के सामने अपने-आपको पूरी तरह खोल कर रख देंगे। यह आप ही के हित में होगा। आप निश्चित रहें। आप

का कहा गया एक-एक शब्द सिर्फ मुझ तक रहेगा और उसे मैं सिर्फ आपकी बेहतरी के लिए ही इस्तेमाल करूंगी।

मैं मंत्रमुग्ध सा उनके चेहरे पर आंखें गड़ाये उनका कहा गया एक एक शब्द सुन रहा हूँ। वे धाराप्रवाह बोले जा रही हैं। उनके बोलने में भी सामने वाले को मंत्र मुग्ध करने का ताकत है। मैं हैरान हूँ, यहां लंदन में भी इतनी अच्छी हिन्दी बोलने वाले लोग रहते हैं।

वे कह रही हैं - दीप जी, अब आप बिलकुल नःसंकोच अपने बारे में जितना कुछ अभी बताना चाहें, बतायें। अगर अभी मन न हो, पहली ही मुलाकात में मेरे सामने इस तरह से खुल कर बात करने का, तो कल, या किसी और दिन के लिए रख लेते हैं। यहां इस माहौल में बात न करना चाहें तो बाहर चलते हैं। लेकिन एक बात आप जान लें, आप के भले के लिए ही कह रही हूँ आप मुझ से कुछ भी छुपायेंगे नहीं। तो ठीक है ?

- ठीक है।

मैं समझ रहा हूँ, इन अनुभवी और अपनत्व से भरी आंखों के आगे न तो कुछ छुपाया जा सकेगा और न ही झूठ ही बोला जा सकेगा।

- गुड। उन्होंने मेरी तरफ हाथ बढ़ाया है।

- समझ नहीं पा रहा हूँ मालविका जी कि मैं अपनी बात किस तरह से शुरू करूं। दरअसल....

- ठहरिये, हम दूसरे कमरे में चलते हैं। वहीं आराम से बैठ कर बात करेंगे। ,ú >, ž,ú >,i ^Å

जूस, बीयर वगैरह हैं वहां फ्रिज में। किसी किस्म के तकल्लुफ की ज़रूरत नहीं है।

हम दूसरे कमरे में आ गये हैं और आरामदायक सोफों पर बैठ गये हैं। उन्होंने मुझे बोलने के लिए इशारा किया है।

मैं धीरे-धीरे बोलना शुरूकरता हूँ - इस दर्द की भी बहुत लम्बी कहानी है मालविका जी। समझ में नहीं आ रहा, कहां से शुरू करूं। दरअसल आजतक मैंने किसी को भी अपने बारे में सारे सच नहीं बताये हैं। किसी को एक सच बताया तो किसी दूसरे को उसी सच का दूसरा सिक्का दिखाया। मैं हमेशा दूसरों की नज़रों में बेचारा बनने से बचता रहा। मुझे कोई तरस खाती निगाहों से देखे, मुझे बिलकुल भी पसंद नहीं है लेकिन आपने मुझे जिस संकट में डाल दिया है, पूरी बात बताये बिना नहीं चलेगा। दरअसल मोना सिख हूँ। सारी समस्या की जड़ ही मेरा सिख होना है। आपको यह जान कर ताज्जुब होगा कि मैंने सिर्फ चौदह साल की उम्र में घर छोड़ दिया था और आइआइटी, कानपुर से एमटैक और फिर अमेरिका से पीएच डी तक पढ़ाई मैंने खुद के, अपने बलबूते पर की है। वैसे घर मैंने दो बार छोड़ा है। चौदह साल की उम्र में भी और अठ्ठाइस साल की उम्र में भी। पहली बार घर छोड़ने की कहानी भी बहुत अजीब है। विश्वास ही नहीं करेगी आप कि इतनी-सी बात को लेकर भी घर छोड़ना पड़ सकता है। हालांकि घर पर मेरे पिताजी, मां और दो छोटे भाई हैं और एक छोटी बहन थी। दुनिया की सबसे खूबसूरत और समझदार बहन गुड्डी जो कुछ अरसा पहले दहेज की बलि चढ़ गयी। इस सदमे से मैं अब तक उबर नहीं सका हूँ। मुझे लगता है, दोबारा सिरदर्द उखड़ने की

वजह भी यही सदमा है। अपनी बहन के लिए सब कुछ करने के बाद भी मैं उसके लिए खुशियां न खरीद सका। लाखों रुपये के दहेज के बाद भी उसकी ससुराल वालों की नीयत नहीं भरी थी और उन्होंने उस मासूम की जान ले ली। उस बेचारी की कोई तस्वीर भी नहीं है मेरे पास। बहुत ब्राइट लड़की थी और बेहद खूबसूरत कविताएं लिखती थी। गुड्डी के जिक्र से मेरी आंखों में पानी आ गया है। गला रुंध गया है और मैं आगे कुछ बोल ही नहीं पा रहा हूं। मालविका जी ने मेरे हाथ पर अपना हाथ रख दिया है।

मुझे थोड़ा वक्त लगता है अपने आपको संभालने में। मालविका जी की तरफ देखता हूं। वे आंखों ही आंखों में मेरा हौसला बढ़ाती हैं। मैं बात आगे बढ़ाता हूं -हां, तो मैं अपने बचपन की बातें बता रहा था। मेरे पिता जी कारपेंटर थे और घर पर रह कर ही काम करते थे। हम लोगों का एक बहुत पुराना, बड़ा सा घर था। हमारे पिता जी बहुत गुस्से वाले आदमी थे और गुस्सा आने पर किसी को भी नहीं बखशाते थे। आज भी अगर मैं गिनुं तो पहली बार घर छोड़ने तक, यानी तेरह-चौदह साल की उम्र तक मैं जितनी मार उनसे खा चुका था उसके बीसियों निशान मैं आपको अभी भी गिन कर दिखा सकता हूं। तन पर भी और मन पर भी। गुस्से में वे अपनी जगह पर बैठे बैठे, जो भी औजार हाथ में हो, वही दे मारते थे। उनके मारने की वजहें बहुत ही मामूली होती थीं। बेशक आखरी बार भी मैं घर से पिट कर ही रोता हुआ निकला था और उसके बाद पूरे चौदह बरस बाद ही घर लौटा था। एक बार फिर घर छोड़ने के लिए। उसकी कहानी अलग है।

यह कहते हुए मेरा गला भर आया है और आंखें फिर डबडबा आयी हैं। कुछ रुक कर मैंने आगे कहना शुरू किया है :

- बचपन में मेरे केश बहुत लम्बे, भारी और चमकीले थे। सबकी निगाह में ये केश जितने शानदार थे, मेरे लिए उतनी ही मुसीबत का कारण बने। बचपन में मेरा सिर बहुत दुखता था। हर वक्त जैसे सिर में हथौड़े बजते रहते। एक पल के लिए भी चैन न मिलता। मैं सारा-सारा दिन इसी सिर दर्द की वजह से रोता। न पढ़ पाता, न खेल ही पाता। दिल करता, सिर को दीवार से, फर्श से तब तक टकराता रहूं, जब तक इसके दो टुकड़े न हो जायें। मेरे दारजी मुझे डॉक्टर के पास ले जाते, बेबे सिर पर ढेर सारा गरम तेल चुपड़ कर सिर की मालिश करती। थोड़ी देर के लिए आराम आ जाता लेकिन फिर वही सिर दर्द। स्कूल के सारे मास्टर वगैरह आस पास के मौहल्लों में ही रहते थे और दारजी के पास कुछ न कुछ बनवाने के लिए आते रहते थे, इसलिए किसी तरह ठेलठाल कर पास तो कर दिया जाता, लेकिन पढ़ाई मेरे पल्ले खाक भी नहीं पड़ती थी। ध्यान ही नहीं दे पाता था। डाक्टरों, वैद्यों, हकीमों के आधे अधूरे इलाज चलते, लेकिन आराम न आता। मुझे अपनी बाल बुद्धि से इसका एक ही इलाज समझ में आता कि ये केश ही इस सारे सिरदर्द की वजह हैं। जाने क्यों यह बात मेरे मन में घर कर गयी थी कि जिस दिन मैं ये केश कटवा लूंगा, मेरा सिर दर्द अपने आप ठीक हो जायेगा। मैंने एकाध बार दबी जबान में बेबे से इसका जिक्र किया भी था लेकिन बेबे ने दुत्कार दिया था - मरणे जोग्या, फिर यह बात मुंह से निकाली तो तेरी जुबान खींच लूंगी।

शायद रबब को कुछ और ही मंजूर था। एक दिन मैंने भी तय कर लिया, जुबान जाती है तो जाये, लेकिन ये सिरदर्द और बरदाश्त नहीं होता। ये केश ही सिरदर्द की जड़ हैं। इनसे छुटकारा पाना ही होगा। और मैं घर से बहुत दूर एक मेले में गया और वहां अपने केश कटवा आया। केश कटवाने के लिए भी मुझे खासा अच्छा खासा नाटक करना पड़ा। पहले तो कोई नाई ही किसी सिख बच्चे के केश काटने को तैयार न हो। मैं अलग-

अलग नाइयों के पास गया, लेकिन ये मेरी बात किसी ने न मानी। तब मैंने एक झूठ बोला कि मैं मोना ही हूँ और मेरे मां-बाप ने मानता मान रखी थी कि तेरह-चौदह साल तक तेरे बाल नहीं कटवायेंगे और तब तू बिना बताये ही बाल कटवा कर आना और मैंने नाई के आगे इक्कीस रुपये रख दिये थे।

नाई बुदबुदाया था - बड़े अजीब हैं तेरी बिरादरी वाले। वह नाई बड़ी मुश्किल से तैयार हुआ था। उस दिन मैंने पहली बार घर में चोरी की थी। मैंने बेबे की गुल्लक से बीस रुपये निकाले थे। एक रात पहले से ही मैं तय कर चुका था कि ये काम कर ही डालना है। चाहे जो हो जाये। एकाध बार दारजी के गुस्से का ख्याल आया था लेकिन उनके गुस्से की तुलना में मेरी अपनी ज़िंदगी और पढ़ाई ज्यादा ज़रूरी थे।

वैसे हम लोग नियमित रूप से गुरुद्वारे जाते थे और वहां हमें पांच ककारों के महत्व के बारे में बताया ही जाता था। फिलहाल ये सारी चीजें दिमाग में बहुत पीछे जा चुकी थीं।

जब मैं अपना गंजा सिर लेकर घर में घुसा था तो जैसे घर में तूफान आ गया था। मेरे घर वालों ने सपने में भी नहीं सोचा था कि यह घुन्ना-सा, हर बात पर मार खाने वाला तेरह-चौदह साल का मरियल सा छोकरा सिक्खी धर्म के खिलाफ जा कर केश भी कटवा सकता है। मेरी बेबे को तो जैसे दौरा पड़ गया था और वह पछाड़ें खाने लगी थी। सारा मौहल्ला हमारे अंगन में जमा हो गया था। मेरी जम कर कुटम्मस हुई थी। लानतें दी गयी थीं। मेरे दारजी ने उस दिन मुझे इतना पीटा था कि पिटते-पिटते मैं फैसला कर चुका था कि अब इस घर में नहीं रहना है। वैसे अगर मैं यह फैसला न भी करता तो भी मुझसे घर छूटना ही था। दारजी ने उसी समय खड़े-खड़े मुझे घर से निकाल दिया था। गुस्से में उन्होंने मेरे दो-चार जोड़ी फटे-पुराने कपड़े और मेरा स्कूल का बस्ता भी उठा कर बाहर फेंक दिये थे। मैं अपनी ये पूंजी उठाये दो-तीन घंटे तक अपने मोहल्ले के बाहर तालाब के किनारे भूखा-प्यासा बैठा बिसूरता रहा था और मेरे सारे यार-दोस्त, मेरे दोनों छोटे भाई मेरे आस-पास घेरा बनाये खड़े थे। उनकी निगाह में मैं अब एक अजूबा था जिसके सिर से सींग गायब हो गये थे।

उस दिन चौबीस सितम्बर थी। दिन था शक्रवार। मेरी ज़िंदगी का सबसे काला और तकलीफदेह दिन। इस चौबीस सितम्बर ने ज़िंदगी भर मेरा पीछा नहीं छोड़ा। हर साल यह तारीख मुझे रुलाती रही, मुझे याद दिलाती रही कि पूरी दुनिया में मैं बिलकुल अकेला हूँ। बेशक यतीम या बेचारा नहीं हूँ लेकिन मेरी हालत उससे बेहतर भी नहीं है। अपने मां-बाप के होते हुए दूसरों के रहमो-करम पर पलने वाले को आप और क्या कहेंगे? खैर, तो उस दिन दोपहर तक किसी ने भी मेरी खाने की सुध नहीं ली थी तो मैंने भी तय कर लिया था, मैं इसी गंजे सिर से वह सब कर के दिखाऊंगा जो अब तक मेरे खानदान में किसी ने न किया हो। मेरे आंसू अचानक ही सूख गये थे और मैं फैसला कर चुका था।

मैंने अपना सामान समेटा था और उठ कर चल दिया था। मेरे आस पास घेरा बना कर खड़े सभी लड़कों में हड़बड़ी मच गयी थी। इन लड़कों में मेरे अपने भाई भी थे। सब के सब मेरे पीछे पीछे चल दिये थे कि मैं घर से भाग कर कहां जाता हूँ। मैं काफी देर तक अलग अलग गलियों के चक्कर काटता रहा था ताकि वे सब थक हार कर वापिस लौट जायें। इस चक्कर में शाम हो गयी थी तब जा कर लड़कों ने मुझे अकेला छोड़ा था। अकेले होते ही मैं सीधे अपने स्कूल के हैड मास्टरजी के घर गया था और रोते-रोते उन्हें सारी बात बतायी थी। उनके पास जाने की वजह यह थी कि वे भी मोने सिख थे। हालांकि उनका पूरा खानदान सिखों

का ही था और उनके घर वाले, ससुराल वाले कट्टर सिख थे। वे मेरे दारजी के गुस्से से वाकिफ थे और मेरी सिरदर्द की तकलीफ से भी। मैंने उनके आगे सिर नवा दिया था कि मुझे दारजी ने घर से निकाल दिया है और मैं अब आपके आसरे ही पढ़ना चाहता हूँ। उन्होंने मेरे सिर पर हाथ फेरा था। वे भले आदमी थे। मेरा दृढ़ निश्चय देख कर दिलासा दी थी कि पुत्तर तू चिंता न कर। मैं तेरी पढ़ाई-लिखाई का पूरा इंतजाम कर दूंगा। अच्छा होता तेरे घर वाले तेरी तकलीफ को समझते और तेरा इलाज कराते। खैर जो ऊपर वाले को मंजूर। उन्होंने तब मेरे नहाने-धोने का इंतजाम किया था और मुझे खाना खिलाया था। उस रात मैं उन्हीं के घर सोया था। शाम के वक्त वे हमारे मोहल्ले की तरफ एक चक्कर काटने गये थे कि पता चले, कहीं मेरे दारजी वगैरह मुझे खोज तो नहीं रहे हैं। उन्होंने सोचा था कि अगर वे लोग वाकई मेरे लिए परेशान होंगे तो वे उन लोगों को समझायेंगे और मुझे घर लौटने के लिए मनायेंगे। शायद तब मैं भी मान जाता, लेकिन लौट कर उन्होंने जो कुछ बताया था, उससे मेरा घर न लौटने का फैसला मजबूत ही हुआ था। गली में सन्नाटा था और किसी भी तरह की कोई भी सुगबुगाहट नहीं थी। हमारा दरवाजा बंद था। हो सकता है भीतर मेरी बेबे और छोटे भाई वगैरह रोना-धोना मचा रहे हों, लेकिन बाहर से कुछ भी पता नहीं चल पाया था। रात के वक्त वे एक चक्कर कोतवाली की तरफ भी लगा आये थे - दारजी ने मेरे गुम होने की रिपोर्ट नहीं लिखवायी थी। अगले दिन सुबह - सुबह ही वे एक बार फिर हमारे मोहल्ले की तरफ चक्कर लगा आये थे, लेकिन वहां कोई भी मेरी गैर-मौजूदगी को महसूस नहीं कर रहा था। वहां सब कुछ सामान्य चल रहा था। तब वे एक बार फिर कोतवाली भी हो आये थे कि वहां कोई किसी बच्चे के गुम होने की रिपोर्ट तो नहीं लिखवा गया है। वहां ऐसी कोई रिपोर्ट दर्ज नहीं करायी गयी थी।

उन्होंने तब मेरे भविष्य का फैसला कर लिया था। पास ही के शहर सहारनपुर में रहने वाले अपने ससुर के नाम एक चिट्ठी दी थी और मुझे उसी दिन बस में बिठा दिया था। इस तरह मैं उनसे दूर होते हुए भी उनकी निगरानी में रह सकता था और जरूरत पड़ने पर वापिस भी बुलवाया जा सकता था। उनके ससुर वहां सबसे बड़े गुरुद्वारे की प्रबंधक कमेटी के कर्त्ताधरता थे और उनके तीन-चार स्कूल चलते थे। ससुर साहब ने अपने दामाद की चिट्ठी पढ़ते ही मेरे रहने खाने का इंतजाम कर दिया था। मेरी किस्मत खराब थी कि उनके ससुर उतने ही काइयां आदमी थे। वे चाहते तो मेरी सारी समस्याएं हल कर सकते थे। वहीं गुरुद्वारे में मेरे रहने और खाने का इंतजाम कर सकते थे, मेरी फीस माफ करवा सकते थे, लेकिन उन्होंने ऐसा कुछ भी नहीं किया था। उन्होंने मुझे अपने ही घर में रख लिया था। बेशक स्कूल में मेरा नाम लिखवा दिया था लेकिन न तो मैं नियमित रूप से स्कूल जा पाता था और न ही पढ़ ही पाता था। हैड मास्टर साहब ने तो अपने ससुर के पास मुझे पढ़ाने के हिसाब से भेजा था लेकिन यहां मेरी हैसियत घरेलू नौकर की हो गयी थी। मैं दिन भर खटता, घर भर के उलटे सीधे काम करता और रात को बाबाजी के पैर दबाता। खाने के नाम पर यही तसल्ली थी कि दोनों वक्त खाना गुरुद्वारे के लंगर से आता था सो पेट किसी तरह भर ही जाता था। असली तकलीफ पढ़ाई की थी जिसका नाम सुनते ही बाबा जी दस तरह के बहाने बनाते। मैं अब सचमुच पछताने लगा था कि मैं बेकार ही घर से भाग कर आया। वहीं दारजी की मार खाते पड़ा रहता, लेकिन फिर ख्याल आता, यहां कोई कम से कम मारता तो नहीं। इसके अलावा मैंने यह भी देखा मैं इस तरह घर का नौकर ही बना रहा तो अब तक का पढ़ा-लिखा सब भूल जाऊंगा और यहां तो ज़िदगी भर मुफ्त का घरेलू नौकर ही बन कर रह जाऊंगा तो मैंने तय किया, यहां भी नहीं रहना है। जब अपना घर छोड़ दिया, उस घर से मोह नहीं पाला तो बाबा जी के पराये घर से कैसा मोह। मैंने वहां से भी चुपचाप भाग जाने



का फैसला किया। मैंने सोचा कि अगर यहां सिंह सभा गुरुद्वारा और स्कूल एक साथ चलाती है तो दूसरे शहरों में भी चलाती ही होगी।

तो एक रात मैं वहां से भी भाग निकला। बाबाजी के यहां से भागा तो किसी तरह मेहनत-मजदूरी करते हुए, कुलीगिरी करते हुए, ट्रकों में लिफ्ट लेते हुए आखिर मणिकर्ण जा पहुंचा। इस लम्बी, थकान भरी और तरह तरह के ट्रे मीठे अनुभवों से भरी मेरी ज़िंदगी की सबसे लम्बी अकेली यात्रा में मुझे सत्रह दिन लगे थे। वहां पहुंचते ही पहला झूठ बोला कि हमारे गांव में आयी बाढ़ में परिवार के सब लोग बह गये हैं। अब दुनिया में बिलकुल अकेला हूं और आगे पढ़ना चाहता हूं। यह नाटक करते समय बहुत रोया। यह जगह मुझे पसंद आयी थी और आगे कई साल तक साल की यानी जिस कक्षा तक का स्कूल हो, वहीं से पढ़ाई करने का फैसला मैं मन-ही-मन कर चुका था। इसलिए ये नाटक करना पड़ा।

वहां मुझे अपना लिया गया था। मेरे रहने-खाने की स्थायी व्यवस्था कर दी गयी थी और एक मामूली-सा टेस्ट लेकर मुझे वहां के स्कूल में सातवीं में दाखिला दे दिया गया था। मेरी ज़िंदगी की गाड़ी अब एक बार फिर से पटरी पर आ गयी थी। अब मैं सिर पर हर समय पटका बांधे रहता। एक बार फिर मैं अपनी छूटी हुई पढ़ाई में जुट गया था। स्कूल से फुर्सत मिलते ही सारा वक्त गुरुद्वारे में ही बिताता। बहुत बड़ा गुरुद्वारा था। वहां रोजाना बसों और कारों में भर भर कर तीर्थ यात्री आते और खूब चहल-पहल होती। वे एक आध दिन ठहरते और लौट जाते। मुझे अगली व्यवस्था तक यहीं रहना था और इसके लिए ज़रूरी था कि सब का दिल जीत कर रहूं। कई बार बसों या कारों में आने वाले यात्रियों का सामान उठवा कर रखवा देता तो थोड़े बहुत पैसे मिल जाते। सब लोग मेरे व्यवहार से खुश रहते। वहां मेरी तरह और भी कई लड़के थे लेकिन उनमें से कुछ वाकई गरीब घरों से आये थे या सचमुच यतीम थे। मैं अच्छे भले घर का, मां बाप के होते हुए यतीम था।

अब मेरी ज़िंदगी का एक ही मकसद रह गया था। पढ़ना, और सिर्फ पढ़ना। मुझे पता नहीं कि यह मेरा विश्वास था या कोई जादू, मुझे सिरदर्द से पूरी तरह मुक्ति मिल चुकी थी। वहां का मौसम, ठंड, लगातार पड़ती बर्फ, पार्वती नदी का किनारा, गर्म पानी के सोते और साफ-सुथरी हवा जैसे इन्हीं अच्छी अच्छी चीजों से जीवन सार्थक हो चला था। यहां किसी भी किस्म की कोई चिंता नहीं थी। स्कूल से लौटते ही मैं अपने हिस्से के काम करके पढ़ने बैठ जाता। मुझे अपनी बेबे, बहन और छोटे भाइयों की बहुत याद आती थी। अकेले मैं रोता था कि चाह कर भी उनसे मिलने नहीं जा सकता था, लेकिन मेरी भी जिद थी कि मुझे घर से निकाला गया है, मैंने खुद घर नहीं छोड़ा है। मुझे वापिस बुलाया जायेगा तभी जाऊंगा।

मैं हर साल अपनी कक्षा में फर्स्ट आता। चौथे बरस मैं हाई स्कूल में अपने स्कूल में अक्वल आया था। मुझे ढेरों इनाम और वजीफा मिले थे।

हाई स्कूल कर लेने के बाद एक बार फिर मेरे सामने रहने-खाने और आगे पढ़ने की समस्या आ खड़ी हुई थी। यहां सिर्फ दसवीं तक का ही स्कूल था। बारहवीं के लिए नीचे मैदानों में उतरना पड़ता। मणिकर्ण का शांत, भरपूर प्राकृतिक सौन्दर्य से भरा वातावरण और गुरुद्वारे का भक्तिरस से युक्त पारिवारिक वातावरण भी छोड़ने का संकट था।

में अब तक के अनुभवों से बहुत कुछ सीख चुका था और आगे पढ़ने के एकमात्र उद्देश्य से इन सारी नयी समस्याओं के लिए तैयार था। छोटे मोटे काम करके मैंने अब तक इतने पैसे जमा कर लिये थे कि दो-तीन महीने आराम से कहीं कमरा ले कर काट सकूँ। अठारह साल का होने को आया था। दुनिया भर के हर तरह के लोगों से मिलते-जुलते मैं बहुत कुछ सीख चुका था। वजीफा था ही। सौ रुपये प्रबंधक कमेटी ने हर महीने भेजने का वायदा कर दिया था।

तभी संयोग से अमृतसर से एक इंटर कॉलेज का एक स्कूली गुप वहां आया। मेरे अनुरोध पर हमारे प्रधान जी ने उनके इन्चार्ज के सामने मेरी समस्या रखी। यहां रहते हुए साढ़े तीन-चार साल होने को आये थे। मेरी तरह के तीन-चार और भी लड़के थे जो आगे पढ़ना चाहते थे। हमारे प्रधान जी ने हमारी सिफारिश की थी कि हो सके तो इन बच्चों का भला कर दो। हमारी किस्मत अच्छी थी कि हम चारों ही उस गुप के साथ अमृतसर आ गये।

मणिकर्ण का वह गुरुद्वारा छोड़ते समय मैं एक बार फिर बहुत रोया था लेकिन इस बार मैं अकेला नहीं था। रोने वाला और रोने की वजह भी अलग थी। मैं अपनी और सबकी खुशी के लिए, एक बेहतर भविष्य के लिए आगे जा रहा था।

अब मेरे सामने एक और बड़ी दुनिया थी। यहां आकर हमारे रहने खाने की व्यवस्था अलग-अलग गुरसिक्खी घरों में कर दी गयी थी और हम अब उन घरों के सदस्य की तरह हो गये थे। हमें अब वहीं रहते हुए पढ़ाई करनी थी।

जहां मैं रहता था, वे लोग बहुत अच्छे थे। बेशक यह किसी के रहमो-करम पर चलने जैसा था और मेरा बाल मन कई बार मुझे धिक्कारता कि मैं क्यों अपना घर-बार छोड़ कर दूसरों के आसरे पड़ा हुआ हूँ, लेकिन मेरे पास जो उपाय था, घर लौट जाने का, वह मुझे मंजूर नहीं था। और कोई विकल्प ही नहीं था। मैं उनके छोटे बच्चों को पढ़ाता और जी-जान से उनकी सेवा करके अपनी आत्मा के बोझ को कम करता।

मैं एक बार फिर पढ़ाई में जी-जान से जुट गया था। इंटर में मैं पूरे अमृतसर में फर्स्ट आया था। घर छोड़े मुझे छः साल होने को आये थे, लेकिन सिर्फ कुछ सौ मील के फासले पर मैं नहीं गया था। अखबारों में मेरी तस्वीर छपी थी। जिस घर में मैं रहता था, उन लोगों की खुशी का ठिकाना नहीं था। इसके बावजूद मैं उस रात खूब रोया था।

मुझे मेरा चाहा सब कुछ मिल रहा था और ये सब घर परिवार त्यागने के बाद ही। मैं मन ही मन चाहने लगा था कि घर से कोई आये और मेरे कान पकड़ कर लिवा ले जाये जबकि मुझे मालूम था कि उन्हें मेरी इस सफलता की खबर थी ही नहीं। मुझे तो यह भी पता नहीं था कि उन्होंने कभी मेरी खोज-खबर भी ली थी या नहीं। आइआइटी, कानपुर में इंजीनियरिडग में एडमिशन मिल जाने के बाद मेरी बहुत इच्छा थी कि मैं अपने घर जाऊँ लेकिन संकट वही था, मैं ही क्यों झुकूँ। मैं बहुत रोया था लेकिन घर नहीं गया था। घर की कोई खबर नहीं थी मेरे पास। मेरी बहुत इच्छा थी कि कम-से-कम अपने गॉडफादर हैड मास्टर साहब से ही मिलने चला जाऊँ लेकिन हो नहीं पाया था। मैं जानता था कि वे इतने बरसों से उनके मन पर भी इस बात का बोझ तो होगा ही कि उनके ससुर ने मेरे साथ इस तरह का व्यवहार करके मुझे घर छोड़ने पर

मज़बूर कर दिया था तो मैं कहां गया होऊंगा। मैंने अपने वचन का मान रखा था। उन्हीं के आशीर्वाद से इंजीनियर होने जा रहा था। तब मैंने बहुत सोच कर उन्हें एक ग्रीटिंग कार्ड भेज दिया था। सिर्फ अपना नाम लिखा था, पता नहीं दिया था। बाद में घर जाने पर ही पता चला था कि वे मेरा कार्ड मिलने से पहले ही गुज़र चुके थे।

अगले चार छः साल तक मैं खुद को जस्टीफाई करता रहा कि मुझे कुछ कर के दिखाना है। आप हैरान होंगी मालविका जी कि इन बरसों में मुझे शायद ही कभी फुर्सत मिली हो। मैं हमेशा खटता रहा। कुछ न कुछ करता रहा। बच्चों को पढ़ाता रहा। आपको बताऊं कि मैंने बेशक बीटेक और एमटैक किया है, पीएच डी की है, लेकिन गुरुद्वारे में रहते हुए, अमृतसर में भी और बाद में आइआइटी कानपुर में पढ़ते हुए भी मैं बराबर ऐसे काम धंधे भी सीखता रहा और करता भी रहा जो एक कम पढ़ा-लिखा आदमी जानता है या रोज़ी-रोटी कमाने के लिए सीखता है। मैं ज़रा-सी भी फुर्सत मिलने पर ऐसे काम सीखता था। मुझे चारपाई बुनना, चप्पलों की मरम्मत करना, जूते तैयार करना, कपड़े रंगना, बच्चों के खिलौने बनाना या कारपेंटरी का मेरा खानदानी काम ये बीसियों धंधे आते हैं। मैं बिजली की सारी बिगड़ी चीजें दुरुस्त कर सकता हूँ। बेशक मुझे पतंग उड़ाना या क्रिकेट खेलना नहीं आता लेकिन मैं हर तरह का खाना बना सकता हूँ और घर की रंगाई-पुताई बखूबी कर सकता हूँ। इतने लम्बे अरसे में मैंने शायद ही कोई फिल्म देखी हो, कोई आवारागर्दी की हो या पढ़ाई के अलावा और किसी बात के बारे में सोचा हो लेकिन ज़रूरत पड़ने पर मैं आज भी छोटे से छोटा काम करने में हिचकता नहीं। साथ में पढ़ने वाले लड़के अक्सर छेड़ते - ओये, तू जितनी भी मेहनत करे, अपना माथा फोड़े या दुनिया भर के धंधे करे या सीखे, मज़े तेरे हिस्से में न अब लिखे हैं और न बाद में ही तू मज़े ले पायेगा। तू तब भी बीवी बच्चों के लिए इसी तरह खटता रहेगा। तब तो मैं उनकी बात मज़ाक में उड़ा दिया करता था, लेकिन अब कई बार लगता है, गलत वे भी नहीं थे। मेरे हिस्से में न तो मेरी पसंद का जीवन आया है और न घर ही। अपना कहने को कुछ भी तो नहीं है मेरे पास। एक दोस्त तक नहीं है।

मैं रुका हूँ। देख रहा हूँ, मालविका जी बिना पलक झपकाये ध्यान से मेरी बात सुन रही हैं। शायद इतने अच्छे श्रोता के कारण ही मैं इतनी देर तक अपनी नितांत व्यक्तिगत बातें उनसे शेयर कर पा रहा हूँ।

- दोबारा घर जाने के बारे में कुछ बताइये, वे कहती हैं।

उन्हें संक्षेप में बताता हूँ दोबारा घर जाने से पहले की बेचैनी की, अकु लाहट की बातें और घर से एक बार फिर से बेघर हो कर लौट कर आने की बात।

- और गुड्डी?

- मुझे लगता है मैंने ज़िंदगी में जितनी गलतियां की हैं, उनमें से जिस गलती के लिए मैं खुद को कभी भी माफ नहीं कर पाऊंगा, वह थी कि घर से दोबारा लौटने के दिन अगर मैं गुड्डी को भी अपने साथ बंबई ले आता तो शायद ज़िंदगी के सारे हादसे खत्म हो जाते। मेरी ज़िंदगी ने भी बेहतर रुख लिया होता और मैं गुड्डी को बचा पाता। उसकी पढ़ाई लिखाई पूरी हो पाती, लेकिन ....

- अपने प्रेम प्रसंगों के बारे में कुछ बताइये।

- मेरा विश्वास कीजिये, इस सिर दर्द का मेरे प्रेम प्रसंगों के होने या न होने से कोई संबंध नहीं है।

लगता है आपसे आपके प्रेम प्रसंग सुनने के लिए आपको कोई रिश्वत देनी पड़ेगी। चलिए एक काम करते हैं, कल हम लंच एक साथ ही लेंगे। वे हँसी हैं - घबराइये नहीं, लंच के पैसे भी मैं कन्सलटेंसी में जोड़ दूंगी। कहिये, ठीक रहेगा?

- अब आपकी बात मैं कैसे टाल सकता हूँ।

- आप यहीं आयेंगे या आपको आपके घर से ही पिक-अप कर लूँ?

- जैसा आप ठीक समझें।

- आप यहीं आ जायें। एक साथ चलेंगे।

- चलेगा, भला मुझे क्या एतराज हो सकता है।

मालविका जी लंच के लिए जिस जगह ले कर आयी हैं, वह शहरी माहौल से बहुत दूर वुडफोर्ड के इलाके में है। भारतीय रेस्तरां है यह। नाम है चोर बाज़ार। बेशक लंदन में है लेकिन रेस्तरां के भीतर आ जाने के बाद पता ही नहीं चलता, हम लंदन में हैं या चंडीगढ़ के बाहर हाइवे के किसी अच्छे से रेस्तरां में बैठे हैं। जगह की तारीफ करते हुए पूछता हूँ मैं - ये इतनी शानदार जगह कैसे खोज ली आपने ? मुझे तो आज तक इसके बारे में पता नहीं चल पाया।

हंसती हैं मालविका जी - घर से बाहर निकलो तो कुछ मिले।

बहुत ही स्वादिष्ट और रुचिकर भोजन है। खाना खाते समय मुझे सहसा गोल्डी की याद आ गयी है। उसके साथ ही भटकते हुए मैंने बंबई के अलग-अलग होटलों में खाने का असली स्वाद लिया था। पता नहीं क्यों गोल्डी के बारे में सोचना अच्छा लग रहा है। उसकी याद भी आयी तो कहां और कैसी जगह पर। कहां होगी वह इस समय?

इच्छा होती है मालविका जी को उसके बारे में बताऊँ। मैं बताऊँ उन्हें, इससे पहले ही उन्होंने पूछ लिया है - किसके बारे में सोच रहे हैं दीप जी? क्या कोई खास थी?

बताता हूँ उन्हें - मालविका जी, कल आप मेरे प्रेम प्रसंगों के बारे में पूछ रही थीं।

- मैं आपको यहां लायी ही इसलिए थी कि आप अपने प्रेम प्रसंगों के बारे में खुद ही बतायें। मेरा मिशन सफल रहा, आप बिलकुल सहज हो कर उस लड़की के बारे में बतायें जिस की याद आपको यह स्वादिष्ट खाना खाते समय आ गयी है। जरूर आप लोग साथ-साथ खाना खाने नयी-नयी जगहों पर जाते रहे होंगे।

- अक्सर तो नहीं लेकिन हां, कई बार जाते थे।

- क्या नाम था उसका ?

- गोल्डी, वह हमारे घर के पास ही रहने आयी थी।

मैं मालविका जी को गोल्डी से पहली मुलाकात से आखिरी तय लेकिन न हो पायी मुलाकात की सारी बातें विस्तार से बताता हूँ। इसी सिलसिले में अलका दीदी और देवेद्र जी का भी ज़िक्र आ गया है। मैं उनके बारे में भी बताता हूँ।

हम खाना खा कर बाहर आ गये हैं। वापिस आते समय भी वे कोई न कोई ऐसा सवाल पूछ लेती हैं जिससे मेरे अतीत का कोई नया ही पहलू खुल कर सामने आ जाता है। बातें घूम फिर कर कभी गोलू पर आ जाती हैं तो कभी गुड्डी पर। मेरी एक बात खत्म नहीं हुई होती कि उसे दूसरी तरफ मोड़ देती हैं। मैं समझ नहीं पा रहा हूँ, वे मुझमें और मुझसे जुड़ी भूली बिसरी बातों में इतनी दिलचस्पी क्यों ले रही हैं। वैसे एक बात तो है कि उनसे बात करना अच्छा लग रहा है। कभी किसी से इतनी बातें करने का मौका ही नहीं मिला। हर बार यही समझता रहा, सामने वाला कहीं मेरी व्यथा कथा सुन कर मुझ पर तरस न खाने लगे। इसी डर से किसी को अपने भीतर के अंधेरे कोनों में मैंने झांकने ही नहीं दिया।

मालविका जी की बात ही अलग लगती है। वे बिलकुल भी ये नहीं जतलातीं कि वे आपको छोटा महसूस करा रही हैं या आप पर तरस खा रही हैं।

जब उन्होंने मुझे घर पर ड्रॉप करने के लिए गाड़ी रोकी है तो मुझे फिर से गोल्डी की बातें याद आ गयी हैं।

मैंने यूँ ही मालविका जी से पूछ लिया है - भीतर आ कर इस बंदे के हाथ की कॉफी पी कर कुछ कमेंट नहीं करना चाहेंगी?

उन्होंने हँसते हुए गाड़ी का इंजन बंद कर दिया है और कह रही हैं - मैं इंतज़ार कर रही थी कि आप कहें और मैं आपके हाथ की कॉफी पीने के लिए भीतर आऊँ। चलिये, आज आपकी मेहमाननवाज़ी भी देख ली जाये।

वे भीतर आयी हैं।

बता रही हैं - गौरी के मम्मी पापा वाले घर में तो कई बार जाना हुआ लेकिन यहां आना नहीं हो पाया। आज आपके बहाने आ गयी।

- आपसे पहले परिचय हुआ होता तो पहले ही बुला लेते। खैर, खुश आमदीद।

जब तक मैं कॉफी बनाऊँ, वे पूरे फ्लैट का एक चक्कर लगा आयी हैं।

पूछ रही हैं वे - मैं गौरी के एस्थेटिक सेंस से अच्छी तरह से परिचित हूँ, घर की ये साज-सज्जा कम से कम उसकी की हुई तो नहीं है और न लंदन में इस तरह की इंटीरियर करने वाली एजेंसियां ही हैं। आप तो छुपे रुस्तम निक ले। मुझे नहीं पता था, आप ये सब भी जानते हैं। बहुत खूब। ग्रेट।

मैं क्या जवाब दूँ - बस, ये तो सब यूँ ही चलता रहता है। जब भी मैं अपने घर की कल्पना करता था तो सोचता था, बैडरूम ऐसे होगा हमारा और ड्रिंगरूम और स्टडी ऐसे होंगे। अब जो भी बन पड़ा...।

- क्यों, क्या इस घर से अपने घर वाली भावना नहीं जुड़ती क्या?

- अपना घर न समझता तो ये सब करता क्या? मैंने कह तो दिया है, लेकिन मैं जानता हूँ कि उन्होंने मेरी बदली हुई टोन से ताड़ लिया है, मैं सच नहीं कह रहा हूँ।

- एक और व्यक्तिगत सवाल पूछ रही हूँ, गौरी से आपके संबंध कैसे हैं?

मैं हँस कर उनकी बात टालने की कोशिश करता हूँ - आज के इन्टरव्यू का समय समाप्त हो चुका है मैडम। हम प्रोग्राम के बाद की ही कॉफी ले रहे हैं।

- बहुत शांतिर हैं आप, जब आपको जवाब नहीं होता तो कैसा बढ़िया कमर्शियल ब्रेक लगा देते हैं। खैर, बच के कहाँ जायेंगे। अभी तो हमने आधे सवाल भी नहीं पूछे।

मालविका जी के सवालों से मेरी मुक्ति नहीं है। पिछले महीने भर से उनसे बीच-बीच में मुलाकात होती ही रही है। हालांकि उन्होंने इलाज या योगाभ्यास के नाम पर अभी तक मुझे दो-चार आसन ही कराये हैं लेकिन उन्होंने एक अलग ही तरह की राय देकर मुझे एक तरह से चौंका ही दिया है। उन्होंने मुझे डायरी लिखने के लिए कहा है। डायरी भी आज की नहीं, बल्कि अपने अतीत की, भूले बिसरे दिनों की। जो कुछ मेरे साथ हुआ, उसे ज्यों का त्यों दर्ज करने के लिए कहा है। अलबत्ता, उन्होंने मुझसे गौरी के साथ मेरे संबंधों में चल रही खटास के बारे में राई रत्ती उगलवा लिया है। बेशक उन सारी बातों पर अपनी तरफ से एक शब्द भी नहीं कहा है। इसके अलावा ससुराल की तरफ से मेरे साथ जो कुछ भी किया गया या किस तरह से शिशिर ने मेरे कठिन वक्त में मेरा साथ दिया, ये सारी बातें मैंने डायरी में बाद में लिखी हैं, उन्हें पहले बताया है। डायरी लिखने का मैंने यही तरीका अपनाया है। उनसे दिन में आमने-सामने या फोन पर जो भी बात होती है, वही डायरी में लिख लेता हूँ। मेरा सिरदर्द अब पहले की तुलना में काफी कम हो चुका है। गौरी भी हैरान है कि मात्र दो-चार योग आसनों से भला इतना भयंकर सिरदर्द कैसे जा सकता है। लेकिन मैं ही जानता हूँ कि ये सिरदर्द योगासनों से तो नहीं ही गया है। अब मुझे मालविका जी का इलाज करने का तरीका भी समझ में आ गया है। मैंने उनसे इस बारे में जब पूछा कि आप मेरा इलाज कब शुरू करेंगी तो वे हँसी थीं - आप भी अच्छे-खासे सरदार हैं। ये सब क्या है जो मैं इतने दिनों से कर रही हूँ। ये इलाज ही तो चल रहा है आपका। आप ही बताइये, आज तक आपका न केवल सिरदर्द गायब हो रहा है बल्कि आप ज्यादा उत्साहित और खुश-खुश नज़र आने लगे हैं। बेशक कुछ चीज़ों पर मेरा बस नहीं है लेकिन जितना हो सका है, आप अब पहले वाली हालत में तो नहीं हैं। है ना यही बात?

- तो आपकी निगाह में मेरे सिरदर्द की वज़ह क्या थी?

- अब आप सुनना ही चाहते हैं तो सुनिये, आपको दरअसल कोई बीमारी ही नहीं थी। आपके साथ तीन-चार तकलीफ़ें एक साथ हो गयी थीं। पहली बात तो ये कि आप ज़िंदगी भर अकेले रहे, अकेले जूझते भी रहे और कुढ़ते भी रहे। संयोग से आपने अपने आस-पास वालों से जब भी कुछ चाहा, या मांगा, चूँकि वो आपकी बंधी बंधायी जीवन शैली से मेल नहीं खाता था, इसलिए आपको हमेशा लगता रहा, आप छले गये हैं। आप कभी भी व्यावहारिक नहीं रहे इसलिए आपको सामने वाले का पक्ष हमेशा ही गलत लगता रहा। ऐसा नहीं है कि आपके साथ ज्यादातियां नहीं हुई होंगी। वो तो हुई ही हैं लेकिन उन सबको देखने-समझने और उन्हें

जीवन में ढालने के तरीके आपके अपने ही थे। दरअसल आप ज़िंदगी से कुछ ज्यादा ही उम्मीदें लगा बैठे थे इसलिए सब कुछ आपके खिलाफ़ होता चला गया। जहां आपको मौका मिला, आप पलायन कर गये और जहां नहीं मिला, वहां आप सिरदर्द से पीड़ित हो गये। आप कुछ हद तक वहम रोग जिसे अंग्रेजी में हाइपोकाँड्रियाक कहते हैं, के रोगी होते चले जा रहे थे। दूसरी दिक्कत आपके साथ यह रही कि आप कभी भी किसी से भी अपनी तकलीफें शेयर नहीं कर पाये। करना चाहते थे और जब करने का वक़्त आया तो या तो लोग आपको सुनने को तैयार नहीं थे और जहां तैयार थे, वहां आप तरस खाने से बचना चाहते हुए उनसे झूठ-मूठ के किस्से सुना कर उन्हें भी और खुद को भी बहलाते रहे। क्या गलत कह रही हूं मैं?

- माई गॉड, आपने तो मेरी सारी पोल ही खोल कर रख दी। मैंने तो कभी इस निगाह से अपने आपको देखा ही नहीं।

- तभी तो आपका यह हाल है। कब से दर-बदर हो कर भटक रहे हैं और आपको कोई राह नहीं सूझती।

- आपने तो मेरी आंखें ही खोल दीं। मैं अब तक कितने बड़े भ्रम में जी रहा था कि हर बार मैं ही सही था।

- वैसे आप हर बात गलत भी नहीं थे लेकिन आपको ये बताता कौन। आपने किसी पर भी भरोसा ही नहीं किया कभी। आपको बेचारा बनने से एलर्जी जो थी। है ना..।

- आपको तो सारी बातें बतायी ही हैं ना..।

- तो राह भी तो हमने ही सुझायी है।

- उसके लिए तो मैं आपका अहसान ज़िंदगी भी नहीं भूलूंगा।

- अगर मैं कहूँ कि मुझे भी सिर्फ़ इसी शब्द से चिढ़ है तो..?

- ठीक है नहीं कहेंगे।

मालविका जी से जब से मुलाकात हुई है, ज़िंदगी के प्रति मेरा नज़रिया ही बदल गया है। मैंने अब अपने बारे में भी सोचना शुरू कर दिया है और अपने आबजर्वेशन अपनी डायरी में लिख रहा हूँ। मैं एक और चार्ट बना रहा हूँ कि मैंने ज़िंदगी में कब-कब गलत फैसले किये और बाद में धोखा खाया या कब कब कोई फैसला ही नहीं किया और अब तक पछता रहा हूँ। ये डायरी एक तरह से मेरा कन्फ़ेशन है मेरे ही सामने और मैं इसके आधार पर अपनी ज़िंदगी को बेहतर तरीके से संवारना चाहता हूँ।

बेशक मुझे अब तक सिरदर्द से काफी हद तक आराम मिल चुका है और मैं अपने आपको मानसिक और शारीरिक रूप से स्वस्थ भी महसूस कर रहा हूँ फिर भी गौरी से मेरे संबंधों की पटरी नहीं बैठ पा रही है। जब से उसने देखा है कि मुझे सिरदर्द से आराम आ गया है मेरे प्रति उसका लापरवाही वाला व्यवहार फिर शज़ारू हो गया है। मैं एक बार फिर अपने हाल पर अकेला छोड़ दिया गया हूँ। स्टोर्स जाता हूँ लेकिन उतना ही ध्यान देता हूँ जितने से काम चल जाये। ज्यादा मारामारी नहीं करता। मैं अब अपनी तरफ़ ज्यादा ध्यान

देने लगा हूँ। बेशक मेरे पास बहुत अधिक पाउंड नहीं बचे हैं फिर भी मैंने मालविका जी को बहुत आग्रह करके एक शानदार ओवरकोट दिलवाया है।

इसी हफ्ते गौरी की बुआ की लड़की पुष्पा की शादी है। मैनचेस्टर में। हांडा परिवार की सारी बहू बेटियां आज सवेरे-सवेरे ही निकल गयी हैं। हांडा परिवार में हमेशा ऐसा ही होता है। जब भी परिवार में शादी या और कोई भी आयोजन होता है, सारी महिलाएं एक साथ जाती हैं और दो-तीन दिन खूब जश्न मनाये जाते हैं। हम पुरुष लोग परसों निकलेंगे। मैं शिशिर के साथ ही जाऊंगा।

अभी दिन भर के कार्यक्रम के बारे में सोच ही रहा हूँ कि मालविका जी का फोन आया है। उन्होंने सिर्फ तीन ही वाक्य कहे हैं - मुझे पता है गौरी आज यहां नहीं है। बल्कि पूरा हफ्ता ही नहीं है। आपका मेरे यहां आना कब से टल रहा है। आज आप इनकार नहीं करेंगे और शाम का खाना हम एक-साथ घर पर ही खायेंगे। बनाऊंगी मैं। पता लिखवा रही हूँ। सीधे पहुंच जाना। मैं राह देखूंगी। और उन्होंने फोन रख दिया है।

अब तय हो ही गया है कि मैं अब घर पर ही रहूँ और कई दिन बाद एक बेहद खूबसूरत, सहज और सुकूनभरी शाम गुजारने की राह देखूँ। कई दिन से उन्हीं का यह प्रस्ताव टल रहा है कि मैं एक बार उनके गरीबखाने पर आऊँ और उनकी मेहमाननवाजी स्वीकार करूँ।

मौसम ने भी आखिर अपना रोल अदा कर ही लिया। बरसात ने मेरे अच्छे-खासे सूट की ऐसी-तैसी कर दी। बर्फ के कारण सारे रास्ते या तो बंद मिले या ट्रैफिक चींटियों की तरह रेंग रहा था। बीस मिनट की दूरी तय करने में दो घंटे लगे। मालविका जी के घर तक आते-आते बुरा हाल हो गया है। सारे कपड़ों का सत्यानास हो गया। सिर से पैरों तक गंदी बर्फ के पानी में लिथड़ गया हूँ। जूतों में अंदर तक पानी भर गया है। सर्दी के मारे बुरा हाल है वो अलग। वे भी क्या सोचेंगी, पहली बार किस हाल में उनके घर आ रहा हूँ।

उनके दरवाजे की घंटी बजायी है। दरवाजा खुलते ही मेरा हुलिया देख कर वे पहले तो हँसी के मारे दोहरी हो गयी हैं लेकिन तुरंत ही मेरी बांह पकड़ कर मुझे भीतर खींच लेती हैं - जल्दी से अंदर आ जाओ। तबीयत खराब हो जायेगी।

मैं भीगे कपड़ों और गीले जूतों के साथ ही भीतर आया हूँ। उन्होंने मेरा रेनकोट और ओवरकोट वगैरह उतारने में मदद की है। हँसते हुए बता रही हैं - मौसम का मूड देखते हुए मैं समझ गयी थी कि आप यहां किस हालत में पहुंचेंगे। बेहतर होगा, आप पहले चेंज ही कर लें। इन गीले कपड़ों में तो आपके बाजे बज जायेंगे। बाथरूम तैयार है और पानी एकदम गर्म। वैसे आप बाथ लेंगे या हाथ मुंह धो कर फ्रेश होना चाहेंगे। वैसे इतनी सर्दी में किसी भले आदमी को नहाने के लिए कहना मेरा ख्याल है, बहुत ज्यादाती होगी।

- आप ठीक कह रही हैं लेकिन मेरी जो हालत है, उसे तो देख कर मेरा ख्याल है, नहा ही लूँ। पूरी तरह फ्रेश हो जाऊँगा।

- तो ठीक है, मैं आपके नहाने की तैयारी कर देती हूँ, कहती हुई वे भीतर के कमरे में चली गयी हैं। मैं अभी गीले जूते उतार ही रहा हूँ कि उनकी आवाज आयी है



- बाथरूम तैयार है।

वे हंसते हुए वापिस आयी हैं - मेरे घर में आपकी कद काठी के लायक कोई भी ड्रेसिंग गाउन या कुर्ता पायजामा नहीं है। फिलहाल आपको ये शाम मेरे इस लुंगी-कुर्ते में ही गुज़ारनी पड़ेगी। चलिये, बाथरूम तैयार है।

एकदम खौलते गरम पानी से नहा कर ताज़गी मिली है। फ्रेश हो कर फ्रंट रूम में आया तो मैं हैरान रह गया हूँ। सामने खड़ी हैं मालविका जी। मुसकुराती हुई। एयर होस्टेस की तरह हाथ जोड़े। अभिवादन की मुद्रा में। एक बहुत ही खूबसूरत बुके उनके हाथ में है - हैप्पी बर्थडे दीप जी। मैं ठिठक कर रह गया हूँ। यह लड़की जो मुझे ढंग से जानती तक नहीं और जिसका मुझसे दूर दूर तक कोई नाता नहीं है, कितने जतन से और प्यार से मेरा जनमदिन मनाने का उपक्रम कर रही हैं। और एक गौरी है ..क्या कहूँ, समझ नहीं पाता।

- हैप्पी बर्थ डे डियर दीप। वे फिर कहती हैं और आगे बढ़ कर उन्होंने बुके मुझे थमाते-थमाते हौले से मेरी कनपटी को चूम लिया है। मेरा चेहरा एकदम लाल हो गया है। गौरी के अलावा आज तक मैंने किसी औरत को छुआ तक नहीं है। मैं किसी तरह थैंक्स ही कह पाता हूँ। आज मेरा जनमदिन है और गौरी को यह बात मालूम भी थी। वैसे यहां मेरा यह चौथा साल है और आज तक न तो गौरी ने मुझसे कभी पूछने की ज़रूरत समझी है और न ही उसे कभी फुर्सत ही मिली है कि पूछे कि मेरा जनमदिन कब आता है, या कभी जनमदिन आता भी है या नहीं, तो आज भी मैं इसकी उम्मीद कैसे कर सकता था, जबकि गौरी को हर बार मैं न केवल जनमदिन की विश करता हूँ बल्कि उसे अपनी हैसियत भर उपहार भी देने की कोशिश करता हूँ। गोल्डी से मुलाकात होने से पहले तक तो मेरे लिए यह तारीख सिर्फ एक तारीख ही थी। उसी ने इस तारीख को एक नरम, गुदगुदे अहसास में बदला था। गोल्डी के बाद से जब भी यह तारीख आती है, ख्याल तो आता ही है। बेशक सारा दिन मायूसी से ही गुज़ारना पड़ता है।

मैं हैरान हो रहा हूँ, इन्हें कैसे पता चला कि आज मेरा जनमदिन है। मेरे लिए एक ऐसा दिन जिसे मैं कभी न तो याद करने की कोशिश करता हूँ और न ही इसे आज तक सेलेब्रेट ही किया है। मैं इटॉपी सी हँसी हँसा हूँ और पूछता हूँ - आपको कैसे पता चला कि आज इस बदनसीब का जनमदिन है।

- आप भी कमाल करते हैं दीप जी, पहली बार आप जब आये थे तो मैंने आपका हैल्थ कार्ड बनवाया था। वह डेटा उसी दिन मेरे कम्प्यूटर में भी फीड हो गया और मेरे दिमाग में भी। - कमाल है !! कितने तो लोग आते हैंगे जिनके हैल्थ कार्ड बनते होंगे हर रोज़। सबके बायोडाटा फीड कर लेती हैं आप अपने दिमाग में।

- सिर्फ बायोडाटा। बर्थ डेट तो किसी किसी की ही याद रखती हूँ। समझे। और आप भी मुझसे ही पूछ रहे हैं कि मुझे आपके जनमदिन का कैसे पता चला!!

मैं उदास हो गया हूँ। एक तरफ गौरी है जिसे मेरा जनमदिन तो क्या, हमारी शादी की तारीख तक याद नहीं है। और एक तरफ मालविका जी हैं जिनसे मेरी कुछेक ही मुलाकातें हैं। बाकी तो हम फोन पर ही बातें करते रहे हैं और इन्हें .....।

में कुछ कहूँ इससे पहले ही वे बोल पड़ी है - डॉट टेक इट अदरवाइज़। आज का दिन आपके लिए एक खास दिन है और आज आप मेरे खास मेहमान हैं। आज आपके चेहरे पर चिंता की एक भी लकीर नजर नहीं आनी चाहिये.. ओ के !! रिलैक्स नाउ और एंजाय यूअर सेल्फ। तब तक मैं भी ज़रा बाकी चीजें देख लूँ।

मैं अब ध्यान से कमरा देखता हूँ। एकदम भारतीय शैली में सज़ा हुआ। कहीं से भी यह आभास नहीं मिलता कि मैं इस वक्त यहां लंदन में हूँ। पूरे कमरे में दसियों एक से बढ़ कर एक लैम्प शेड्स कमरे को बहुत ही रूमानी बना रहे हैं। पूरा का पूरा कमरा एक उत्कृष्ट कलात्मक अभिरुचि का जीवंत साक्षात्कार करा रहा है। कोई सोफा वगैरह नहीं है। बैठने का इंतजाम नीचे ही है। एक तरफ गद्दे की ही ऊंचाई पर रखा सीडी चेंजर और दूसरी तरफ हिन्दी और अंग्रेजी के कई परिचित और खूब पढ़े जाने वाले ढेर सारे टाइटल्स। चेंजर के ही ऊपर एक छोटे से शेल्फ में कई इंडियन और वेस्टर्न क्लासिकल्स के सीडी। मैं मालविका जी की पसंद और रहन सहन के बारे में सोच ही रहा हूँ कि वे मेरे लिए एक गिलास लेकर आयी हैं - मैं जानती हूँ, आप नहीं पीते। वैसे मैं कहती भी नहीं लेकिन जिस तरह से आप ठंड में भीगते हुए आये हैं, मुझे डर है कहीं आपकी तबीयत न खराब हो जाये। मेरे कहने पर गरम पानी में थोड़ी-सी ब्रांडी ले लें। दवा का काम करेगी। मैं उनके हाथ से गिलास ले लेता हूँ। मना कर ही नहीं पाता। तभी मैं देखता हूँ वे पूरे कमरे में ढेर सारी बड़ी-बड़ी रंगीन मोमबत्तियां सजा रही हैं। मैं कुछ समझ पाऊं इससे पहले ही वे इशारा करती हैं - आओ ना, जलाओ इन्हें। मैं उनकी मदद से एक-एक करके सारी मोमबत्तियां जलाता हूँ। कुल चौंतीस हैं। मेरी उम्र के बरसों के बराबर। सारी मोमबत्तियां झिलमिलाती जल रही हैं और खूब रोमांटिक माहौल पैदा कर रही हैं। उन्होंने सारी लाइटें बुझा दी हैं। कहती हैं - हम इन्हें बुझायेंगे नहीं। आखिर तक जलने देंगे। ओ के !!

मैं भावुक होने लगा हूँ..। कुछ नहीं सूझा तो सामने रखे गुलदस्ते में से एक गुलाब निकाल कर उन्हें थमा दिया है - थैंक यू वेरी मच मालविका जी, मैं इतनी खुशी बरदाश्त नहीं कर पाऊंगा। सचमुच मैं ...। मेरा गला रुंध गया है।

- जनाब अपनी ही खुशियों के सागर मे गोते लगाते रहेंगे या इस नाचीज को भी जनमदिन के मौके पर शुभकामना के दो शब्द कहेंगे।

- क्या आपका भी आज ही जनमदिन है, मेरा मतलब .. आपने पहले क्यों नहीं बताया?

- तो अब बता देते हैं सर कि आज ही इस बंदी का भी जनमदिन है। मैं इस दिन को लेकर बहुत भावुक हूँ और मैं आज के दिन अकेले नहीं रहना चाहती थी। हर साल का यही रोना है। हर साल ही कम्बख्त यह दिन चला आता है और मुझे खूब रुलाता है। इस साल मैं रोना नहीं चाहती थी। कल देर रात तक सोचती रही कि मैं किसके साथ यह दिन गुज़ारूँ। अब इस पूरे देश में मुझे जो शख्स इस लायक नजर आया, खुशकिस्मती से वह भी आज ही के दिन अपना जनमदिन मनाने के लिए हमारे जैसे किसी पार्टनर की तलाश में था। हमारा शुक्रिया अदा कीजिये जनाब कि .....और वे ज़ोर से खिलखिला दी हैं। मैंने संजीदा हो कर पूछा है - आपके लिए तो पांच-सात मोमबत्तियां कम करनी पड़ेंगी ना !!

- नहीं डीयर, अब आपसे अपनी उम्र क्या छुपानी !! हमने भी आपके बराबर ही पापड़ बेले हैं जनाब। वैसे वो दिन अब कहां फुर हो गये हैं !! ये क्या कम है कि तुम इनमें दो चार मोमबत्तियां और नहीं जोड़ रहे हो !!

- ऐसी कोई बात नहीं है। चाहो तो मैं ये सारी मोमबत्तियां बेशक अपने नाम से जला देता हूं लेकिन अपनी उम्र आपको दे देता हूं। वैसे भी मेरी जिंदगी बेकार जा रही है। आपके ही किसी काम आ सके तो !! मैंने बात अधूरी छोड़ दी है।

- नो थैंक्स !! अच्छा तुम एक काम करो दीप, धीरे-धीरे अपनी ब्रांडी सिप करो। और लेनी हो तो गरम पानी यहां थर्मस में रखा है। बॉटल भी यहीं है। और उन्होंने अपना छोटा-सा बार कैबिनेट खोल दिया है।

- तब तक मैं भी अपना बर्थडे बाथ ले कर आती हूं।

मैं उनका सीडी कलेक्शन देखता हूं - सिर्फ इंडियन क्लासिक्स हैं। मैं चेंजर पर भूपेन्द्र की गज़लों की सीडी लगाता हूं। कमरे में उसकी सोज़ भरी आवाज गूंज रही है - यहां किसी को मुकम्मल जहां नहीं मिलता। कभी ज़मीं तो कभी आसमां नहीं मिलता। सच ही तो है। मेरे साथ भी तो ऐसा ही हो रहा है। कभी पैरों तले से ज़मीं गायब होती है तो कभी सिर के ऊपर से आसमां ही कहीं गुम हो जाता है। कभी यह विश्वास ही नहीं होता कि हमारे पास दोनों जहां हैं। आज पता नहीं कौन से अच्छे करमों का फल मिल रहा है कि बिन मांगे इतनी दौलत मिल रही है। जिंदगी भी कितने अजीब-अजीब खेल खेलती है हमारे साथ। हम जिंदगी भर गलत दरवाजे ही खटखटाते रह जाते हैं और कोई कहीं और बंद दरवाजों के पीछे हमारे इंतज़ार में पूरी उम्र गुज़ार देता है। और हमें या तो खबर ही नहीं मिल पाती या इतनी देर से खबर मिलती है कि तब कोई भी चीज़ मायने नहीं रखती। बहुत देर हो चुकी होती है।

बाहर अभी भी बर्फ पड़ रही है लेकिन भीतर गुनगुनी गरमी है। मैं गाव तकिये के सहारा लेकर अधलेटा हो गया हूं और संगीत की लहरियों के साथ डूबने उतराने लगा हूं। ब्रांडी भी अपना रंग दिखा रही है। दिमाग में कई तरह के अच्छे बुरे खयाल आ रहे हैं। खुद पर अफ़सोस भी हो रहा है, लेकिन मैं मालविका जी के शानदार मूड और हम दोनों के जनमदिन के अद्भुत संयोग पर अपने भारी और मनहूस खयालों की काली छाया नहीं पड़ने देना चाहता। मुझे भी तो ये शाम अरसे बाद, कितनी तकलीफों के सफ़र अकेले तय करने के बाद मिली है। पता नहीं मालविका जी भी कब से इस तरह की शाम के लिए तरस रही हों। इन्हीं खयालों में और ब्रांडी के हलके-हलके नशे में पता नहीं कब झपकी लग गयी होगी। अचानक झटका लगा है। महसूस हुआ कि मालविका जी मेरी पीठ के पीछे घुटनों के बल बैठी मेरे बालों में अपनी उंगलियां फिरा रही हैं। पता चल जाने के बावजूद मैंने अपनी आंखें नहीं खोली हैं। कहीं यह मुलायम अहसास बिखर न जाये। तभी मैंने अपने माथे पर उनका चुंबन महसूस किया है। उनकी भरी-भरी छातियों का दबाव मेरी पीठ पर महसूस हो रहा है। मैंने हौले से आंखें खोली हैं। मालविका जी मेरी आंखों के सामने हैं। मुझ पर झुकी हुई। वे अभी-अभी नहा कर निकली हैं। गरम पानी, खुशबूदार साबुन और उनके खुद के बदन की मादक महक मेरे तन-मन को सराबोर कर रही है। जिंदगी में यह पहली बार हो रहा है कि गौरी के अलावा कोई और स्त्राँ मेरे इतने निकट है। मेरे संस्कारों ने ज़ोर मारा है - ये मैं क्या कर रहा हूं.. लेकिन इतने सुखद माहौल में मैं टाल गया हूं। .. जो कुछ हो रहा है और जैसा हो रहा है होने दो। ज्यादा से ज्यादा क्या होगा ..। मैं कुछ पा ही तो रहा हूं। खोने के लिए मेरे पास है ही क्या।

तभी मालविका ने मेरी पीठ पर झुके झुके ही मेरे चेहरे को अपने कोमल हाथों में भरा है और मेरी दोनों आंखों को बारी-बारी से चूम लिया है। उनका कोमल स्पर्श और सुकोमल चुंबन मेरे भीतर तक ऊष्मा की

तरंगें छोड़ते चले गये। मैंने भी उसी तरह लेटे-लेटे उन्हें अपने ऊपर पूरी तरह झुकाया है, उनकी गरदन अपनी बांह के घेरे में ली है और हौले से उन्हें अपने ऊपर खींच कर उनके होठों पर एक आत्मीयता भरी मुहर लगा दी है - हैप्पी बर्थडे डीयर।

हम दोनों काफी देर से इसी मुद्रा में एक दूसरे के ऊपर झुके हुए नन्हें-नन्हें चुम्बनों का आदान-प्रदान कर रहे हैं। मैं सुख के एक अनोखे सागर में गोते लगा रहा हूं। यह एक बिलकुल ही नयी दुनिया है, नये तरह का अहसास है जिसे मैं शादी के इन चार बरसों में एक बार भी महसूस नहीं कर पाया था।

मालविका अभी भी मेरी पीठ की तरफ बैठी हैं और उनके घने और कुछ-कुछ गीले बाल मेरे पूरे चेहरे पर छितराये हुए हैं। उनमें से उठती भीनी भीनी खुशबू मुझे पागल बना रही है। उन्होंने सिल्क का वनपीस गाउन पहना हुआ है जो उनके बदन पर फिसल-फिसल रहा है। हम दोनों ही बेकाबू हुए जा रहे हैं लेकिन इससे आगे बढ़ने की पहल हममें से कोई भी नहीं कर रहा है। तभी मालविका ने खुद को मेरी गिरफ्त में से छुड़वाया है और उठ कर कमरे में जल रहे इकलौते टैबल लैम्प को भी बुझा दिया है। अब कमरे में चोंतीस मोमबत्तियों की झिलमिलाती और कांपती रौशनी है जो कमरे के माहौल को नशीला, नरम और मादक बना रही है। मैं उनकी एक-एक अदा पर दीवाना होता चला जा रहा हूं। जानता हूं ये मेरी नैतिकता के खिलाफ है लेकिन मैं ये भी जानता हूं आज मेरी नैतिकता के सारे के सारे बंधन टूट जायेंगे। मेरे सामने इस समय मालविका हैं और वे इस समय दुनिया का सबसे बड़ा सच हैं। बाकी सब कुछ झूठ है। बेमानी है।

मैंने उनके दोनों कानों की लौ को बारी-बारी से चूमते हुए कहा है - मेरे जनमदिन पर ही मुझे इतना कुछ परोस देंगी तो मेरा हाजमा खराब नहीं हो जायेगा। कहीं मुझे पहले मिल गयी होती तो !!

जवाब में उन्होंने अपनी हँसी के सारे मोती एक ही बार में बिखेर दिये हैं - देखना पड़ता है न कि सामने वाला कितना भूखा प्यासा है। वैसे मेरे पीछे पागल मत बनो। मैं एक बहुत ही बुरी और बदनाम औरत हूं। कहीं मेरे चंगुल में पहले फंस गये होते तो अब तक कहीं मुंह दिखाने के काबिल भी न होते।

- आपके जैसी लड़की बदनाम हो ही नहीं सकती। मैंने उन्हें अब सामने की तरफ खींच लिया है और अपनी बाहों के घेरे में ले लिया है। मेरे हाथ उनके गाउन के फीते से खेलने लगे हैं।

उन्होंने गाउन के नीचे कुछ भी नहीं पहना हुआ है और हालांकि वे मेरे इतने निकट हैं और पूरी तरह प्रस्तुत भी, फिर भी मेरी हिम्मत नहीं हो रही, इससे आगे बढ़ सकूं। वे मेरा संकोच समझ रही हैं और शरारतन मेरी उंगलियों को बार-बार अपनी उंगलियों में फंसा लेती हैं। आखिर मैं अपना एक हाथ छुड़ाने में सफल हो गया हूं और गाउन का फीता खुलता चला गया है। मालविका ने अपनी आंखें बंद कर ली हैं और झूठी सिसकारी भरी है

- मत करो दीप प्लीज।

मैंने इसरार किया है - जरा देख तो लेने दो।

- और अगर इन्हें देखने के बाद आपको कुछ हो गया तो !!

- शर्त बद लो, कुछ भी नहीं होगा। उनकी बहुत आनाकानी करने के बाद ही मैं उनका गाउन उनके कंधों के नीचे कर पाया हूँ।

और मैं शर्त हार गया हूँ। मैंने जो कुछ देखा है, मैं अपनी आंखों पर यकीन नहीं कर पा रहा हूँ। मालविका का अनावृत सीना मेरे सामने है। मैंने बेशक गौरी के अलावा किसी भी औरत को इस तरह से नहीं देखा है, लेकिन जो कुछ मेरे सामने है, मैं कभी उसकी कल्पना भी नहीं कर सकता था। मैंने न तो फिल्मों में, न तस्वीरों में और न ही किसी और ही रूप में किसी भी स्त्राी के इतने विराट, उदार, संतुलित, सुदृढ़ और ख्बासूरत उरोज देखे हैं। मैं अविश्वास से उन गोरे-चिट्टे दाग रहित और सुडौल गोलाधो की तरफ देखता रह गया हूँ और पागलों की तरह उन्हें अपने हाथों में भरने की नाकाम कोशिशें करने लगा हूँ। उन्हें दीवानों की तरह चूमने लगा हूँ। मालविका ने अपनी आंखें बंद कर ली हैं। वे मेरे सुख के इन खूबसूरत पलों में आड़े नहीं आना चाहतीं!! वे अपनी इस विशाल सम्पदा का मोल जानती रही होंगी तभी तो वे मुझे उनका भरपूर सुख ले लेने दे रही हैं। मैं बार-बार उन्हें अपने हाथों में भर-भर कर देख रहा हूँ। उन्हें देखते ही मुझ जैसे नीरस और शुष्क आदमी को कविता सूझने लगी है। कहीं सचमुच कवि होता तो पता नहीं इन पर कितने महाकाव्य रच देता!

मैं एक बार फिर जी भर कर देखता हूँ - वे इतने बड़े और सुडौल हैं कि दोनों हाथों में भी नहीं समा रहे।

मैं उन्हें देख कर, छू कर और अपने इतने पास पा कर निहाल हो गया हूँ। अब तक मैं जब भी मालविका से मिला था, उन्हें ट्रैक सूट में, फार्मल सूट में या साड़ी के धऊपर लाँग कोट पहने ही देखा था। शाम को भी उन्होंने हाउसकोट जैसा कुछ पहना हुआ था और उनके कपड़े कभी भी जरा-सा भी यह आभास नहीं देते थे कि उनके नीचे कितनी वैभवशाली सम्पदा छुपी हुई है। वे इस समय मेरे सामने अनावृत्त बैठी हुई हैं। घुटने मोड़ कर। वज्रासन में। साधिका की-सी मुद्रा में। उनका पूरा अनावृत्त शरीर मेरे एकदम निकट है। पूरी तरह तना हुआ। निरंतर और बरसों के योगाभ्यास से निखरा और संवारा हुआ। कहीं भी रत्ती भर भी अधिकता या कमी नहीं। एक मूर्ति की तरह सांचे में ढला हुआ। ऐसी देह जिसे इतने निकट देख कर भी मैं अपनी आंखों पर विश्वास नहीं कर पा रहा हूँ। ..वे आंखें बंद किये हुए ही मुझसे कहती हैं - अपने कपड़े उतार दो और मेरी तरह वज्रासन लगा कर बैठ जाओ। कुर्ता उतारने में मुझे संकोच हो रहा है, लेकिन वे मुझे पुचकारती हैं - डरो नहीं, मेरी आंखें बंद हैं।

मैं वज्रासन में बैठने की कोशिश करता हूँ लेकिन उन्हीं के ऊपर गिर गया हूँ। वे खिलखिलाती हैं और मुझे अपने सीने से लगा लेती हैं। उनके जिस्म की आंच मेरे जिस्म को जला रही है। कुछ ब्रांडी का नशा है और बाकी उनकी दिपदिपाती देह का। इतनी सारी मोमबत्तियों की झिलमिलाती रौशनी में उनकी देह की आभा देखते ही बनती है। उन्होंने अभी भी अपनी आंखें शरारतन बंद कर रखी हैं और बंद आंखों से ही मुझे हैरान-पेशान देख कर मजे ले रही हैं। तभी मैं उठा हूँ और बुके के सभी फूलों को निकाल कर उन फूलों की सारी की सारी पंखुड़ियां उनके गोरे चिट्टे सुडौल बदन पर बिखेर दी हैं। उन्होंने अचानक आंखें खोली हैं और पंखुड़ियों की वर्षा में भीग-सी गयी हैं। उनके बदन से टकराने के बाद पंखुड़ियों की खुशबू कई गुना बढ़ कर सारे कमरे में फैल गयी है।

वे खुशी से चीख उठी हैं। मैंने उन्हें गद्दे पर लिटाया है और हौले हौले उनके पूरे बदन को चूमते हुए एक-एक पंखुड़ी अपने होठों से हटा रहा हूं। मैं जहां से भी पंखुड़ी हटाता हूं, वहीं एक ताजा गुलाब खिल जाता है। थोड़ी ही देर में उनकी पूरी काया दहकते हुए लाल सुर्ख गुलाबों में बदल गयी है।

मैं उनके पास लेट गया हूं और उन्हें अपने सीने से लगा लिया है। उन्होंने भी अपनी बांहों के घेरे में मुझे बांध लिया है।

समय थम गया है। अब इस पूरी दुनिया में सिर्फ हम दो ही बचे हैं। बाकी सब कुछ खत्म हो चुका है। हम एक दूसरे में घुलमिल गये हैं। एकाकार हो गये हैं।

बाहर अभी भी लगातार बर्फ पड़ रही है और खिड़कियों के बाहर का तापमान अभी भी शून्य से कई डिग्री नीचे है लेकिन कमरे के भीतर लाखों सूर्यों की गरमी माहौल को उत्तेजित और तपाने वाला बनाये हुए है।

आज हम दोनों का जनम दिन है और हम दोनों की उम्र भी बराबर है। दो चार घंटों का ही फर्क होगा तो होगा हममें। हम अपनी अलग-अलग दुनिया में अपने अपने तरीके से सुख-दुख भोगते हुए और तरह-तरह के अनुभव बटोरते हुए यहां आ मिले हैं बेशक हम दोनों की राहें अलग रही हैं। हमने आज देश, काल और समय की सभी दूरियां पाट लीं हैं और अनैतिक ही सही, एक ऐसे रिश्ते में बंध गये हैं जो अपने आप में अद्भुत और अकथनीय है। मुझे आज पहली बार अहसास हो रहा है कि सैक्स में कविता भी होती है। उसमें संगीत भी होता है। उसमें लय, ताल, रंग, नृत्य की सारी मुद्राएं और इतना आनन्द, तृप्ति, सम्पूर्णता का अहसास और सुख भी हुआ करते हैं। मैं तो जैसे आज तक गौरी के साथ सैक्स का सिर्फ रिचुअल निभाता रहा था।

>>पीछे>> >>आगे>>

[शीर्ष पर जाएँ](#)